बिसारिये । कवि मतिराम छाती नख छत जग मगे डग मगे पग । सूधे मग में न धारिये । कस वैं उघारत हौं पलक पलक याते पलका में पौढ़ि श्रम रानि को निवारिये । लट पटे पेच सिर बातन कहत बने लट पटे पेच सिर पाग के सुधारिये । ।१२६। दोहा। कोऊ कोरि किते कहू तजो नैरव सुपाल । निशि औरन के पग परे दिन औरनि के लाल ।१२७। अथ मैाढ़ा खंडिता को उदाहरण । कवित्त । प्रीतम आये प्रभात प्रिया मुसक्यान उठी दृग सों दृग जोरे । आगे ह्वै आदर कै मतिराम कहैं मृदु बैन सुधा रस बोरे । ऐसे सयान सुभाय नहीं सों मिली मनभावन सों मन मोरे । मान गो जान तबै अँगिया की तनी न छुटी जब छोरे ।१२८। दोहा। आदर दै पिय सों मिली तिय हिय गरिब सयान । दृग गहि बांधी कंचुकी समझायो मन मान। ।१२९। अथ परकीया खंडिता को उदाहरण । कवित्त । रावरे नेह को लाज तजी अरु गेह के काज सबै बिसरायो । डार दयो गुरु लोगन को डर गांउ चवाई में नाम धरायो । हेतु कियो हम जेतो कहा तुम तो मतिराम सबै बिसरायो । कोउ कितेक उपाय करो कहूं होत है आपन पीउ परायो ।१३०। दोहा । हम सों तुमसों लालदृत नेननहीं को नेह । उन प्यारी के दृगनि के सलिल सींचियत देह ।१३१। अथ गणिका खण्डिता को उदाहरण । कवित्त । ह्यां हमसों मिलवो ठहराय कै नैन कहूं अनते हीं करीजे । भोर ही आय बनाय के बातन चातुर ह्वै बिनती बहु कीजे । ऐसी ए रीति सदा मति राम सों कैसे पियारे जू प्रेम पतीजे । सौंह न खाइये जाइये ह्यां ते न मानि हौं तोहूं जो लाखन दीजे ।१३२। दोहा । कन्त कहा सौंहन करौ जानि ।

भाषाभूषण

पंडित कुसुम दत्त कृत

ज्ञानप्रेस देहली नई सड़क पे लाला
श्रीगोपाल के एहतमाम से छापा ॥

राम हारा भोन को। सहज सुभावन सों मोहन के भावन को झूलति
हैं कवि मतिराम मन रान को। रूप मद छकी अनि छाने सो छ
बीली देति तिरछी चितौनि मैन बरछी सी कैन को। ३५२। दोहा।
तेरी चलनि चितौनि मृदु मधुर मन्द मुसक्यानि। छाय रही ल-
खि लाल की सखि अन मिस अँखियानि। ३५३। अथ विछि-
प्त लक्षण। दोहा। थोड़ेही भूषण बसन जहँ शोभा सरसाय।।
ताहि कहत विक्षिप्त हैं जे प्रवीण कविराय। ३५४। उदाहरण।
।कवित्त। बारने सकल एक रोरी ही की आड़ पर हाहा न पहिरि
आभरन और अङ्ग में। कवि मतिराम जैसे तीक्षण कटाक्ष तैसे
हँस कहा सरस है अनंग के निखंग में। सहज सरूप सुघराई।
रीझे मनु मेरो लुभि रह्यो रूचि रूप अद्भुत की तरङ्ग में। मेत।
सारी ही सों मन मेरो तो रंग्यो श्याम रंग मेरो सारी ही में श्याम रं-
गलाल रंग में। ३५६। दोहा। नथनी गज मुक्तान की लसति चा-
रु शृङ्गार। जिन यही सुकमार तन और आभरन भार। ३५७।
विभ्रम लक्षण। दोहा। उलट भूषण बसन को होत जहां परिहाव
। वाँको विभ्रम हाव कहि बरनत हैं कवि राव। ३५८। अथ उ
दाहरण। कवित्त। सांझहि तें चलि आवत जान जहाँ तहँ लो-
गनि हूं न डरोगी। प्रीतम सों रति ही यह रूप धोयेहैं कहूं जब
अङ्क भरोगी। जानति हों मतिराम तऊ चतुराई की बात नि
हाय धरोगी। किंकिनि के उर हार किये तुम कौन सों जाय
विहार करोगी। ३५९। दोहा। अति आतुर ह्वै चल भई अली
कौन के भाय। उलटो कंचुक कुचनि पर काहे देत अनुराग
।३६०। अथ किल किंचित लक्षण। दोहा। हरषि गरव अभि-
लाष श्रम हास रोस अरु भीति। होत एकही बार है किल किं

॥ अथ प्रस्ताव ॥

दिल्ली से छत्तीस कोस दक्षिण की तरफ़ एक शह्र भी
की बाबत वहां के रहनेवाले गौड़ ब्राह्मण पंडित छ
त ने षट शास्त्राधिकारी महाभट्ट श्री त्रिलोक चंद्र जी
आज्ञानुसार बालकों की बुद्धी के लिये और जाने में तर्
ल शुद्ध हो और जिसके पढ़ने से थोड़ेही दिनों में पंडित
दर्जे को पहुंच के ब्राह्मन का बेटा अपने गुज़ारे माफ़ि
जगार कर सक्ता है ऐसा सुगम ग्रंथ ज्योतिष का भाषा
में लावनी की चाल शहर दिल्ली में लाला पी॰ पाल
छापेखाने में छपवाया संवत् १९३५ की साल मिती आ
ढ सुदि ४ गुरुवार को जिस ग्रंथ का नाम भाषा भूषण
है और तुर्रेगानेवालों को यह पुस्तक खरीदना उचित है
और जो कोई इस प्रस्ताव को पढ़े और पुस्तक को खरीदे

भगवान उसका मनोरथ

पूरण करेगा

सूची पत्र

इंदर सभा।
छापेखाने बदरुद्दुजा में देहली में छापी गई

श्रीगणेशाय नमः

प्रथम भारती को प्रणाम करि गणेश जी का धर के ध्यान। लेके अन्य ग्रंथों का सार यह भाषाभूषण किया बयान॥ टेक ॥
प्रथम वार आदित्य दूसरा सोम सुनो चातुर ज्ञानी॥ तीजा मंगल कहा चौथा बुध है जिसकी अमृत बानी॥ वृहस्पती पाँचवां शुक्र है छठा जो देवे धन धानी॥ वार सातवां शनि जिस्की गति ब्रह्मा ने भी नहिं जानी॥ सातवार दिन रैन में भुगतैं कौन रीति से करौं बखान॥ लेके अन्य ग्रंथों का सार यह भाषाभूषन किया बयान॥१॥ पड़िवा दोयज तीज चौथ औ पाँचैं षष्ठी करो सुमार॥ सातैं आठैं नौमी दशमी एका दशी का क्या आकार॥ तिथी द्वादशी तेरस चौदस कृष्ण पक्ष में मावस सार॥ शुक्ल पक्ष में कही पूर्णिमा जिस [illegible] महिमा बड़ी अपार॥ ये तिथि पंद्रह कौन की पुत्री को पति इन के क्या संतान॥ लेके अन्य ग्रंथौं का सार यह भाषभूषन किया बयान॥२॥ अश्विनी भरणी और कृत्तिका रोहिणी मृगसिर आर्द्रा नाम॥ पुनर्वसु पुष्य श्लेखा मघा पूर्वा फाल्गुनी है गुन धाम॥ उत्तरा फाल्गुनी हस्त चित्रा स्वाँति विशाषा से परे सब का काम॥ अनुराधा औ जेष्ठा मूल पूरवा षाढ़ को हम करैं प्रणाम॥ उत्तरा षाढ़ अभिजित सरवन औ धनिष्ठा भज पै करैं इसान॥ लेके अन्य ग्रंथौं सार यह भाषा भूषन किया बयान॥३॥ सुनो सतभिषा पूर्वा भाद्रपद उत्रा भाद्रपद औ रेवती॥ अठाईस नक्षत्र कहे हैं एक एक में अधिक मती॥ सर्वद है सर्वज्ञ सुलोचन सब लोकों में इन की गती॥ उनका जीवन सुफल जो इन के चरनों में नित्त रषैं रत्ती॥ कौन कौन से मंत्र हैं इनके कितने जप का

सवालसब्ज़परीका ॥

कहरथाहिज्रकयामतथीजुदाईतेरी · मेरेख़्वाबकोनेमुझेशक्लदिखाईतेरी॥

जवाबशाहज़ादेका।

ख़ाकहैमुंहपैमलीबालहैंसिरकेबिथरे · हायक्याहालकियाहैमेरायारजुदाईतेरी॥

जवाबसब्ज़परीका ॥

मुझपैहोनाथानोकुछहोगयाइसकानहींग़म · होगईक़ैदमुसीबतसेरिहाईतेरी

ली॰ जवाबशाहज़ादेका

तूमेरेआगेनिकोगईथीनोचकेपर · राजाकोफिरहुईकिसतरहरसाईतेरी

जवाबसब्ज़परीका

बनकेजोगनहुईराजाकीसभामेंदाख़िल · फिरमुझेचाहथीहांरखेंचलेलाईतेरी

जवाबशाहज़ादेका

कहकेराजासेमुझेकिसनेनुझेदिलवाया · दुशमनेजानथीमेरीजानजुदाईतेरी

जवाबसब्ज़परीका

गाकेश्रीरागकेराजाकोरिझायामैंने · तबमुलाक़ातमयस्सरमुझेआईतेरी

जवाबशाहज़ादेका

जबकीनालिबनहुईमुझकोलियाराजासे · अबशफ़ालेगईशाहीपैगदाईतेरी

जवाबसब्ज़परीका

दावकमबरनेनाकिसज़ोरसेपहुंचायाकरा · होगईलालनिज़ाकतसेकलाईतेरी॥

दीजे दान ॥ लेके अन्य ग्रंथों का सार यह भाषाभूषन किया बयान ॥ ४ ॥ आदि योग विष्कुंभ प्रीति है आयुष्मान सौभाग्य कहा ॥ शोभन औ अतिगंड सुकर्मा धृती मूल जगत न रहा ॥ गंड वृद्धि ध्रुव व्याघात हर्षण वज्र सिद्ध व्यतिपात महा ॥ वरियान परिघ है शिव सिद्ध नाहि जात साध्य का तेज सहा ॥ शुभ्र शुक्ल है ब्रह्म ऐंद्र वैधृती जोग गुनि मेहर मान ॥ लेके अन्य ग्रंथों का सार यह भाषा भूषन किया बयान ॥ ५ ॥ बव बालव कौलव तैतल गर बणिज और विष्टी प्यारे ॥ सात करण जो लिखे शास्त्र में कह दीने न्यारे न्यारे ॥ तिथी वार नक्षत्र मिले और योग करण मिलकर सारे ॥ कहा एक पंचांग जगत कुल हैगा जिसके आधारे ॥ जो कोई इसको श्रवण करे फल पावे सम गंगा अस्नान ॥ लेके अन्य ग्रंथों का सार यह भाषाभूषन किया बयान ॥ ६ ॥ जिनके नाम में आदि हरफ ये चू चे चो ला बोले जावें ॥ है तिनका नक्षत्र अश्विनी वे नर प्रति दिन सुख पावें ॥ भाग बड़े जिन पुरुषन के ली लू ले लो अक्षर आवें ॥ उनका है भरणी नक्षत्र आचार्य पुरातन फरमावें ॥ आ ई ऊ ए जिनके नाम में तिनका नक्षत्र कृत्तिका जान ॥ लेके अन्य ग्रंथों का सार यह भाषा भूषन किया बयान ॥ ६ ॥ ओ वा वी वू अक्षर जिनका नक्षत्र रोहिणी जानो ॥ वे वो का की हरफ देखते ही मृगसिर को पहिचानो ॥ जिनके नाम में कू घ ङ छ अक्षर आर्द्रा जानो ॥ के को है ही हरफ समझ के पुनर्वसु का मानो ॥ हू हे हो डा वालों का है जन्म पुष्य धरै शिव का ध्यान ॥ लेके अन्य ग्रंथों का सार यह भाषाभूषन किया बयान ॥ ७ ॥ डी डू डे डो हरफ होने से अश्लेष

इंद्रप्रस्थ ते यम दिशा को प्रावसे घटतीस नग
री वावल भोज की पंचमुखी तहां ईशा ॥ ९ ॥
कवित्त की चाल ॥ केवल राम है नाम पिता का
पिता नरसेवगराम कहाया इहिनका सुरष छा
इ दिया हरि निर्भय जिन श्री भागवत हि गाया श्रोर
सुनों निज आसन बैठके ध्यान धरो द्विज सब
पढाया पूर्ण हुवा ब्रह्मस्थान निरंतर तासों ही ब्र
ह्म में ब्रह्म समाया ॥ १ ॥ दोहा ॥
जनके मंगल निरत सें। सुन के होत प्रसन्न अ
प्रसन्न जे होत नर कभी न तो धन अन्न १ अथ ख्या
ल पहिले गणेश जी की स्तुति लिखते हैं ॥ ॥
रिद्धि सिद्धि दे गणाधिपति नर महेश सुत का ध
र ध्याने हृदय कमल में कितरे हृदय कमल बिच
है ध्याने टेक अरुण कुसुम की माल कंठ श्रोरप
र शुकमल है जिनके कर में अरुण माल में भाल
कृत सिंदूर बिंदा अरुण अधर सर्व अंग है अनु
प का गज सीस बिराजे अति सुंदर मूषक बाहन
कि तू मतो मूरख न वाहन लंबोदर वंधु मित्र सुत्त।
दारगेह में को। होता है गलताने ॥ हृदय कमल
में कितरे १ एक दंत कृपाने हैं ये इदाकि है जिन
ने अमर ध्यान धरत हैं ध्यान बडे बडे योगेश्वर ।

वलवाना ॥ मामी मूमे वालौं का मघा वे मौजकरैं घरमें ना
ना ॥ मो टा टी टू जिनके नाम में पूर्वा फाल्गुनी जान ॥
टे टो पा पी जिनके उत्तरा फाल्गुनी ते वलवान ॥ पूषण
ठ अक्षर जिनका हस्त निक्षत्र शास्त्र प्रमान ॥ लेके अन्य
ग्रंथों का सार यह भाषा भूषन किया वयान ॥ ८ ॥ चित्रानि
क्षत्र उनका कहिये जिनके हरफ पे पो रा री ॥ रूरे रोता
वालों का स्वाती है स्वांति करम जिनका भारी ॥ ती तू ते तो
नाम में जिन के विशाखा रिष सुन्दर नारी ॥ ना नी नू ने के मू
ताप अनुराधा होते तप धारी ॥ आद्यक्षर नो या यी यु आने
में ज्येष्ठा वलवान ॥ लेके अन्य ग्रंथों का सार यह भाषा
भूषण किया वयान ॥ ९ ॥ मूल नक्षत्र हो तिनके जे जो
भा भी अक्षर होते ॥ जिनके नाम में भू धा फा ढा पूर्वाषाढ
सुख से सोते ॥ भे भो जे जी होने से उत्तराषाढ़ लगें जान्ह
विगाते ॥ जू जे जो खा भये तो अभिजित्‌ पुत्र उनके पाते
खी खू खे खो इन हरफों से होय श्रवण नक्षत्र दे हिरदे ग्यान
लेके अन्य ग्रंथों का सार यह भाषा भूषण किया वयान ॥
१० ॥ होना है नक्षत्र धनिष्ठा गागि गू गे जिनके अक्षर ॥
गो सा सी सू होंय तो उनका जानों शतभिषा नक्षत्र ॥ से
सो दा दी वालों का गुनिजन पूर्वाभाद्रपद है अकसर ॥
दू भ झ थ जिनके आवें रिष उत्तराभाद्रपद धनते नर ॥
दे दो चे ची होंय अक्षर उनका रेवती निक्षत्र लहै सन्मान
॥ लेके अन्य ग्रंथों का सार यह भाषा भूषण किया वयान ॥
११ ॥ नहीं और कुछ काम इसमें तो यही काम है सुबे भी
स्याम ॥ देषि शास्त्र अनुसार ग्रंथ को राम कृपा से कियातमाम ॥ राम सुधारे काम जगत के पुरी अयोध्या जिनका धाम

राम कहे से पता लगे नहीं चाहे कमावो आठों याम ॥ कु-
ल दत्त जू कहैं मेरे कवि इसी विषय में जागे ज्ञान ॥ लेके
अन्य ग्रंथों का सार यह भाषाभूषन किया वयान ॥ २२॥
प्रथम पढ़ैं व्याकर्ण काव्य अरु कोश पढ़ैं
फेर पढ़ैं पुरान ॥ फिरैं भटकते बगैर ज्योतिष के नहीं
होती गुजरान ॥ टेक० ॥ चू चे चो ला ली लू ले लो अाये
नव अक्षर हैं भारे ॥ शास्त्र रीति से इनों की मेष राशि
होती प्यारे ॥ इ उ ए ओ वा वी वू वे वो इनका सुन निर-
धारे ॥ विरष राशि है गुनीजन को नहिं जानत सगरे
किसी ने पूछा कहो हमारे कौन सगें होगी संतान ॥
फिरैं भटकते बगैर ज्योतिष के नहीं होती गुजरान १
का कि कू घ ङ छ के को हे मिथुन राशि इन हरफन की
कभी किसी से बात को नहीं कहे अपने मन की ॥ ही
हू हे हो डा डी डू डे डो ये भक्ति करते गुरुजन की ॥
राशि कर्क है इनका प्रीति लगी रहे उनको धन की ॥
मा मी मू मे मो टा टी टू टे इनकि सिंह हो जाने जिहान
फिरैं भटकते बगैर ज्योतिष नहीं होती गुजरान ॥२॥
टो पा पी पू षा ण ठ पे पो कन्या है इनकी राशि ॥ करै हमे
शों हमेशें करैं वो नर गैरों की आस ॥ रा री रू रे रो ता
ती तू ते ये करते हैं रिपु का नाश ॥ तुला राशि हो रखैं
अपने दिल में हर का विश्वास ॥ तो ना नी नू ने नो या यी
यु इन की वृश्चिक राशि पिछान ॥ फिरैं भटकते बगैर ज्यो
तिष के नहीं होती गुजरान ॥ ३॥ जे जो भा भि भू धा फा
ढा भे इन हरफों की राशि हो धन ॥ भक्ति हृदे में उ
मर तक करैं सदा ईश्वर का भजन ॥ भो जे जी षी षू षे

धो गागी नौ अक्षर रहैं मसन ॥ मकर हो राशि जिनों का सुख से गुजरे वाला पन ॥ अन्य शास्त्र का पढ़ा हुवा चा है कैसा ही कोइ हो बुधवान ॥ फिरें भटकते वगेर ज्योतिष के नहीं होती गुजरान ॥ ३ ॥ गू गे गो सा सी सु से सो दाये अति उत्तम है अक्षर सुन भाई ज्ञानी इन्हीं तो कुंभ राशि कहता शास्तर ॥ दो दू स्न क थै दे दो चे ची अक्ष र होवें ते नर ॥ अपने घर के काज में लगे रहत हैं आठ पहर ॥ इन हरफों की मीन राशि सुन मेरी तरफ को कर के कान ॥ फिरें भटकते वगेर ज्योतिष के नहीं होती गु जरान ॥ ४ ॥ मेष विरष और मिथुन कर्क ये सिंह कन्या और तुला सही ॥ है वृश्चिक धन मकर और कुंभ मीन रवि रास कही ॥ एक एक के हैं नौ अक्षर जानत हैं भूसुर सबही ॥ ॥ भाषा संसकृत बनाना कवी जनों की रीतय ही ॥ कृष्ण दत्त कह जितने पंडित रहते हैं जो हिन्दोस्त न ॥ फिरें भटकते वगेर ज्योतिषके नहीं होती गुजरान ५

॥ २ ॥ ख्याल ॥

हो दरिद्र का नास उमर तक वो मनुष्य सुख पावेगा ज्योतिष शास्त्र के अक्षर जो कोइ गुरुमुख से पढ़ जावेगा ॥ टेक ॥ एक निछत्र के जोति शास्त्र में होते हैं गे चार चरन ॥ घड़ी हों पंद्रह एक चरन की जिन्हें जानते पं डितजन ॥ नौ चरनन की एक रासि है वोही चंद्रमा का वरनन ॥ सुगम ग्रंथ कलियुग में पढ़ाना बालकों की मति का वरधन ॥ भूषन वस्तर विविध भांत के सुन्दर भोजन खावेगा ॥ जोतिशास्त्र के अक्षर जो कोइ गुरुमु ख से पढ़ जावेगा ॥ १ ॥ चार पाद अश्विनी का लेके

भरणी का दे चार मिलाय ॥ एक पाद कृतिका का जोड़ के दीजै चंद्रमा मेष बताय ॥ तीनि पाद कृतिका का और चार रोहिणी का कर के समुदाय ॥ युग्म पाद मृगसिर का जोड़ दो वृष का चंद्रमा तब होजाय ॥ कहीं जाइ उद्यम के लिये वो कभी न खाली आवेगा ॥ जोतिशास्त्र के अक्षर जो कोइ गुरु मुख से पढ़ जावेगा ॥ २ ॥ युग्म पाद मृगसिर के लेवो और पाद लेवो आर्द्रा के चार ॥ पुनर्वसु के तीन पाद युत चंद्र मिथुन का हुवा तयार ॥ पुनर्वसु का एक पाद और चार पुष्य के किये इकट्ठार ॥ असलेषा के चार पाद ले कर्क चंद्र का सुनि निरधार ॥ जन्म मरन और व्याह काज से पत्तरा खोल बतावेगा ॥ जोतिशास्त्र के अक्षर जो कोइ गुरुमुख से पढ़ जावेगा ॥ ३ ॥ मघा पूर्वा फाल्गुनी के चार चार पाद मिला लेना भाई ॥ एक पाद उत्रा फाल्गुनि का चंद्र सिंह का हो जाई ॥ तीन पाद उत्रा फाल्गुनि के चार हस्त के समझाई ॥ युग्म पाद चित्रा का मेल के राशि कन्या की वतलाई ॥ बोल के पुस्तक गमन समय के सारे सगुन सुनावेगा ॥ जोतिशास्त्र के अक्षर जो कोइ गुरु मुख से पढ़ जावेगा ॥ ४ ॥ युग्म पाद चित्रा के स्वाति के चारों तीनि विशाषा के ॥ इतना काल रहै तुल का चंद्रमा कहौ अपना दिल समझा के ॥ विशाषा का लो एक पाद और चारों लो अनुराधा के ॥ चार पाद ज्येष्ठा के जहां लो वृश्चिक का राशि हो आके ॥ वापी कूप तड़ाग मुहूरत वातैं छिपा न रहावेगा ॥ जोतिशास्त्र के अक्षर जो कोई गुरु मुख से पढ़ जावेगा ॥ ५ ॥ मूल नक्षत्र के चार पाद और चार हि पूर्वाषाढ़ के जान ॥ उत्राषाढ़ का एक पाद तक धन का चंद्र है

है कर ले ज्ञान ॥ उत्राषाढ़ के तीन पाद और चार श्रवण के धर ले ध्यान ॥ धनिष्ठा के दो पाद मिलाये लिया मकर का राशि पहिचान ॥ भरी सभा में कहै प्रश्न वो ज़रा नहीं सकुचावेगा ॥ जोति शास्त्र के अक्षर जो कोइ गुरुमुख से पढ़ जावेगा ॥ ६ ॥ धनिष्ठा के लिये युग्म पाद और चार शत भिषा के लीने ॥ पूर्वा भाद्र पद तीन पाद लौं चंद्र कुंभ के कह दीने पूर्वा भाद्र पद एक पाद उत्रा के चार इकठे कीने ॥ चार पद रेवती के चंद्रमा मीन कह्यो गुन पर वीने ॥ नहीं किसी का तके आसरा निशदिन आप कमावेगा ॥ जोतिशास्त्र के अक्षर जो कोइ गुरुमुख से पढ़ जावेगा ॥ ७ ॥ अष्टाविंशति नक्षत्रन का बारह राशि पै किया विचार ॥ लेके ग्रंथ की साक्षी से और कछूक निजमति के अनुसार ॥ जो कुछ भूल चूक हो इसमें गुनी होय सो लीजे सुधार ॥ हम को तो कुछ वोध नहीं है वोध वगैर हो रहे लचार ॥ कृष्णदत्त कहै ऐसे ख्याल वो नितही नये वनावेगा ॥ जोतिशास्त्र के अक्षर जो कोइ गुरुमुख से पढ़ जावेगा ॥ ८ ॥

॥ ३ ॥ ख्याल ॥

जितने शास्त्र हैं इस पृथवी पर कोई नहीं जोतिस के सम सबी पूंछते आन के क्या गरीब और क्या हो कम ॥ टेक ॥ सोम और शनिवार को प्यारे पूरव में दिक शूल रहै ॥ गुरुवार को दक्खन की दिशा रहै यों शास्त्र कहै ॥ ऐतवार शुक्र को पश्चिम दिशा गयें सुख नहीं लहै ॥ बुध मंगल को बसे उत्तर में गमन के किये दहै ॥ सन्मुख जाने से दुख देता प्रेतन को दे जैसे जम ॥ सबी पूंछते आन के क्या गरीब और क्या हो कम ॥ १ ॥ मेष सिंह और धन का चंद्रमा

पूरव सें रहता भाई ॥ अथ कन्या का मकर का दखन दिशा व सतांजाई ॥ मिथुन तुला कुंभका प्रतीची दिशा बसे दिया समझाई ॥ अलि कर्क का मीन का उत्तर दिशि दे दिखलाई ॥ और शास्त्र पढ़ करै सुभाशुभ इसें पढ़े वो करै हुकम ॥ सबी पूछते आन के क्या गरीब और क्या हाकम ॥ २ ॥ मेषवृष सिंह का चंद्रमा इनके लाल होते वस्तर ॥ मीन कन्या मकर चंद्र के होत पीले अकसर ॥ धन कर्कट वृश्चिक के चंद्र के सफेद हों सबसे बेहतर ॥ मिथुन तुला के कुंभ के काले वस्तर कहता शास्तर ॥ गुनी होय सो समझेगा और मूरख सुनके करे वहम ॥ सबी पूछते आन के क्या गरीब और क्या हाकम ॥ ३ ॥ लाल वस्त्र में शुभ कारज के किये युद्ध होवे प्यारे ॥ येतो अशुभ हैं सदा फल अशुभ य के देने हारे ॥ पीले वस्तर खुशी सुनावैं सपेद भर दें भंडारे ॥ काले वस्तर होय तो पहुंचावें जम के द्वारे ॥ कहै दत्त कहै कहीं चला जावो जाने हीं लगता उद्यम ॥ सबी पूछते आन के क्या गरीब और हाकम ॥ ४ ॥

॥ ४ ॥ ख्याल ॥

हम कहें जात तुम सुनियो जी नर नारी ॥ ज्योतिष की महिमा सब शास्त्रन सें भारी ॥ टेक ॥ पड़िवा नौमी को पूरव दिशा सब जाने ॥ योगिनी का वासा कहूं सुनो धरध्याने ॥ ब्रह्माणी उसका नाम किया बैयानें ॥ कोई गुनी होय नर सो इनको पहिचानें ॥ वह क्या जानेगा जिसकी अकल गई मारी ॥ ज्योतिष की महिमा सब शास्त्रन सें भारी ॥ १ ॥ दोयज दशमी को उत्तर में बतलाया ॥ है उसका नाम इंद्राणी यह समझाया ॥ तृत्तिया एकादशी अग्नि कौन

कौन फरमाया ॥ कौमारी उसका तुमको नाम सुनाया ॥ है इसके पढ़े बिन ब्रह्मन को बड़ि ख्वारी ॥ ज्योतिष की महिमा सब शास्त्रन सें भारी ॥ २ ॥ होय चौथ द्वादशी कों नैरित में वासा ॥ नारायनी उसका नाम बताया खासा ॥ जिनके हिरदे नाहिं शास्त्र का बिस वासा ॥ करते हैं वे नर अपने कुल का नासा ॥ इन बातों को जानती त्रिलोकी सारी जोतिस की महिमा सब शास्त्रन सें भारी ॥ ३ ॥ पाँचै तेरस दक्षिण में योगिनी माता ॥ करती निवास कोइ जानें शास्त्र का ज्ञाता वाराही नाम है जो नित उठ के ध्याता ॥ थोड़े ही काल में अपना मनोरथ पाता ॥ नहिं होती इस बिन शुभ कारज कीत्यारी ॥ ज्योतिष की महिमा सब शास्त्रन से भारी ॥ ४ ॥ षष्ठी चतुर्दशी वासा पश्चिम लेती ॥ भक्तन के कारज तुरत सुफल करदेती ॥ दुष्टन के लियें वो आप बनै है रेती ॥ कोई माहेश्वरी कोई कहै उसें परमेती ॥ जाती हैं काल संवत की बात विचारी ॥ ज्योतिष की महिमा सब शास्त्रन सें भारी ॥ ५ ॥ सप्तमी पूर्णिमासी को रहै वायव में ॥ चामुंडा नाम ले लेके रटू हूं तब में ॥ आठैं मावस ईशान बसै कहं अब में ॥ उसका है योगिनी नाम स्वयंवो सब में ॥ कलियुग में नहीं कोई त्रात काल दुख हारी ॥ ज्योतिष की महिमा सब शास्त्रन सें भारी ॥ ६ ॥ वामें हो योगिनी सुख देती कह ज्ञानी ॥ हो पीठ पीछे तो काम फते मनमानी ॥ जो होवे दाहिने करदे बंधन हानी ॥ सन्मुख होने सें समझो मौत निसानी ॥ कुल ग्रंथ करैं नितजिसकी तावेदारी ॥ ज्योतिष की महिमा सब शास्त्रन सें भारी ॥ ७ ॥ है जीवन उसका सुफल पढ़े जोतिष को ॥ पिरथम तो कठिन है आ

ता है यह किस्सा जो एक ग्रंथ भी गुरू पढ़ादें जिसको ॥ दारिद्र दूर होजानै लगै था मिस को ॥ कहैं कुंज दत्त हम इसही के आधारी ॥ ८ ॥

॥ ५ ॥ ख्याल ॥

इस ज्योतिष ज्योति स्वरूप का जो कोई रक्खे ध्यान भला ॥ स्वल्प काल में होत उनके हिरदे में ज्ञान भला ॥ टेक० ॥
मेष और वृश्चिक राशी के मंगल स्वामी कहलाते ॥ विरष राशि के तुला के शुक्र देवता ठहराते ॥ मिथुन और कन्या का स्वामी चन्द्र पुत्र को बतलाते ॥ कर्क राशि का स्वामि आचार्य चंद्र को फ़रमाते ॥ मही ॥ मीन धन के स्वामि गुरु होत हैं अकसर सदा ॥ हैं मकर और कुंभ के स्वामी शनी बेहतर सदा राशि केवल सिंह के स्वामी सुनो दिनकर सदा ॥ जो इन्हें माने कोई उनके कुशल हो घर सदा ॥ जिन्हें नहीं बिश्वास फिरैं नर जैसे निसदिन स्वान भला ॥ स्वल्प काल में होत उनके हिरदे में ज्ञान भला ॥ १ ॥ पड़वा षष्ठी और एकादसी ये तिथि निंदा कहि जावें ॥ दोयज साते द्वादसी भद्रा सब के मन भावें ॥ तीज अष्ठमी तेरस इनकी जया जो संज्ञा बतलावें ॥ चौथ नौमी को चतुर्दसि को रिक्ता रिषिजन गावें ॥ मही ॥ पांचैं दशमी और पूनो ये तिथी पूर्णा कही ॥ देखो पन्द्रह तिथिन को ये पांच संज्ञा हैं सही ॥ नंदा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा पांचौं हैं यही ॥ जो लिखा है ग्रंथ में हमको उचित कहना वही ॥ जिसे इच्छा हो सोई पढो कोई पास हमारे ज्ञान भला ॥ स्वल्प काल में होत उन के हिरदे में ज्ञान भला ॥ २ ॥ नंदा तिथि को रविवार और मंगल का जब होना ॥ ॥ पंडित जन को चाहिये तब मृत्यु जोग का बतलाना

भद्रा तिथि कों सोमवार हो अथवा सुक्कर पहिचाना ॥ मृत्यु योग है आज तो पूछै जिसको समझाना ॥ दड़ी ॥ जया कों बुधवार हो और रिक्ता कों गुरुवार हो ॥ पूर्णा तिथि कों हो शनि तो मरै या बीमार हो ॥ मानना चाहिये इसें बिन माने साहूकार हो ॥ निरधन हो अपने गेह में चाहे कोई साहूकार हो जो कुछ है सो ज्योतिशास्त्र सें जिन ऐसा लिया जान भला ॥ ३ नंदा तिथि को सुक्रवार हो सिद्धि कहाता है वह जोग ॥ भद्रा तिथि को वार बुध होने सें करता है योग ॥ तिथी जया कों मंगल हो तो नाना बिधि के देवे भोग ॥ रिक्ता तिथि कों होय जो शनि सकल नाशैं गे शोग ॥ दड़ी ॥ पूर्णा तिथि कों हो वृहस्पति वार जानैं सर्व जन ॥ सिद्ध जोग है सिद्धि करता काज रखता मन प्रसन्न ॥ ऐसे जोग में जो कोई पर देश को करता गमन ॥ नहीं लगाता देर कुछ थोड़े ही दिन में लावे धन कुछ दल समझै हैं सम चाहे लाभ होय चाहे हान भला ॥ स्वल्प काल में होत उनके हिरदे में ज्ञान भला ॥ ४ ॥

॥ ६ ख्याल ॥

चाहे सारे अंग हों या शरीर में प्यारे महाराज नेत्र बिन अंधा कहलावे ॥ बगैर पढें ज्योतिस के नहीं कुछ मारग कों पावे ॥ टेक ॥ आवस्या पाड़िवा षष्ठि चौथ और नौमी ॥ महाराज चतुर्दसि आठैं निश्चै जान ॥ कोई प्रसूति इन तिथियों में मती करो अस्नान। कोई नारी महाराज सुनों तुम करने का वैधान ॥ तीन जन्म लों विधवा हो आगे को न हो संतान कोई पढ़े कौमदी मनो रमा और शेषर ॥ महाराज चाहे नैयायक हो जावै ॥ बगैर पढें जोतिस के नहीं कुछ मारग को पावै ॥ १ ॥ कृतिका और भरणी मूल पुष्य हो आर्द्रा म-

हा रक्त पुनर्वसु मघा औ चित्रा श्रवन ॥ विशाखा ये दश नक्षत्र कहे सुनलो इनका वरननन ॥ कोई प्रसूति नारी करै स्नान जो इन में महाराज करै वाके प्राणों का हरनन ॥ मती करो स्नान कभी ये है शास्तर का वचन ॥ कोई पढ़े चर्क और वाग्भट्ट कोई सुश्रुत महाराज औषधी निस दिन घुटवावैं ॥ बगैर पढ़े ज्योतिष के नहीं कुछ मारग को पावै ॥२॥ बुधवासर के न्हाये से बंध्या होजावे ॥ महाराज शुक्र के दिन विधवा होजाय ॥ शनीवार को न्हाय प्रसूती मरै न होत उपाय होय सोमवार को न्हायें दूध की हानी ॥ महाराज वार दिये उत्तम तीन बताय रवी भौम गुरु को न्हाये से निज कुल वृद्धी पाय ॥ कोई जपै मंत्र कोई साधै तंत्र को बैठा ॥ महाराज कोई चाहे पढ़ आवे ॥ बगैर पढ़े ज्योतिष के नहीं कुछ मारग को पावै ॥ ३॥ है मूल पुनर्वसु पुष्य श्रवन और मृगसर महाराज ॥ लीजिये पर ये नक्षत्र ॥ बाकी रहे जो कूप पूजने में नाहिं हैं बहतर ॥ बुध सोम बृहस्पति इसी वार ये शुभ हैं ॥ महाराज प्रसूती को चाहिये अकसर ॥ इनमें कूप पूजे से हरसो दुख और दालिद्दर ॥ कहे कृष्णदत्त चाहे सीखो तेरह विद्या ॥ महाराज संस्कृत चाहे भाषा गावै ॥ बगैर पढ़े ज्योतिष के नहीं कुछ मारग को पावै ॥ ४॥

॥ ७॥ ख्याल ॥

गाया चाहो तो गुनी सदा गावो ज्योतिष के ख्याल ॥ रहोगे कभी नहीं कंगाल जी ॥ टेक ॥ लग्न सेति चंद्रमा जन्म में छठे जो देत दिखाय ॥ ग्यारवें तैसाही समझाय जी ॥ करै बहुत सी हानि गेह में ऐसे वाक्य सुनाय ॥ पाइ्या सोने का बतलाय ॥ इन ख्यालों के गाने से मिलजाय बहुत सा

माल रहोगे कभी नहीं कंगाल जी ॥१॥ देखो लग्न से शसि दूसरे और पांचवें परै न वैवी वैसाही फल करै जी रूपे का पायेया वतानी दुख दालिद्र हरै ॥ सदा शुभ सारे काज सरै जी इन सेनी देखलो विगाना सारा अपना हाल ॥ रहोगे कभी नहीं कंगाल जी ॥ २ ॥ जिसके लग्न से शसी आठवें चौथे हैजावे बारवें वैसाही फल पावे जी ॥ होवे पाइ या लोहे का यूं कहके समझावे ॥ कष्ट वालक कै दरसावे जी करो भजन श्री कृष्णचन्द्र का तजदो षोटी चाल रहोगे कभी नहीं कंगाल ॥ ३॥ शसि लग्न से सुनो सातवें जिसको हो जाई तीसरे दशवें वैसाई जी ॥ वतलावो तामे का पइया वालक सुखदाई ॥ भजो तुम निसदिन रघुराई जी॥ कृष्ण दत्त कहे रटो कृष्ण को मती करो अब टाल रहोगे कभी नही कंगाल जी ॥४ ॥

॥८॥ ख्याल ॥

जगमें दरिद्र तो कभी न उसके आवै ॥ जो कोई ब्राह्मण ज्योतिष को पढ़ जावे ॥ टेक० ॥ जन्म का निसाकर मेष रासि को भाई ॥ घातिक होता है दिया तुझे वतलाई ॥ और व्रष को पांचवा कहा देखो समझाई ॥ होता है मिथुन को नवा सदा दुषदाई ॥ वो जहां जाय तहं रुपया खूब कमावे ॥ जो कोई ब्राह्मण ज्योतिस को पढ़ जावे ॥१॥ वह कर्क रासि को दूजा होत है घाती ॥ कोई नर हो चाहे कोइ सिंह चाहे हो हाती ॥ जो इसे रेलवलवान करै कोई छाती ॥ इस घातिचंद्र से सब दुनियां दुख पाती नित अच्छे भोजन खावे और षुलावे ॥ जो कोई ब्राह्मण ज्योतिष को पढ़ जावे ॥ २॥ होइ सिंह रासि को छटा जो

घाती जिसको ॥ वह अपने दिल का जिकर कहै कहो कि सको ॥ उसको नहिं परता चैन दिवस और निस को ॥ दुःख ऐसा हो वो भूले भूख और पिसको ॥ चाहै जावे देखलो कभी न ठाली पावे ॥ जो कोई ब्राह्मण ज्योतिष को पढ़ जावे ॥ ३ ॥ दशवां हो घातिक जिसको कन्या रासी ॥ चाहै राजा हो चाहै दास कोई चाहै दासी ॥ कल करले वसोय काश्मीर या कासी ॥ घातिक जब आवे चंद्र महा दुख पासी ॥ वोह रुजगार औरों का भी लग जावे ॥ जो कोई ब्राह्मण ज्योतिष को पढ़ जावे ॥ ४ ॥ तीसरा हो घाती तुला रासि को जाना ॥ वृश्चिक को सातवां होवे यह मन लाना ॥ अपने दिल में कोई हो कैसा ही स्याना ॥ यह घाति चंद्र कर देवै तुरत दिवाना ॥ मन के चितवन को कहके प्रगट सुनावे ॥ जो कोई ब्राह्मण ज्योतिष को पढ़ जावे ॥ ५ ॥ चौथा हो घातिक जिस राशि होवे धन ॥ आठवां मकर को होय जानते सज्जन ॥ ग्यारवां कुंभ को जिसके खोटे लच्छन ॥ मीन को बारवां उसका क्या करूं वरनन ॥ वोघो लके उल्टक इसका जतन बतावे ॥ जो कोई ब्राह्मन ज्योतिष को पढ़ जावे ॥ ६ ॥ घातिक में रोग हो जाय तो जी से मारे ॥ यात्रा करने से ठाली दिवस गुजारे ॥ विधवा होय कन्या जो विवाह कर डारे ॥ जो करे लड़ाई दुसमन से वो हारे ॥ कहे कृष्ण दत्त दुसमन को नित्य जलावे जो कोई बिराह्मन ज्योतिष को पढ़ जवे ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ ख्याल ॥

आज कहो काह के चंद्रमा कोइ नर नारी पूंछै आन ॥
बगैर पत्रे चंद्रमा बतावै जिस ब्राह्मण को होवे ज्ञान ॥

॥ टेक०॥ बारह मास के बारह नक्षत्र वे उनके गुरु कहलाते चैत के चित्रा गुरु विशाखा वैशाख के गुरु कहलाते ॥ ज्येष्ठ के ज्येष्ठा पूर्वाषाढ़ गुरु अषाढ़ के जो हो फरमाते ॥ सावन के हों श्रवन पूर्वा भाद्रपद भादवा के पाते ॥ असोज के अश्विनी कृत्तिका कार्त्तिक का गुरु लीजे जान ॥ वगैर पत्रे चंद्रमा न तावे जिस ब्राह्मन को होवे ज्ञान १ मृगशिर हों मंगशिर के पौष के पुष्य गुरु होवें प्यारे ॥ माघा माघ के पूर्वा फाल्गुनी फागन के कह दिये सारे ॥ जितने दिन वीते हों मास के उनमें सें दो घाडोरे ॥ रहे शेष दिन व्हां तक चालर गुरु निछत्र सें गिन लारे ॥ जो निछत्र निश्चय कर लीना वातें हीं तुम करो बयान ॥ वगैर पत्रे चंद्रमा बतावे जिस ब्राह्मन को होवे ज्ञान ॥ २॥ जैसे ग्रंथ को पढ़ के सपदि ब्राह्मन हो जावे हुसियार ॥ आप पढ़ें पुत्रों को पढ़ावें विद्या का जिनके आधार ॥ जो निज विद्या नहीं पढ़ें उनकी होती है नहीं घार ॥ धरम करम सब जाय रहेंगे सदा विगाने नावे दार ॥ सत्य शील संतोष वृत्ति हो इष्ट देव का रखै ध्यान ॥ वगैर पत्रे चंद्रमां बतावे जिस ब्राह्मन को होवे ज्ञान ॥ ३॥ और छन्द हैं अनंत जग में ये हैं जैसे नावक के तीर ॥ इन छन्दों को वही पढ़ेगा जिसकी हो पूरी तकदीर ॥ विद्या का अभ्यास करो और अपने दिल में रखो धीर ॥ गिने दिनों में पंडित होवे कृपा करै जिस पै रघुवीर ॥ कृष्ण दत्त कह जोतिष पढ़ के नर रख सें होवे गुनवान ॥ वगैर पत्रे चंद्रमा बतावे जिस ब्राह्मन को होवे ज्ञान ॥ ४॥

॥१०॥ ख्याल ॥

जोति रूप के ख्याल जगत में नर नारी जो कोई गावे ॥

धर्म अर्थ और काम भोग के अंत समैं मुक्ती पावै ॥ टेक० ॥ अर्क सेती दिन जाय पांच या सात दिनों का हो जाना ॥ नैया दश इक्कीस और चौबीस तथापि समझाना ॥ सोती है पृथवी नहा ग वापी घर की नहिं बनवाना ॥ ए हैं छन्द निर द्वंद इनों में है शास्त्र का परमाना ॥ भरी सभा में कहे तड़के नहीं कि सी से सरमावे ॥ अर्थ धर्म और काम भोग के अंत समैं मु क्ती पावै ॥ १ ॥ तिथीवार कों जोड़ के पीछे पंच बिंश दे और मिलाय ॥ एक बचै तो होय स्वर्ग में दोय बचैं पाताल ब ताय ॥ तीन बचें या सून्य आवै तो मृत्यु लोक में तब होजाय निराकार है नित्य निरंजन ज्योति रूप जो कोई ध्यावे ॥ अर्थ धर्म और काम भोग के अंत समैं मुक्ती पावै ॥ २ ॥ पांच घ- ड़ी दिन चढ़े गुनी जन बुद्ध गिरह का दीजे दान ॥ करे शनैश्चर का जो दान तो समै बता दीजे मध्यान ॥ राहु केत का दीजे सांझ कों मंगल का अरुणो दय जान ॥ चार घड़ी दिन चढ़ें गुरु का चंद्र शुक्र का प्रात बषान ॥ ये हैं ग्रंथ भाषाभू षण कोइ पढ़लो जिसके मन भावै ॥ अर्थ धर्म और काम भोग के अंत समै मुक्ती पावै ॥ ३ ॥ बगैर समें जो दान करै गा वह जल्दी मर जाय सही ॥ नहीं अकल से कही बात ये ग्रंथों का फल देख कही ॥ जो भाषा में कहा किसी ने संस्कृत में चाहे देख वही ॥ बगैर साक्षि कुछ नहीं बनाना कवी ज- नों की रीति यही ॥ कृष्ण दत्त कहे वही कवी है हम कों तो कुछ नहिं आवै ॥ अर्थ धर्म और काम भोग के अंत स में मुक्ती पावै ॥ ४ ॥

॥ २२ ॥ ख्याल ॥

ज्योतिष है ज्योति स्वरूप जिन रचदी यह सृष्टी सारी ॥

सुर जिस की महिमा नहिं जानें क्या जानें कोई नर नारी ॥ टेक० ॥ धनिष्ठादि रेवती तक प्यारे पांच निक्षत्र आते हैं ॥ जे हैंगे आचार्य्य पुरातन पंचक इन्हें बताते हैं ॥ जो इन में तृण काष्ठ खरीदें दखन दिशा को जाते हैं ॥ नवीन घर जो बनावते हैं वे नर सुख नहिं पाते हैं ॥ सुगम और ग्रंथों का पढ़ना ज्योतिष का पढ़ना भारी ॥ सुर जिस्की महिमा नहिं जाने क्या जाने कोई नर नारी ॥ १ ॥ हस्त नि छत्तर में सुन प्यारे नहिं जाना चाहिये उत्तर ॥ दखिन दिशा में कोई न जावो जब हो चित्तरा नक्षत्तर ॥ रोहिणी को पूरब नहिं जावो काम चाहे बिगरे सत्तर ॥ श्रवण को पश्चिम दिशा न जाना ऐसें कहता है शास्त्तर ॥ ज्योतिष के सब चले आसरे बड़े बड़े छत्तर धारी ॥ सुर जिसकी महिमा नहिं जानें क्या जानें कोई नर नारी ॥ २ ॥ और हाल सब सुनें गुनी जन मास दिशा सुन लो भाई ॥ जन्म सूर्य्य के बीस दिनों तक सूरज ही की बतलाई ॥ सूर्य्य तीसरे के दिन दशलों दशा चंद्रमा की आई ॥ चोथे सूर्य्य के जायं आठ दिन जब तक मंगल की पाई ॥ छठे सूर्य्य के चार दिवस तक दशा हो बुध की सुभकारी ॥ सुर जिसकी महिमा नहिं जाने क्या जाने कोई नर नारी ॥ ३ ॥ दस दिन तक सातवा सूर्य्य के दशा शनिश्चर की पहिचान ॥ नवे सूर्य्य के आठ दिनो तक दशा गुरू की निश्चे जान ॥ बीस दिनों तक दसवां सूर्य्य के दशा राहु की करती हान ॥ सूर्य्य बारवें के तीसो दिन तक हो सुक्र की सुख की खान ॥ सूर्य्य भोम शनि राहु के सिवा सुभ फल की देने वारी ॥ सुर जिसकी महिमा नहिं जानें क्या जाने कोई नर नारी ॥ ४ ॥ जितें पैर होवें छाया के

उन में षट और मिलावना ॥ मिलाके इन को सुनों एक सों इक्कीसे में घटावना ॥ लब्धांको को घड़ी समझना शेषोंको पल बतावना ॥ इतनी घड़ी दिन चढ़ाया बाकी सोकिल सेंस पनी लगावना ॥ कृष्ण दत्त कहे लगे प्यारी छवि प्यारी ॥ सुर जिसकी महिमा नहिं जाने क्या जाने को ई नर नारी ॥ ५ ॥

॥ १२ ॥ ख्याल ॥

उस ब्राह्मन ने कहा किया कहो इस जग में आके ॥ एक ग्रंथ ज्योतिष नहीं जिन्ह पढ़ा कहीं जाके ॥ टेक० ॥ रो हिणी उत्तरा तीनों लेके और रेवती प्यारे ॥ मूल स्वाति मघा कहे मो रिषियों ने सारे ॥ अनुराधा और हस्त इनके ब्याह रहे हैं न्यारे ॥ अति उत्तम है बिबाह में मंगल देने हारे ॥ उमर खोवई अपनी जिसमें यों ही नाज खाके ॥ एक ग्रंथ ज्योतिष का नहीं जिन पढ़ा कहीं जाके ॥ १ ॥ माघ मास में ब्याह किये होवे कन्या हो धेधन बान ॥ फागन में करने से होत हैं सुख संपति और ज्ञान ॥ करने से वैशाख ज्येष्ठ आषाढ़ में उत्तम जान ॥ वो कन्या अपने पति को नित्त लागे जीवन प्रान ॥ कोई कहे मगसिर में करो मन की इच्छा पाके ॥ एक ग्रंथ जोतिस का नहीं जिन पढ़ा कहीं जाके ॥ २ ॥ चौथे आठवें और बारवें सूरज हो भाई ॥ बिवाह पीछे सुनों वही वर यम पुर को जाई ॥ जिसे जन्म काहू जो पांचवा देवे दिखलाई ॥ होय सातवां नवां दीजिये पूजा बतलाई ॥ और इस्म कोई लाख पढ़ो द्विज फूटेभाग वाके ॥ एक ग्रंथ ज्योतिस का नहीं जिन पढ़ा कहीं जाके ॥ ३ ॥ वर कि रासते सूर्य्य तीसरे जो ग्यारवें हो जावे ॥ छटे

और दशवें होंय जिसको चोथा व्याह बताय ॥ जन्म राशि तें गिनिये सूरज यह तीना समझाय ॥ जो संस्कृत श्लोको में वही दिया भाषा में दरसाय ॥ कहो हमें वह क्या सुख पाया परके पेट भांके ॥ एक ग्रंथ ज्योतिस का नहीं जिन पढ़ा कहीं जाके ॥ ४ ॥ चौथे आठवें वार वें गुरु हो व्याह करो डर के ॥ वो कन्या मरजाय और सब दुखी रहे घर के ॥ कन्या को होय गुरु श्रेष्ट यह खूब निश्चे करके ॥ पंडित का यह धरम न्याय है आगे ईश्वर के ॥ सुपने में वी कैसे लक्ष्मी पास आवे ताके ॥ एक ग्रंथ ज्योतिष का नहीं जिन पढ़ा कहीं जाके ॥ ५ ॥ कन्यां को जन्म का गुरु और छठा जो हो जावे ॥ होवे तीसरा दशवां तो वडि पूजा वतलावे ॥ नाना विधि के वना पदारथ विप्रन को आवे ॥ पूजा का हो दरदो व यह कन्यां सुख पावे ॥ करै गुजारा कहीं विप्र रुकमानिमंगल गाके ॥ एक ग्रंथ ज्योस का नहीं जिन पढ़ा कहीं जाके ॥ ६ ॥ जो गुरु हो ग्यारवां दूसरा यों कहता शास्तर ॥ होवे पांचवां और सातवां सुनों वड़ा वेहतर ॥ वर देखो सूर्य कन्यां को गुरु देखो अकसर ॥ दोनों को होय श्रेष्ठ चंद्रमां चोये आठवें डर ॥ कृष्ण दत्त कहे वो भूसर काहिं मारे गाड़ा के ॥ एक ग्रंथ ज्योतिष का नहीं जिन पढ़ा कहीं जाके ॥ ७ ॥

॥ २३ ॥ ख्याल ॥

तुम सुनों वचन हम कहते हैं हर वारा ॥ ज्योतिस के पढ़े विन होता नहीं गुजारा ॥ टेक • ॥ रोहिणी मृग सिर अस्विनि अनुराधा आया ॥ और श्रवण धनिष्ठा हस्त चित्रा समझाया ॥ ये स्वांति पुनर्वसु पुष्य पूरवा वतलाया और तीनों उत्तरा मूल त्रक्त फरमाया ॥ ऊरे वर सौ मेहिर

गमन हो प्यारा ॥ ज्योतिष के पढे विन होता नांहिं गुजारा
अगसिर फागन वैशाख ज्येष्ठ ये मासा ॥ अरु मिथुन कन्या
तुल मकर लग्न है वासा ॥ यह मीन लग्न भी मेटत है सब त्रास
शनि सोमवार तज वारों को कर आसा ॥ अब तिथियों का
भी कहते हैं निरधारा ॥ ज्योतिस के पढे विन होता नांहि
गुजारा ॥ २ ॥ पष्ठी रिक्ता द्वादशी तजो रे भाई ॥ अमा
वस्या तिथि ऐसीही फरमाई ॥ जो बाकी रही तिथि गौ
ने में सुखदाई ॥ संस्कृत की बातें भाषा में दरसाई ॥ पैद
ल हो जैसा करलो हलका भारा ॥ ज्योतिष के पढे विन होता
नांहिं गुजारा ॥ ३ ॥ जो गाया चाहो तो कृष्ण चंद्र गुन गा
वो ॥ क्यों बैठे बैठे नाहक बात बनावो ॥ अपने चित्त को गु
रु के चरनन में लावो ॥ गुरु भक्ति कृपा से फेर जनम नांहि
पावो ॥ कहै कृष्णदत्त ये है जग पालन हारा ॥ ज्योतिष के
पढे विन होता नांहि गुजारा ॥ ४ ॥

॥ १४ ॥ ख्याल ॥

ज्योतिः शास्त्र ज्योति स्वरूप है बड़े बड़े कहते बुध जन ॥ जिस
के बल से होत है इसी जगत का कुल बरनन ॥ टेक० ॥
कृष्ण पक्ष में तीज और दशमी को भद्रा हो पर दल ॥ चतु
र्दशी को और साते को पूर्व दल करे अमल ॥ शुभ कारज इ
न में नहिं करना ये है शास्त्र का तत्व असल ॥ भावी के बस
होय तब बिसर जात है सारी अकल ॥ एक ग्रंथ के पढने
से मिलजाता है बहुतेरा धन ॥ जिस के बल से होत है इसी
जगत का कुल बरनन ॥ १ ॥ शुक्ल पक्ष में एकादशी और
चौथ को पर दल में जानी ॥ पूरब दल में आठैं पूर्णमासि
को कहते ज्ञानी ॥ ये भद्रा भगवती इन्हैं कोइ नहिं माने

जो अभिमानी ॥ उनके घर में होत है सदा उन्न धन की हा
नी ॥ पंडितजन बतला देते हैं आकाश में जो होय ग्रहन
जिसके बल से होत है इसी जगत का कुल वरनन ॥ २ ॥
आठ घड़ी तो रहैं स्वर्ग में रस घड़ि रहैं पताल सुनो ॥ मृ
त्यु लोक में घड़ी रहैं सोलह सा स हाल सुनो ॥ तीस घड़ी
हैं भद्रा की भिन भिन तुम इनकी चाल सुनो ॥ सभी जगत
को रात दिन करती हैं प्रतिपाल सुनो ॥ मलू म होती है अ
ब के बरसैगा या नहिं बरसे घन ॥ जिसके बल से होत है
इसी जगत का कुल वरनन ॥ ३ ॥ सुरग में भद्रा होय तो
होती है वे सुभ फल की दाता ॥ जो पाताल में होय तो अ
तिही घर में धन आता ॥ मृत्यु लोक में होय तो अपना
कारज सकल बिगार जाता ॥ इसी से इन को त्यागिये ऐ
से शास्त्र फरमाता ॥ कृष्ण दत्त कहै इस ज्योतिस में बसै रा
ति दिन मेरा मन ॥ जिसके बल से होत है सबी जगत का
कुल वरनन ॥ ४ ॥

॥ १५ ॥ ख्याल ॥

किसी सरख्स ने पूछि आन कहो वाक्य मिश्र जी शास्त्र का ॥
मम कांता को गर्भ है क्या होगा लड़की लड़का ॥ टेक ॥
उसी समै पंडित ने हस्तपादों के नखन को दुगने कर ॥
गर्भ वती के नाम के युक्त किये जितने अक्षर ॥ बोलगई
जो तिथि अंक फिर उन में और मिलवाये सर ॥ सब अंकों
को जोड़ के एक अंक कर दिया वदर ॥ निज घर से जब च
ला गुरू जी दहिना अंग मेरा फरका ॥ मम कांता को गर्भ
है क्या होगा लरकी लरका ॥ १ ॥ ग्रह का दीजे भाग शेष
बिषम आंक रहे होता है कुमार ॥ वचे शेष सम अंक हो

य सुना यही ले दिल मैं धार ॥ जरा न उसकी खबर गली की गली है उसकी बड़ी अपार ॥ पर्वत सेती वो राई करै राई सें वो करै पहार ॥ कल्लान द्विज सन्मुख आया तिल का भाल में केसर का ॥ मम कांता को गर्भ है क्या होगा लर-की लरका ॥ २ ॥ ये तो वाक्य सिद्धांत ग्रंथ के सुन के चित्त पे धर लीना ॥ ज्योतिश शास्त्र को जो कोई पढ़े धन्य है उनका जीना ॥ इन बातों को क्या समझे नर जो होवे मत का हीना देखो संस्कृत पढ़ों का हाल सभी भाषा कीना ॥ कई पुत्र हो गये नष्ट मेरे कुल में दोष है खेचर का ॥ मम कांता को गर्भ है क्या होगा लरकी लरका ॥ ३ ॥ कृष्न चंद्र महाराज जिनों के पद सरोज की धार नाई ॥ जो को लेवे लोक में वह पावे गा प्रभुताई ॥ कृष्न दत्त कहै गौड़ विराह्मन जिसको है यह चतुराई ॥ इस कलियुग में करो कल्यान सदा गंगा माई ॥ छुट जावें भव फंद सघन के ध्यान धरो शिवशंकर का ॥ मम कांता को गर्भ है क्या होगा लड़की लड़का ॥ ५ ॥

॥ १६ ॥ ख्याल ॥

जोतिश शास्त्र के प्रताप ते यह जगत सभी हो रहा गुलजार इसही तें मालूम होत है काल और संवत का विचार ॥ टेक ॥ मीन मेष ये लगन रहत है साढे तीन तीन घड़ी प्रमान ॥ चार कुंभ रहै चार विरष है जानत हैं ब्राह्मन सुजान ॥ पांच घड़ी रहै मिथुन पांच ही मकर यही इनकी पहिचान पौने छह घड़ी रहत है लग्न कर्क और धन यह जान ॥ वे ब्राह्मन करते हैं चैन जो रखते ज्योतिष का आधार ॥ इस ही तें मालूम होत है काल और संवत का विचार ॥ सिंह लग्न रहता है सायरो पांच घड़ी इक्यावन पल ॥ वृश्चिक

भी इसही प्रमाण से रहे जानते जिन्हें अकल ॥ पांच घड़ी अरु बयालीस पल रहता कन्या लग्न अचल ॥ तुला लग्न भी घड़ी पांच और बयालीस पल करे असल ॥ और तरह रुजगार न हो ज्योतिष के पढ़ें होवे रुजगार ॥ इसही तें मालूम होत है काल और संवत का विचार ॥ २ ॥ जिसी हो संक्रांति लग्न वह सूर्योदय में निश्चै कर ॥ उदय लग्न से सुनों गुनीजन अस्त सातवें में अकसर ॥ बारह लग्न दि- न रैन में उगतें जानत हैं बिरले चातर ॥ एक कुंडली बना के बारह कोठे हों जिसके अंदर ॥ उनको कोठों से भिन्न भिन्न इ- स कुल सृष्टी का करो सुमार ॥ इसही तें मालूम होत है का- ल और संवत का विचार ॥ ३ ॥ अव्वल कोठा होय लग्न का दूजा धन का समझाया ॥ तीजा भ्रात का चौथा मात का पंचम सुत का बतलाया ॥ छठा हो रिपु का स्त्री का सातवां मृत्यु सदन अष्टम आया ॥ नवां भाग्य का दशवां कर्म का लाभ ग्यारवां फरमाया ॥ कोठा खरच का होय बारवां जिस की माया बड़ी अपार ॥ इसही तें मालूम होत है काल और संवत का विचार ॥ ४ ॥ शहर बसै अति शोभन बावल जिस- के अंदर करै निवास ॥ वैयाकर्ण और काव्य कोश है ज्यो तिष का जादे अभ्यास ॥ गौड़ बिराह्मन नाम कृष्ण हल ह- स चंद्र के पद का दास ॥ रचा ग्रंथ जिन भाषा भूषन पढ़ ने से हो मति प्रकास ॥ चाहे कोई षट शास्त्र पढ़ो बिन ज्योतिष के कुछ नहीं बहार ॥ इसही तें मालूम होत है काल और संवत का बयान ॥ ५ ॥

॥ १७ ॥ ख्याल ॥

उस नर ने अपना सुफल जन्म को कीनों ॥ इस जग में

जिसने ज्योतिष को पढ़ लीना ॥ टेक० ॥ पूर्वा षाढ अ-
श्वनी हस्त नृक्ष ऐसे हैं ॥ चित्रा औ स्वाति सरवनभिष
नों वैसे हैं ॥ ज्येष्ठा मग म्रगसिर तीनों नृक्ष जैसे हैं ॥ रेवती
पुष्य भी जैसे हि ये तैसे हैं ॥ उत्तरायन में यज्ञोपवीत जिन
दीना ॥ इस जग में जिसने ज्योतिष को पढ़ लीना ॥१॥
दोयज औ तृतीया तिथी कही ये नीकी ॥ पंचमी को स-
हिमा अधिक सुनो दशमी की ॥ है एकादशी द्वादशी जो
सुखदा जी की ॥ रवि शुक्र गुरु सिवा वार अशो वर ही
को ॥ ब्राह्मन को आठवें वरस ऊकम संगीना ॥ इस जग
में जिसने ज्योतिष को पढ़ लीना ॥ २ ॥ हो शुक्ल पक्ष और
लगन विरष वलवाना ॥ धन कन्या सिंह और मिथुन हृदे दे
आना ॥ यज्ञोपवीत ऐसे मुहूर्त बतलाना ॥ ब्राह्
न क्षत्री वैश्यन के जाय कराना ॥ दूसरे के जिसने कटुक व-
चन को पीना ॥ उस नर ने अपना सुफल जनम को कीना ॥
३ ॥ कितनी प्रकार के मनुष नजर में आवें ॥ अपनी अपनी
कविताई को दिखलावें ॥ बिन भक्ति हरी की अधो गती को
जावें ॥ तज के ग्रहस्थ जो नाहक मूंड मुड़ावें ॥ कहें कृष्ण
दत्त जिन ज्योति रूप को चीना ॥ उस नर ने अपना सुफल ज
नम को कीना ॥ ४ ॥

॥ १८ ॥ ख्याल ॥

जो नर नारी इस कलियुग में कृष्ण चंद्र गुन गाता है ॥
जीवै जबलों सुखी रहै और अंत परं पद पाता है ॥ टेक ॥
जिसके नाम में पहला अक्षर अवर्ग में हो सुन लो हाल
गरुड वरग उसका होता है ज्योतिशास्त्र से करो संभाल ॥
कवर्ग में हो नाम का अक्षर कहिये उसका वरग बिडाल

चवर्ग में हो सिंह वर्ग और टवर्ग में कूकर कर ख्याल॥ निज घर के सब काम करै चित हरि के चरन लगाता है॥ जीवे जब लों सुखी रहे और अंत परं पद पाता है॥ १॥ तवर्ग में नाम का हो अक्षर सर्प वर्ग तब लीजे जान॥ पवर्ग में होवे तो वर्ग मूसा कहना चाहिये सुजान॥ पहला अक्षर नाम का होवे यवर्ग में तो हिरन पिछान॥ शवर्ग में नामाक्षर हो तो मींढा वर्ग कर दिया बयान॥ हरिचरित्र को सुने सुनावे जिसको यही सुहाता है॥ जीवे जबलों सुखी रहे और अंत परं पद पाता है॥ २॥ अपने वर्ग से वर्ग पांचवां जिस नर का हो सुनो विचार॥ कहु अपना होता है शत्रु कुछ नाहिं कीजे बातें व्यवहार चौथे वर्ग हो अपने वर्ग से उसे शत्रु समझो हर बार॥ स्ववर्ग से तीसरे वर्ग हो शत्रुन मित्र कहो इकसार॥ उदासीन उसकी संज्ञा कोई जाने ज्योतिष ज्ञाता है॥ जीवे जबलों सुखी रहे और अंत परं पद पाता है॥ ३॥ अस्वनी म्रगसिर और रेवती हस्त पुष्य सुन लो सब जन॥ पुनर्वसु अनुराधा सरवन स्वाति इनका हो देवता गन॥ तीनों उतरा पूर्वा तीनों और आर्द्रा रोहिणी सुमन॥ इनका होवे मनुष्य गन यह ज्योति शास्त्र से कहा वचन॥ जिन ऐसा लिया जान वही हरि बंधु पिता और माता है॥ जीवे जबलों सुखी रहे और अंत परं पद पाता है॥ ४॥ कृतिका श्लेषा मघा विशाखा और शतविषा सुन चहिये॥ चित्रा ज्येष्ठा मूल धनिष्ठा राक्षस गन इनका कहिये॥ जो अपने पै होवे क्रोध वा क्रोध को खूब तरे सहिये॥ सत्य शील गुरु भक्ति हृदे में

तोष वृत्ति सेती रहिये ॥ उसका आसरा रखै जीव जो दाता का भी दाता है ॥ ५ ॥ अपने गन में किसी का गन हो परम प्रीति होवे तिन की ॥ किसी का होवे मनुष-किसी का देव प्रीति मध्यम जिनकी ॥ मनुष किसीका किसी का राक्षस गन हो मौत होवे थिनकी ॥ राक्षसगन हो किसी का देवता कलह परस्पर रहै दिन की ॥ जोकहू असें मेरा न कोई एक राम से नाता है ॥ जीवे जब लों सुखी रहै और अंत परं पद पाता है ॥ ६ ॥ स्त्री पुरुषन की रासि परस्पर छटे रहै दुसमन ताई ॥ जो हो आठ वें रासि तो उनकी चाहे मृत्यु भी हो जाई ॥ जो हो दूसरें और बार वें रासि सदा निर धन ताई ॥ नवें पांचवें रासि परस्पर होय कलह घर में भाई ॥ रा म दत्त कहे बिन हरि सेवा जन यह जाता आता है ॥ जीवै जब लों सुखी रहै और अंत परंपद पाता है ॥ ७ ॥

॥ २६ ॥ ख्याल ॥

किसी ने पूंछा मेरी राशि पै हुवा शनिश्चर का आना कौन जगह पै वासा इसका पंडित जी मोहि बतलाना ॥ टेक० ॥ पंडित काढे एक चक्र कों जैसा मानुष का आकार ॥ शीस नेत्र मुख कान हाथ हृच्चरन गुदालो लिखे सुधार ॥ जिस निक्षत्र पै आया शनिश्चर वाही ते सब होय विचार ॥ उसको शनि का मुख में धर के आगे कोफेरकरो शुमार पूंछन वाले का निक्षत्र हो व्हां तक उसको धर जाना ॥ कौन जगह पर वासा इन का पंडित जी मोहि बतलाना ॥ १ ॥ मुख में धरा वा सें आगे धर चार निक्षत्तर दाक्षिण कर ॥ इसी तरह

सें तीन तीन घर देना दोनों चरनों पर ॥ वाम हात सें चार भाल में युग्म तीन धर हो नेतर। पांच ऊदे में दोय गुदा में एक दाहिनी कूष में धर ॥ मुख में वासा करे तो हानी करे ये उसको समझाना ॥ कौन जगह पर वासा इसका पंडित जी मोहि वतलाना ॥ २ ॥ दाहिने हात पर होय तो धनकी लाभ जो वाको कर वावै॥ बायें हात पर रोग देह में वहुतेरा ही उपजावै ॥ वासा हो हिरदे में लक्ष्मी आपहि वाके घर आवे ॥ मस्तक वासा करै शनी तो राज सें काम फते पावे ॥ जो होइ वासा चरनन पै तो गमन सें होवै दुष पाना ॥ कौन जगह पै वासा इसको पंडित जी मोहि वतलाना ॥ ३ ॥ जो हो नेत्र में सुखी रहेगो गुदा मत्यु देने हारा ॥ कुक्षिवास होने सें शोक चिंता करता है हर वारा ॥ जप पूजा करने सें होय कल्यान फते कारज सारा ॥ पाइया का सुन लो विचार अब कहते हैं तम सें न्यारा ॥ किसी कों तो यह निहाल करदे किसी को कर दे दुखवाना ॥ कौन जगह पै वासा इसका पंडित जी मोहि वतलाना ॥ ४ ॥ शनि निछत्र सें मानुष के नक्षत्र ताहीं गिन जावो तुम ॥ जितने ऊला हो तिन में चौकस चार को भाग लगावो तुम ॥ एक बचे सें हो सौने का पाइया उसैं वतावो तुम ॥ दोयै लोहे का तीन पै तामा चार पे रूपा सुनावो तुम ॥ कृष्ण दत्त कहै सुनों गुनी तुम मेरी तरफ करके काना ॥ कौन जगह पै वासा इसका पंडित जी मोहि वतलाना ॥ ५ ॥

॥ २० ॥ ख्याल ॥

तू कहा हमारा मान कहीं मत भटके ॥ सव काम फ-

ते हों सुन ज्योतिष के लटके ॥ टेक० ॥ यह कर्क औ
र वृश्चिक हो जिसकी रासी ॥ जिस किसी कि होवे मीन
रासि वीषासी ॥ इन रासि वाले का विप्र वरन कहलासी
वह अंत काल में देह तजेगा कासी ॥ जिसके सुनने
से मिट जावें सब खटके ॥ सब काम फते हों सुन ज्योति
ष के लटके ॥ १ ॥ जो मेष रासि वाला कोई जन होता
है ॥ धन सिंह होने से मन का मैल धोता है ॥ कोवि
कभी लगावै सुर सरि में गोता है ॥ उसका हो छत्री
वरन विभय सोता है ॥ हैं ख्याल इजादें ये हैं इल्म
के चटके ॥ सब काम फते हों सुन ज्योतिष के लटके ॥
२ ॥ जिसकी होती है मिथुन रासि संसारे ॥ और तु
ला कुंभ रासिन का फल है भारे ॥ कहलाता इन का
शूद्र वरन सुन प्यारे ॥ ये बातें हम कहें ज्योतिष के आ
धारे ॥ नहिं पावै भेद चाहे कई जनम सिर पटके ॥ स
ब काम फते हों सुन ज्योतिष के लटके ॥ ३ ॥ कोई नर
नारी होय कन्या रासी वाला ॥ और विरष मकर का भी
सुन लो सब हाला ॥ हो वैश्य वरन करता कुटंब प्रतिपा
ला ॥ भगवद्भक्ति पहिने गल तुलसी माला ॥ को मोक्ष
न पाया ज्योति रूप को रटके ॥ सब काम फते हो सुन ज्यो
तिष के लटके ॥ ४ ॥ उत्तम जो वर्ण को कन्या व्याह
कोई लावै ॥ व्याह के वाद वह जन अति हीं दुष पावै
ब्राह्मण वर्णी को विशेष कर तज आवै ॥ हो शुक्र पुत्र स
म तो विधवा हो जावै ॥ कहैं कृष्ण दत्त हम सेवक नाग
र नट के ॥ सब काम फते हों सुन ज्योतिष के लटके ॥
५ ॥ इति श्री मत्कृष्ण दत्त विप्र विरचितं भाषा भूषण समाप्तं ॥

इशतहार

प्रगट होकि यह पुस्तक शहर
भोजा की बावल के रहनेवाले पंडित
कृष्ण दत्तजी ने लावनी की चाल में
बनाके तइयार किया और नाम
इसका भाषा भूषण रक्खा अब छापे
खानः ज्ञान प्रेस देहली नई सड़क
पे पान सौ ५०० जिल्द अपनी आप
छपवाई संवत १९३५ मुताबिक़
सन १८७८ ई॰

॥

गणित बोधनी

अर्थात्

गणित संबन्धी प्रश्नोत्तर

श्री पंडित माखनलाल मुदर्रिस मदर्सह

तहसीली छिबरामऊ ज़िला फ़र्रुखाबादकी

आज्ञानुसार

ज्वालाप्रसाद मुदर्रिस ताहपुर ने बनाई

सन् १८७४ ई०

पहलीबार छपी
५०० जिल्द

क़ीमत फ़ी जिल्द
=) आने

भूमिका

प्रकट हो कि माखनलाल मुदर्रिस छिबरामऊ की आज्ञानुसार ज्वालाप्रसाद मुदर्रिस ताहपुर परगनह छिबरामऊ ने यह पुस्तक कि जिसमें प्रश्न अंक और पैमायश के क्रिया सहित बनाकर गणित बोधनी नाम रक्खा - विद्यार्थियों को चाहिये इस को पढ़कर लाभ उठावें अब समस्त पाठक जनों से यह प्रार्थना करता हूं कि इस को दया दृष्टि से देखें और विद्यार्थियों को उत्साह बढ़ावें और भूल चूक को सुधारलें ॥

दोहा

थोड़ा व्यय और हित घनो ले बढ़ याहि खरीद
गणित बोधनी जानि लेउ है यह बहुत मुफ़ीद

गणित बोधनी

(१प्र०) अंडाकृति का क्षेत्र फल २८·२७४४ है और उस का वड़ा व्यास ७ है तो उस का छोटा व्यास क्या होगा॥

२८·२७४४ ÷ ·७८५४ = ३६   ६ × २ = १२

√३६ = ६   १२ − ७ = ५ उ०

(२प्र०) किसी अंडाकृति का वड़ा व्यास ३४ है और उस का क्षेत्र फल ५३०·९३०४ इतना है तो उस का छोटा व्यास क्या होगा॥

५३०·९३०४ ÷ ·७८५४ = ६७६   २६ × २ = ५२

√६७६ = २६   ५२ − ३४ = १८ उ०

(२प्र०) कालिकाप्रसाद मिसुर ने अपने घोड़े को लेजा कर किसी पेड़ से वांध दिया कुछ दिन के वाद उस घोड़े ने ३८·४८४६ वीघे की घास को चर लिया तो वतलाओ कि वह घोड़ा कै हाथ की रस्सी से वंधा जो चारों ओर घूम कर चरता था॥

३८·४८४६ ÷ ·७८५४ = ४९   ७ × ६० = ४२० ग० व्या०

√४९ = ७ ज०   ४२० ÷ २ = २१० ग० उ०

(३प्र०) एक रथ के अगले पहिये का घेरा ५ फ़ीट और पिछले का ७ फ़ीट है तो वताओ कि १ मील के चलने में अगले पहिये ने पिछले पहिये से कितने चक्कर अधिक लगाये॥

१ × १७६० = १७६० ग०
१७६० × ३ = ५२८० फ़ी०
५ : ५२८० :: १ : १०५६ च०
७ : ५२८० :: १ : ७५४ ३/७ च०

१०५६ − ७५४ २/७ = ३०१ ५/७ और

(४प्र॰) एक मनुष्य के पास १४) रुपये मन की कुछ मदिरा है उस में जल मिला कर ८) रुपये के भाव से बेंचा तो ५६) रुपये उठे तो बतलाओ कितनी मदिरा और कितना जल था ॥

१४ रु : ५६ रु :: १ म : ४ उ॰ म॰

८ रु : ५६ रु :: १ म : ७ उ॰ मि॰

७ − ४ = ३ उ॰ ज॰

(५प्र॰) एक दी हुई चाप की उंचाई ४ इंच और व्यास ९ इंच है तो बतलाओ आधे चाप की जीवा क्या होगी ॥

४ × ९ = ३६ वर्ग इंच

√३६ = ६ इंच उ॰

(६प्र॰) किसी चाप की उचाई ५ इंच और व्यास उस का ८ इंच है तो कहो आधे चाप की जीवा क्या होगी ॥

५ × ८ = ४०

√४० = ६·३४६ इंच

(७प्र॰) एक चाप की उचाई ७ इंच और आधे चाप की जीवा ४५ इंच है तो उस का व्यास क्या होगा ॥

४५² = २०२५

२०२५ ÷ ७ = २८९ २/७ उ॰

(८प्र·) उस वृत्त का व्यास बताओ जिस के चाप की जीवा ४४ औ र आधे चाप की जीवा २५ है ॥

$२५^2 = ६२५$

$४४ ÷ २ = २२$

$२२^2 = ४८४$

$६२५ - ४८४ = १४१$

$६२५ ÷ १४१ = ४\frac{६१}{१४१}$ उ०

(९प्र·) चाप की जीवा १० आधे चाप की जीवा ६ है तो व्यास क्या होगा ॥

$६^2 = ३६$

$१० ÷ २ = ५$

$५^2 = २५$

$३६ - २५ = ११$

$२५ ÷ ११ = २\frac{३}{११}$ उ०

(१०प्र·) एक वृत्त का व्यासार्द्ध १३ फीट तो बड़े धनुष क्षेत्र का क्षेत्रफल बतलाओ ॥

$\frac{१}{२}$ छोटी चाप की जीवा $\sqrt{\{२६ \times \frac{१}{२}(२६ - \sqrt{२६^2 - १०})^2\}} =$

$= \sqrt{२६} = ५.०९९$ उ०

(११प्र·) एक वर्ग क्षेत्र की भुज ८ है तो उस से चौगुने वर्ग क्षेत्र की भुजा क्या होगी ॥

$८^2 = ६४$

$६४ \times ४ = २५६$

$\sqrt{२५६} = १६$ उ०

(१२प्र०) जिस विषमत्रिभुज की एक भुज २६ और दूसरी ३० है तो शेष तीसरी भुज क्या होगी ॥

$३०^{२} - २६^{२} = २२४$ २२४ ÷ २८ = ८

३० + २६ = ५६ २२४ ÷ ८ = २८ उ०

५६ ÷ २ = २८

(१३प्र०) एक त्रिभुज की एक भुज १३ और दूसरी १५ है तो शेष तीसरी भुज क्या होगी ॥

$१५^{२} - १३^{२} = ५६$ ५६ ÷ १४ = ४

१५ + १३ = २८ ५६ ÷ ४ = १४ उ०

२८ ÷ २ = १४

(१४प्र०) किसी मनुष्य ने कुछ बकरी फ़र्रुख़ाबाद में इस भाव से ख़रीदी ५) रुपये की दर से और ८) रु० की दर से बेची और फ़ी बकरी एक एक रु० खाने में ख़र्च हुआ और वे बेचने के समय उन पर २०) रु० सैकड़ा की दलाली के लगे तो बतलाओ क्या सैकड़ा नफ़ा होगा ॥

५ + १ = ६

$६ : १०० :: ८ : \frac{८००}{६}$

$१२० : \frac{८००}{६} :: १०० : १११-)९\frac{१}{३}$

$१११-)९\frac{१}{३} - १०० = ११-)९\frac{१}{३}$ उ०

(१५प्र०) एक मनुष्य ने ३६) रुपये की किताबें मोल लेकर कुछ रु० सैकड़ा नफ़ा लेकर बेच डालीं और फिर नफ़ा समेत दामों की मोल लेकर ४९) रु० पर बेची तो बतलाओ क्या सैकड़ा नफ़ा लिया होगा ॥

√३६ = ६

√४८ = ७

६ : १०० :: ७ : ७००/६

७००/६ = ११६॥=)८

११६॥=)८ − १०० = १६॥=)८ उ०

(१६प्र०) अ और ब दो आदमियों ने मिलकर एक बाग़ बैलों के चराने को ३०) रु० को मोल लिया और उस में अ ने १० और ब ने १८ बैल छोड़ दिये और छः महीने के बाद उन्होंने आधे २ बांध लिये और क से कहा तू भी अपने १८ बैल छोड़ दे तो साल के अंत में हरएक को क्या २ देना चाहिये ॥

१० + ५ = १५   ६० : १५ :: २० : ५ उ० अ०

१८ + ९ = २७   ६० : २७ :: २० : ९ उ० ब०

१५ + २७ + १८ = ६० बै०   ६० : १८ :: २० : ६ उ० क०

(१७प्र०) १९ के ऐसे दो खंड करो कि एक दूसरे से सात कम हो

१९ + ७ = २६

२६ ÷ २ = १३ उ० प०

१९ − ७ = १२

१२/२ = ६ उ० दूसरा

(१८प्र०) दो राशों का वर्गान्तर ७७ है और अंतर १ है तो वह कौनसी राशें हैं ॥

७७ ÷ १ = ७७   ७७ − १ = ७६

७७ + १ = ७८   ७६ ÷ २ = ३८ उ०

७८ ÷ २ = ३९ उ०

(१९प्र०) किसी त्रिभुज की तीनों भुजों का योग १०० है और एक भुज से १० के तुल्य आधारवडा है और तीसरी भुज ५ के तुल्य आधार छोटा है तो प्रत्येक भुज क्या क्या होगी ॥

१० + ५ = १५   २५ + १० = ३५ उ० दू०

१५ + १० = २५   २५ + १५ = ४० उ० ती०

१०० − २५ = ७५

७५ ÷ ३ = २५ उ० प०

(२०प्र०) एक मनुष्य के पास रुपया अठन्नी चौ० दुअ० इकन्नी सब बराबर थी परन्तु प्रत्येक में दो दो और होते तो ३४।।।=) होते कहो हर एक कितने २ थे ॥

२ रु० + २ अ० + २ चौ० २ दु० + २ इकन्नी = ३।।।=)

३४।।।=) − ३।।।=) = ३१

३।।।=) : ३१ :: २ : १६ प्रत्येक का मान हुआ ॥

(२१प्र०) एक तोपका गोला ५ सेर का तब उस का व्यास ३ है तो जिस तोपमें ४७ $\frac{११}{२७}$ सेरका हो उस का व्यास क्या होगा ॥

५ से० : ४७ $\frac{११}{२७}$ :: $(३)^३$ = २१६ $\sqrt[३]{२१६}$ = ६ उ० व्यास

(२२प्र०) जिस तोप में ४ सेर लोहे का गोला पड़ता है तब उस तोप के मुख का व्यास २ फ़ीट है तो बतलाओ उस तोप के मुख का व्यास क्या होगा जब २।)८ सेर लोहे का गोला पड़े ॥

२।)८ = २ × ४० + २८ से०

२ × ४० + २८ = १०८

$२^{३} = ८$

४ : १०८ :: ८ : २१६

$\sqrt[३]{२१६} = ६$ उ० फी

(२३प्र०) एक मनुष्य ने इस भाव से तरबूज़ मोल लिये कि पहिली बार तो पैसे के तीन तीन और दूसरी बेर चार चार मोल लेकर दो पैसे के सात २ हिसाब कर के सब बेच दिये तो ख़रीद की जमा से ५) रुपये कम हुए तो कहो कितने मोल लिये थे ॥

३ : १ :: १ : $\frac{१}{३}$

४ : १ :: १ : $\frac{१}{४}$

७ : २ :: २ : $\frac{४}{७}$

$\frac{१}{३} + \frac{१}{४} = \frac{७}{१२}$

$\frac{७}{१२} - \frac{४}{७} = \frac{१}{८४}$

$\frac{१}{८४}$: १ :: ५ : ४२०उ०

(२४प्र०) एक मनुष्य ने अपना घोड़ा ८०) रुपय पर बेच दिया तो उस को २५) रुपये सैकड़ा का नफ़ा हुआ कहो वह घोड़ा कितने का था ॥

१०० + २५ = १२५

१२५ : ८० :: १०० : ६४ उ०

(२५प्र०) एक मनुष्य ने ३०) रु० को घोड़ा बेंचने में २०) रु० सैकड़े

का टोटा हुआ तो बतलाओ वह घोडा कितने को ख़रीदा था ॥

१००+२० = १२०

१०० : ३० :: १२० : ३६ उ० रु०

(२६ प्र०) वह कौन सा अंक है जिसे ८ से गुण कर ४ का भाग दें और ६ जोड़ दें तो १६ के तुल्य होती है

१६ − ६ = १० ४० ÷ ८ = ५ उ०

१० × ४ = ४०

(२७ प्र०) वह कौनसी संख्या है जिस में ३ का भाग दें शेष को दो से गुणा करे और ८ घटावे तो शेष १० रहते हैं ॥

१० + ८ = १८ ९ × ३ = २७ उ०

१८ ÷ २ = ९

(२८ प्र०) एक मकान को १२, १८ और २४ गिरह के गज़ से नापा तो पूरा नहीं हुआ तो बतलाओ अब कै गिरह के गज से मापै तो पूरा हो जावे ॥

२	१२	१८	२४
३	६	९	१२
	२	३	४

इसलिये २×३ = ६ उ० गि० के

(२९ प्र०) नरायन और रघुवर वज़ार को गये और वहां जाकर नरायन ने १६ और रघुवर ने १४ नारंगी मोल ली इतने में महेश्वर आगया और तीनों आदिमियों ने बराबर २ खाई और जब महेश्वर चला तो पांच आने दे गया कहो वह दोनों आदमी कितना बांट लेवें ॥

१६ + १४ = ३०

३० ÷ ३ = १०

१६ − १० = ६

१४ − १० = ४

६ + ४ = १०

१० : ६ :: ५ : ३ उ०

१० : ४ :: ५ : २ उ०

(३०प्र) एक मकान में कुछ आदिमी सोते थे और एक आदिमी कहीं से थका हुआ आया और उसने कहा तुम २९ आदिमी हो अगर थोड़ा२ बीच दो तो मेरा काम होजावे उन्हों ने कहा हम २९ तो नहीं हैं जितने हम हैं इन के आधे और चौथाई आवें और एक तूभी आवे तो २९ हो जावें तो कहो कितने आदिमी सोते थे ॥

मानो $१ + \frac{१}{२} + \frac{१}{४} = \frac{७}{४}$

$२९ - १ = २८$

$\frac{७}{४} : १ :: २८ : १६$ उ०

(३१प्र०) १८० बीघे के खेत में ३, ४, ५ के सम्बन्ध से आलू तरबूज औरतमाखू की है तो हर एक में कितनी २ जमीन है ॥

$३ + ४ + ५ = १२$

१२ : ३ :: १८० : ४५ उ० आ०

१२ : ४ :: १८० : ६० उ० त०

१२ : ५ :: १८० : ७५ उ० तमा०

(३२प्र०) ५०० रु० के ४२ लट्ठे ऐसे ख़रीदे जिन में ७ में ३५ सेर बोझ है तो कहो कि १८ लट्ठों की कीमत क्या होगी जब कि १ ल० मे २० सेर बोझ हो ॥

७ लट्ठे : ४२ :: ३५ : २१० से०

१ : १८ :: २० : ३६० से०

२१० : ३६० :: ५०० : $८५७\frac{१}{७}$ उ० रु०

(३३प्र॰) एक कपड़ा का थान है कि उसे फ़ी गज़ ॥≡) आने के हिसाव से वेचने में २५) रु॰ सैकड़ा लाभ हुआ तो ।॥≡) आने गज़ वेचें तो क्या सैकड़ा नफ़ा होगा ॥

११ : १५ :: १२५ : १७०।≡) ३ $\frac{३}{११}$ − १०० = ७०।≡) ३ $\frac{३}{११}$ उ॰

(३४प्र॰) एक मकान में ३ आदमियों के १५ वर्ष में १५६०) इकट्ठे हुए और उन के एक २ वर्ष की कमाई में १ : $\frac{९}{१३}$ और $\frac{८}{२६}$ का संबंध है तो कहो कि प्रत्येक वर्ष में हर एक का कितना धन होगा

१ + $\frac{९}{१३}$ + $\frac{८}{२६}$ = २

२ : २ :: १५६० : ७८०

१५ : १ :: ७८० : ५२ उ॰ प॰   १५ : १ :: २४० : १६ उ॰

२ : $\frac{९}{१३}$ :: १५६० : ५४०

१५ : १ :: ५४० : ३६ उ॰ दू॰

२ : $\frac{८}{२६}$ :: १५६० : २४०

(३५प्र॰) ३० मन मदिरा में १८) रुपये मन की २० मन मदिरा को मिला कर वेंचा तो १८०) रु॰ नफ़ा मिले कहो पहिली मदिरा किस भाव की थी ॥

२० : १ :: १८० : ९

९ + १८ = २७) रु॰ उत्तर

(३६प्र॰) एक लट्ठा १८ फ़ीट चौड़ा है उसे कितना लम्बा काटें कि उस का क्षेत्र फल वरावर उस वर्ग क्षेत्र के जिस की एक भुज २६ हो

$२६^२$ = ६७६   ६७६ ÷ १८ = ३७ $\frac{५}{९}$ उ॰

(३७ प्र०) एक दीवार को ३० आदिमी १८ दिन में पूरा करते हैं तो उसी दीवार को ६०० मनुष्य पूरा करते हैं तो बताओ वह उस समय के कौन से भाग में बनावेंगे ॥

आ०　　म०
३० : ६०० :: १ दि० इस कारण राशें बदल गईं

६००:३०::१ दि : $\frac{१}{२०}$ उ० भाग

(३८ प्र०) २२ कबूतर १६ पैसे को खाते हैं और २५ तोते ९ पैसे को तो १०० तोतों के कितने कबूतर खावेंगे ॥

२५ : १०० :: ९ : $\frac{९००}{२५}$ पै०

१६ : $\frac{९००}{२५}$ :: २२ : ४९ $\frac{१}{२}$ उ० क०

(३९ प्र०) एक बजाजने ६००) रु० का कुछ कपड़ा मोल लिया उस में $\frac{१}{६}$ भाग बिगड़ जाने के कारण उसे ५ आने गज़ बेंच दिया परंतु ६०) रु० टोटा हुए अब कहो बाकी कपड़ा क्या गज़ बेंचे कि खरीद की जमा होजावे ॥

१ : $\frac{१}{६}$ :: ६०० : १००　　　　२०० : ५६० :: ५ : १४ उ० आ०

१०० − ६० = ४०

१०० : ५०० :: ४० : २०० रु०

६०० − ४० = ५६० रु०

(४० प्र०) ४ मर्द और ५ औरत मिल कर एक खेत की घास जो २५ बीघे में थी १ दिन में काटी अगर जो १ औरत ७५ बीघे की घास को २५ दिन काटती है तो २ मर्द उसी खेत की घास को कै दिन में काटेंगे

५ ओ : १ ओ :: २५ दि : ५ दि०

५ : १ :: १ : $\frac{१}{५}$

२५ : ७५ :: १ : ३

३ : १ :: १ : $\frac{१}{३}$

$\frac{१}{३} - \frac{१}{५} = \frac{२}{१५}$ वा $\frac{१५}{२}$

४ : २ :: $\frac{१५}{२}$

१५×४÷२×२ = १५ दि० उ०

(४१ प्र०) आठ सेर गुलाब का शीशा १२ आने को ख़रीदा इसमें कितना पानी मिलावें जो) आने का दो सेर बेंचे और ।) नफ़ा हो

१२ + ५ = १७

१ : १७ :: २ : ३४

३४ − ८ = २६ उ० सेर

(४२ प्र०) एक किताब को भजन ७ दिन में और बिंद्रावन उसे ९ दिन में और नरायन २१ दिन में लिखता है इन तीनों के साथ जब हरप्रसाद मिला तो सारी किताब १ दिन में पूरी हो गई तो कहो अकेला हरप्रसाद कितने दिन में लिख लेगा ॥

७ : १ :: १ : $\frac{१}{७}$

९ : १ :: १ : $\frac{१}{९}$

२१ : १ :: १ : $\frac{१}{२१}$

$\frac{१}{७} + \frac{१}{९} + \frac{१}{२१} = \frac{१९}{६३}$

$\frac{१९}{६३} - १ = \frac{४४}{६३}$

$\frac{४४}{६३}$: १ :: १ : १ $\frac{१९}{४४}$ दि० उ०

(४३ प्र०) १४३५) रु० दो मनुष्यों के रक्खे हुए हैं उनमें से १ आदिमी २ दिन में सात रुपये ख़र्च करता है और दूसरा ३ दिन में १०) रु० ख़र्च करता है तो वुह दोनों मिल कर कितने दिनों ख़र्च कर लेंगे ॥

२ : १ :: ७ : $\frac{७}{२}$

३ : १ :: १० : $\frac{१०}{३}$

$\frac{७}{२} + \frac{१०}{३} = \frac{४१}{६}$

$\frac{४१}{६}$: १४३५ :: १ : २१० उ० दि०

$\frac{१४३५ \times ६}{४१} = २१०$ दि०

(४४ प्र॰) १५ पुरुष या ९ स्त्री एक काम को १२ दिन में करती हैं तो १२ पुरुष और ८ स्त्री कितने दिन में करेंगे ॥

$१५ : १२ :: ९ : \frac{३६}{५}$ $\frac{१५ \times ९ \times ५}{७६} = ८\frac{६७}{७६}$ दि॰

$\frac{३६}{५} + ८ = \frac{७६}{५}$ स्त्री

९ स्त्री : $\frac{७६}{५}$ :: १५ दि॰ : $८\frac{६७}{७६}$ उ॰ दि॰

(४५ प्र॰) किसी घड़ियालिये से पूछा कि क्या बजा है उसने उत्तर दिया कि जितनी देर अभी आधी रात के होने में बाक़ी है उसका पांचवां भाग दो पहर पर बजा है तो कहो क्या बजा था

मानो १ घंटे की देर है तो $\frac{१}{५}$ बजा होगा

$१ + \frac{१}{५} = \frac{६}{५}$

$\frac{६}{५}$: १ :: १२ घं : १० घं॰ बाक़ी हैं

१२ − १० = २ उ॰ घंटा

(४६ प्र॰) मैंने एक घड़ियालिये से पूछा कि अब क्या बजा है उसने उत्तर दिया कि जितना आधी राति पर बजा है उस की तिहाई जोड़ दी जावे तो दोपहर होजावे तो कहो क्या बजा है ॥

मानो १ घं॰ आधी पर बजा + $\frac{१}{३}$ = दो॰

$१ + \frac{१}{३} = \frac{४}{३}$ $\frac{४}{३}$: १ :: १२ घं॰ : ९ उ॰ घं॰

(४७ प्र॰) एक घोड़ा है उस को दो मनुष्य लेने को गये एक आदिमी ने कहा दूसरे से कि अपने रुपये का $\frac{५}{१३}$ भाग दे दो तो मैं घोड़े को लेलूं और दूसरे ने पहिले से कहा कि अपने रुपयों का $\frac{७}{११}$ भाग दे दो तो मैं घोड़ा ख़रीद लूं तो कहो प्रत्येक के पास कितने २ रुपये थे और

घोड़े का मोल क्या होगा ॥

१३ − ५ = ८	८ × ११ = ८८) रु० दू०
११ − ७ = ४	७ × ५ = ३५
४ × १३ = ५२) उ० प०	११ × १३ = १४३
	१४३ − ३५ = १०८ उ० घो० की

(४८ प्र०) किसी जौहरी के हाथ से एक मोतियों की लड़ी टूटी जिस का $\frac{१}{३}$ और $\frac{१}{४}$ भाग धरती पर गिरते ही चूर चूर हो गया और इन दोनों के अंतर का ४ गुना भाग मिट्टी में मिल गया और केवल ५ मोती डोरे में रह गये बतलाओ सब मोती कितने थे ॥

$(\frac{१}{३} - \frac{१}{४}) \times ४ = \frac{१}{३}$ $\qquad$ $\frac{१}{१२} : १ :: ५ : ६०$ उ० मो०

$\frac{१}{३} + \frac{१}{३} + \frac{१}{४} = \frac{११}{१२}$

$१ - \frac{११}{१२} = \frac{१}{१२}$

(४९ प्र०) एक मीनार की दोनों तरफ़ सीढ़ियां इस तरह पर खड़ी कीं कि उन के दोनों सिरे मीनार से ९ और १२ हाथ के अंतर पर हैं परंतु ९ हाथ के अंतर की सीढ़ी और मीनार के अंतर का कल्पित क्षेत्र ५० हाथ है तो कहो दूसरा कल्पित क्षेत्र कितना होगा ॥

६ : ९ :: ५० : ७५ उ० हा०

(५० प्र०) हीरा और बंचे एक खेत की घास को १५ दिन में काटते हैं परन्तु दोनों ने ६ दिन तो काटी बाक़ी को हीरा ने ३० दिन में काटी तो कहो संपूर्ण खेत को अलग अलग के दिन में काटेंगे ॥

१५ दि॰ : ६ दि :: १ : $\frac{२}{५}$ $\frac{३}{५}$ का : १ का :: ३० दि : ५० दि॰ उ॰

१ − $\frac{२}{५}$ = $\frac{३}{५}$ शे॰

१५ दि : १ दि :: १ क : $\frac{१}{१५}$

५० दि : १ :: १ : $\frac{१}{५०}$

$\frac{१}{१५}$ − $\frac{१}{५०}$ = $\frac{७}{१५०}$

$\frac{७}{१५०}$ क : १ का :: १ दि॰ : २१$\frac{३}{७}$ दि॰ उ॰ दू॰

(५१ प्र॰) आगरे और फ़र्रुख़ाबाद में ६० कोस का अंतर है जिस समय हीरा जो फ़ी घंटे में २$\frac{१}{२}$ कोस चलता है आगरे से फ़र्रुख़ाबाद को चला उससे कितनी देर पीछे वेंचलाल जो फ़ी घंटे ३ कोस चलता है फ़र्रुख़ाबाद से आगरे को चला जो दोनों ठीक आधी दूर पर मिले

६० ÷ २ = ३०

२$\frac{१}{२}$ = $\frac{५}{२}$

$\frac{५}{२}$: ३० :: १ : १२ घं॰

३ : ३० :: १ : १० घं॰

१२ − १० = २ उ॰ घं॰

(५२ प्र॰) १५ की तिहाई ७ होते हैं इसी सम्बंध से ४$\frac{१}{५}$ किसके चौथियाई हैं ॥

$\frac{१}{३}$: $\frac{१}{४}$ :: ७ : $\frac{२१}{४}$ $\frac{२१}{४}$: $\frac{२१}{५}$ :: १५ : १२ दि॰ उ॰

(५३ प्र॰) एक आदमी ने कुछ घोड़े मोल लिये पर जितने घोड़े थे उतने ही रु॰ हर घोड़े की कीमत है मोल लिये लेकिन सौदागर ने १५) रु॰ अपनी ओर से फेर दिये तो कहो हर एक घोड़े का मोल क्या होगा जब कि ६५५२१) देने पड़े ॥

६५५२१+१५=६५५३६ $\sqrt{६५५३६}$ = २५६ उ० घो०

(५३ प्र०) बाग़ में आम और नीम और शीशम के पेड़ मिल कर और २ पेड़ सफ़री के होते तो सब पेड़ ४४ होते कहो सब कितने २ थे जब कि आम से आधे नीम के और नीम से आधे शीशम के हैं ॥

४४ − २ = ४२ $\frac{७}{४}$: $\frac{१}{२}$ :: ४२ : १२ उ० नी०

१ + $\frac{१}{२}$ + $\frac{१}{४}$ = $\frac{७}{४}$ $\frac{७}{४}$: $\frac{१}{४}$ :: ४२ : ६ उ० शी०

$\frac{७}{४}$: १ :: ४२ : २४ उ० आ०

(५५ प्र०) एक गेंद का घन फल ६१९६०१ घन इंच है तो उस का व्यास क्या होगा ॥

६१९६०१ ÷ ·५२३६ = ११७६४९ $\sqrt[३]{११७६४९}$ = ४९ इंच उ०

(५६ प्र०) किसी आदिमी ने एक नौकर को इस करार पर रक्खा कि ८०) रु० और १ घोड़ा महीने भर में देंगे उसने २० दिन नौकरी कर ३०) रु० और घोड़ा लेगा कहो घोड़े का मोल क्या होगा ॥

८० − ३० = ५० रु० १० दि : ३० :: ५०) रु० : १५०) रु० उ०

३० − २० = १० दि०

(५७ प्र०) एक मनुष्य अपने नौकर से यह करार किया कि महीने भर में १०) रु० और १ बग्घी देंगे पर वह मनुष्य २३ दिन नौकरी करके और ४) रु० दे कर बग्घी को ले गया कहो बग्घी का मोल क्या है ॥

१० + ४ = १४ रु० ७ दि० : २३ :: १४ रु० : ४६ रु० उ०

३० − २३ = ७ दि०

(५८ प्र०) भजन से पूछा कि तेरी अवस्था क्या है उसने उत्तर दिया कि

अभी मेरी उमर मेरे पिता की उमर का दसवां भाग है पर मुझे जान पड़ता है कि अगर ३ वर्ष मेरी उमर में जोड़ दिये जावें तो पिता की उमर का पांचवां भाग हो जावे तो कहो भजन की उमर क्या होगी

$\frac{१}{१०} - \frac{१}{५} = \frac{१}{१०}$ १ : $\frac{१}{५}$ :: ३० : ६ उन

$\frac{१}{१०}$: १ :: ३ : ३० उ० पि०   ६ − ३ = ३ वर्ष उ० भजन की

(५९ प्र०) एक बनिये के पास ४८) रु० का नाज और २८) रु० जमा है और वह ।=) कमाता और ।।-) आने खर्च करता है तो कहो उस को कितने दिन को होगा ॥

४८ + २८ = ७६   ९ − ६ = ३

७६ × १६ = १२१६   ३ : १२१६ :: १ = $\frac{१२१६ \times १}{३}$ = ४०५$\frac{१}{३}$ उ० दिन

(६० प्र०) ७५ के ऐसे ३ खंड करो कि जिन में १ और ३ और ११ का सम्बन्ध हो ॥

१ + ३ + ११ = १५   १५ : ११ :: ७५ : ५५ उ०

१५ : १ :: ७५ : ५ उ० प०

१५ : ३ :: ७५ : १५ उ० दू०

(६१ प्र०) एक स्थान से एक आदिमी जो एक दिन में ६ मील चलता है पूर्व को गया - दूसरा जो ४ मील चलता है पश्चिम को गया तो कहो इन में ५६० मील का अंतर कितने दिन में होगा

६ + ४ = १०

१० : १ :: ५६० : ५६ दि० उ०

(६२प्र०) ४२० के ऐसे पांच टुकड़े करो जिन के वर्गों का संवन्ध १, ४, ९, १६ और २५ का संवंध हो॥

$\sqrt{१} = १$ १५ : १ :: ४२० : २८ उ०

$\sqrt{४} = २$ १५ : २ :: ४२० : ५६ उ०

$\sqrt{९} = ३$ १५ : ३ :: ४२० : ८४ उ०

$\sqrt{१६} = ४$ १५ : ४ :: ४२० : ११२ उ०

$\sqrt{२५} = ५$ १५ : ५ :: ४२० : १४० उ०

१+२+३+४+५=१५

(६३प्र०) ५० मनुष्यों के लिये ९ महीने को खाना है अब उनमें ३० औरते और आमिली जो तीन औरतें बराबर हैं दो मनुष्यों के तो वह खाना कितने दिन को होगा॥

३ औ : ३० :: २म : २०म

५०+२०=७०

७०म : ५० : ९ मही० $६\frac{३}{७}$ उ०

(६४प्र०) हीरा बेचे मोहन ३ आदिमी हैं जिनमें हीरा और मोहन मिलकर १० दिन में एक खेत को काटते हैं और हीरा और बेचे मिलकर उसी खेत को १५ दिन में काटते हैं और बेचे और मोहन मिलकर २० दिन में काटते हैं तो कहो तीनों मिलकर उस खेत की घास को कितने दिन में काटेंगे॥

१०दि : १दि :: १का० : $\frac{१}{१०}$ $\frac{१}{१०}+\frac{१}{२०}+\frac{१}{१५}=\frac{१३}{६०}$

२०दि : १दि :: १का : $\frac{१}{२०}$ $\frac{१३}{६०}$: १ :: १ : $\frac{६०}{१३}$

१५दि : १दि :: १का : $\frac{१}{१५}$ $\frac{६०}{१३}\times२=\frac{१२०}{१३}$ का $९\frac{३}{१३}$ उ०

(६५प्र०) नरायन रघुवर और मंगली ३ लड़कों को ७७० नीबू इस रीति पर बांटो जो नरायन लेता ४ तो रघुवर लेता ३ और जो नरायन लेता है ६ तो मंगली लेता है ७ तो हर एक को कितने २ देना चाहिये ॥

$६ : ४ :: ७ : ४\frac{२}{३}$

$४\frac{२}{३} + ४ + ३ = \frac{३५}{३}$

$\frac{३५}{३} : ४ :: ७७० : २६४$ उ० न०

$\frac{३५}{३} : ३ :: ७७० : १९८$ उ० र०

$\frac{३५}{३} : ४\frac{२}{३} :: ७७० : ३०८$ उ० मं०

(६६प्र०) एक घोड़ा और साज और इक्का यह तीनों को मिला कर १५०) रु० पर मोल लिया तो कहो प्रत्येक का मोल क्या २ होगा जब कि घोड़े का मोल साज के मोल से दूना है और साज के मोल से ३ गुना इक्के का मोल है मानो साज का मोल १ है तो घोड़े का २ होगा और इक्के का ३ होगा ॥

$१ + २ + ३ = ६$

$६ : १ :: १५० : २५$ उ० सा०

$६ : २ :: १५० : ५०$ उ० घो०

$६ : ३ :: १५० : ७५$ उ० इ०

(६७प्र०) जितनी किताबें भजन ने मोल लीं उनसे १ कम विंद्रावन ने मोल लीं लेकिन एक किताब का मोल =) है परन्तु भजन और विंद्रावन दोनों अपने दामों का वर्ग करते हैं तो उन में ३।) का अंतर पड़ता

है तो कहो प्रत्येकने कितनी २ मोल लीं ॥

३।) = ३६ आने यह वर्गों का अंतर है और राशों का अंतर १ किताब का =) आने हैं इस लिये २ का भाग दिया तो १८ आने दोनों के दामों का योग निकला ॥

१८ + २ = २०　　　　　　१८ − २ = १६

२० ÷ २ = १०　　　　　　१६ ÷ २ = ८

२ : १० :: १ : ५ कि० भ०　　　　　　२ : ८ :: १ : ४ कि० वि०

(६८ प्र०) फ़ी सदी १ वर्ष में ५) रु० व्याज है ३०) रु० का ३ वर्ष में क्या मिश्र धन होगा चक्रवृद्धि से ॥

१०० : १ :: ५ : $\frac{१}{२०}$　　　　　　१ : ३० :: $\frac{९२६१}{८०००}$ = ३४॥≡) $\frac{७२३}{२५}$ उ०

$\frac{१}{२०} + १ = \frac{२१}{२०}$

$\left(\frac{२१}{२०}\right)^३ = \frac{९२६१}{८०००}$

(६९ प्र०) एक मनुष्यने कुछ रु० चक्रवृद्धि से उधार लिया और ३ वर्ष में ५७८॥।−) हिसाब करके देगया तो कहो कितने रुपये लेगया जब कि ५) रु० सैकड़ा व्याज है ॥

१०० : १ :: ५ व्या : $\frac{१}{२०}$

$\frac{१}{२०} + १ = \frac{२१}{२०}$　　　　　　$\frac{९२६१}{८०००}$: ५७८॥।−) :: १ : ५०० उ० रु०

$\left(\frac{२१}{२०}\right)^३ = \frac{९२६१}{८०००}$

(७० प्र) एक मनुष्य अपने व्योहरे से कुछ रुपया उधार इस करार पर ले गया कि मैं अपनी दूकान में से २ वर्ष में चुकादूंगा पर उस

व्यौहरे ने यह कह दिया कि मैं व्याज पर व्याज लूंगा तो कहो यह २६०१)
रु० देगाया जव कि २) रु० सैकड़े का सूद है तो कहो कितने रु० लेगया होगा

१०० : १ :: २ : $\frac{१}{५०}$ $\frac{२६०१}{२५००}$: २६०१ :: १ : २५०० उ०

$\frac{१}{५०}$ + १ = $\frac{५१}{५०}$

$(\frac{५१}{५०})^२ = \frac{२६०१}{२५००}$

(७१प्र) एक आदमी ५०) रु० चक्रवृद्धि के करार पर कुछ दिनों को ले गया और व्याज फ़ी सदी कुछ ठहरा गया पर जव नियत काल यानी २ वर्ष के वाद ५४-) ३$\frac{५}{२५}$ दे गया तो वतलाओ क्या सैकड़ा व्याज ठहरा गया था ॥

५० : १ :: ५४-)३$\frac{५}{२५}$: $\frac{२६}{२५}$

$\frac{२६}{२५}$ - १ = $\frac{१}{२५}$

$\frac{१}{२५}$ १ : १०० :: $\frac{१}{२५}$: ४) रु० पा०

(७२प्र०) एक मनुष्य यात्रा को अपने घर से कुछ रुपये का धन ले कर चला जव वह प्रयाग में पहुंचा तो उसने अपने धन का $\frac{१}{२}$ भाग पुण्य किया और मथुरा में आकर शेष का $\frac{१}{४}$ भाग पुण्य किया और ३५) रु० की चोरी होगई तव उसने देखा कि मेरे पास क्या वचा तो मालूम हुआ कि संपूर्ण का $\frac{१}{१६}$ भाग है

१ - $\frac{१}{२}$ = $\frac{१}{२}$ $\frac{५}{१६}$: १ :: ३५ : ११२) रु० उ०

$\frac{१}{२}$ × $\frac{१}{४}$ = $\frac{१}{८}$

$\frac{१}{२}$ + $\frac{१}{८}$ + $\frac{१}{१६}$ = $\frac{११}{१६}$

१ - $\frac{११}{१६}$ = $\frac{५}{१६}$

(७३प्र०) एक मदर्से में जव छुट्टी मिली तव मैंने देखा कि विंद्रावन अपने ५० कदम भजन से आगे निकलगया और भजन उस के पकड़ने को दौड़ा और विंद्रावन उस को देखकर भागा लेकिन जितने समय में विंद्रावन ४

कदम धरता उतने ही समय में भजन ३ कदम पर भजन की ५ कदम विंद्रावन की ६ कदम के बराबर है तो कहो भजन अपनी के कदमों में विंद्रावन को पकड़लेगा ॥

३ क०भ० : ५क०भ० :: ४क०विं : $\frac{२०}{३}$ क०विं

$\frac{२०}{३}$ − ६ = $\frac{२}{३}$ इतना भजन जियाद: चला विंद्रावन से

$\frac{२}{३}$: ५० :: ५ क०भ० : ३७५ क०उ०

(७४प्र०) एक हिरन शिकारी कुत्ते से अपने १०० कदम आगे खड़ा था कुत्ते को देख कर हिरन इस रीति पर भागा कि जितनी देर में कुत्ता दो चौकड़ी भरता उतनी ही देर में हिर ५ चौकड़ी भरता पर कुत्ते की ६ बराबर हैं हिरन की १० के तो कहो कुत्ता हिरन को अपनी कै चौकड़ी में पकड़ेगा

२कु०क० : ६कु :: ५हि०क : १५हि०क

१५ − १० = ५ इतना जियाद: कुत्ता चला हिरन से

५ : १०० :: ६ : १२० उत्तर

(७५प्र०) एक सौदागर ने दो घोड़े ऐसे मोल लिये कि एक का मोल दूसरे से ४ गुना है पर दूसरे घोड़े पर १२) रु० का जीन रख दिया जावे तो दूसरे के मोल से पहिले का मोल दूना ही रह गया कहो प्रत्येक का मोल क्या होगा ॥

मानो पहिले का मोल १ है तो दूसरे का $\frac{१}{४}$ होगा ॥

$\frac{१}{२}$ − $\frac{१}{४}$ = $\frac{१}{४}$

$\frac{१}{४}$: १ :: १२ : ४८ उ०प०

१ : $\frac{१}{४}$ :: ४८ : १२ उ० दू०

(७६प्र०) एक मनुष्य ने कुछ भाव की जिन्स मोल लेकर १६ सेर के भाव

से बेचनेमें ११२५) रु० उठे और जब उसने देखा कि मुझे क्या नफ़ा हुआ तो जान पड़ा कि मेरी असल क़ीमत का सवाया हुआ है ॥

१रु : ११२५ :: १६ : १८००० से०

$१\frac{१}{४} = \frac{५}{४}$

$\frac{५}{४}$: १ :: ११२५ : ९०० रु० की मोल लीथी

९०० : १ :: १८००० : २० से० उ०

(७७ प्र०) १५ हाथ लंबे और १० हाथ चौडे में क्या ख़र्च पडेगा जबकि १ हाथ लंबे और १ हा० चौ० ≡) ख़र्च पडते हैं ॥

१५ × १० = १५० व० हा०
१ × १ = १ व० हा०

१ व० ह० . १५० व :: ३
१५० × ३ = ४५० आन
४५० ÷ १६ = २८ ≡) उ०

(७८ प्र०) एक जगह से दो मनुष्य कहीं को चले उस में से एक उत्तर को दूसरा पूर्व को इस प्रकार चले कि पहिला फ़ी घंटे ४ मील और दूसरा फ़ी घंटे ५ मील चलता है पर पहिला आदमी बीमार होजाने के कारण कम चला इस कारण ३ घंटे में १७ मील का अंतर हो गया कहो पहिले की चाल क्या होगी ॥

$(१७)^२ = २८९$
$(१५)^२ = २२५$

२८९ − २२५ = ६४
$\sqrt{६४} = ८$
$८ \div ३ = २\frac{३}{८}$ उ० मील

(७९ प्र०) ६३०० आदमियों की ऐसी ४ पलटन बनाओ जो पहिली और दूसरी में २ : ३ और दूसरी और तीसरी में ४ : ५ और तीसरी और चौथी में ६ : ७ का संबन्ध हो ॥

मानो १ $\frac{३}{२}$ $\frac{२५}{८}$ $\frac{३५}{१६}$ यह हिस्से सद के निकले

$१+\frac{३}{२}+\frac{२५}{८}+\frac{३५}{१६}=\frac{१०५}{१६}$

$\frac{१०५}{१६}$: १ :: ६३०० : ९६० उ० प०

$\frac{१०५}{१६}$: $\frac{३}{२}$ :: ६३०० : १४४० उ० दू०

$\frac{१०५}{१६}$: $\frac{२५}{८}$ :: ६३०० : १८०० उ० ती०

$\frac{१०५}{१६}$: $\frac{३५}{१६}$ :: ६३०० : २१०० उ० चौ०

(८०प्र०) एक वर्ग क्षेत्र की एक भुजा ८ गज है तो उस से चारगुना क्षेत्र हो उस की एक भुजा क्या होगी ॥ $(८)^२=६४$ यह क्षेत्र फल ऊआ

$६४\times४=२५६$ $\sqrt{२५६}=१६$ यह भुज ऊई

(८१प्र०) एक मनुष्य ने १२००) रु० लगा कर एक दूकान की परन्तु ३ महीने में इस ने ६००) रु० निकाल कर दूसरा साझी किया और उस ने अपने ९००) रु० लगाये और वर्ष दिन के अंतर में १८०) रु० नफ़ा ऊए तो कहो प्रत्येक को क्या मिला ॥

१२०० + ६०० = १८०० २७०० : १८०० :: १८० : १२० उ०

९०० + १८०० = २७०० २७०० : ९०० :: १८० : ६० उ०

(८२प्र०) एक होज़ में अ ब क मोरी हैं जिन में से अ १० दिन में और ब १२ दिन में और क १५ दिन में भरती है तो सब मिल के कितने दिनों में भरेंगी ॥

१० : १ :: १ : $\frac{१}{१०}$ $\frac{१}{१०}+\frac{१}{१२}+\frac{१}{१५}=\frac{१५}{६०}$

१२ : १ :: १ : $\frac{१}{१२}$ $\frac{१५}{६०}$: १ :: १ : ४ दि० उ०

१५ : १ :: १ $\frac{१}{१५}$

(८३प्र०) एक लोहे के पीपे का वहिर्व्यास बारह सही एक बटे दो है

और लोहे का दल $\frac{७}{८}$ इंच तो कहो ऐसे गजभर लंबे पीपे में कितना लोहा है

अंत व्यास १० $\frac{३}{४}$ इंच है

इसलिये $\{(१२\frac{१}{२})^२ - (१०\frac{३}{४})^२\} \times .७८५४ \times ३६ = ११५०.४१४$ घन इंच

(८४प्र०) एक वृत्त का क्षेत्र फल ९६१ है तो उस का व्यास क्या होगा ॥

व्यास$^२ \times .७८५४ = ९६१ \therefore \sqrt{(९६१ \div .७८५४)} = ३४.९८$ उ०

(८५प्र०) पृथ्वी के वृत्तार्द्ध टुकड़े का जो एक एकड़ है उस का व्यास क्या होगा

व्यास$^२ \times .७८५४ = ($४८४० वर्ग गज के)

$\sqrt{(४८४० \div .७८५४)} = \sqrt{६१६२.४८} = ७८.५$ गज़ उ०

(८६प्र०) एक घन आयत क्षेत्र की चौ० १५ है तो उस के सजातीय दूसरे घन आयत की चौ० उस से दूनी हो तो क्या होगी ॥

$\sqrt[३]{१} : \sqrt[३]{२} :: १५ : १.२६ \times १५ = १९.९$ उ०

(८७प्र०) किसी त्रिभुज की ३ भुजों का योग १०० है परन्तु एक भुज से १० के तुल्य वड़ा है और ३ भुज से ५ के तुल्य कम है तो प्रत्येक भुज क्या २ होगी ॥

$१० + १५ = २५$ $२५ + १० = ३५$ उ० दू०

$१०० - २५ = ७५$ $२५ + १५ = ४०$ उ० ती०

$७५ \div ३ = २५$ उ० प०

(८८प्र०) एक यष्टि ४$\frac{१}{२}$ फ़ी० लंबी और उस का आधार १ फीट ९ इंच है तो उस का घन फल क्या होगा ॥

$(१.७५$ फी$)^२ \times .७८५४ = २.४०५३$

$(२.४०५३) \times ४\frac{१}{२} = १०.८२३$ घन फीट उ०

(८९प्र०) एक छिन्न शिखा वृत्त सूची के ऊपर का व्यास १ फ़ुट और

नीचे का व्यास २फ़ीट है और उंचाई १० फ़ीट है तो उस का घनफल क्या है

$(१^२ + २^२ + १ \times २) \times .७८५४ = ५.४९७८$

$५.४९७८ \div ३ \times १० = १८.३२६$ घन फ़ुट हुए उ०

(९० प्र०) एक छिन्न शिखा वृत्त सूची के आधार ५३ और इंच है और उस की उंचाई ६ इंच है तो उस का घनफल क्या है ॥

$(५३^२ + ६०^२ + ५३ \times ६०) \times .७८५४ \times २$ इंच $\div १७२८ = ९.८६$ घनफ़ीट उत्तर

(९१ प्र०) एक मनुष्य ने अपने धन का $\frac{१}{३}$ और १० रु० ख़र्च किये और फिर संपूर्ण का $\frac{१}{४}$ भाग ख़र्च किया और उस के पास शेष दस रु० रहे कहो सर्व धन क्या था ॥

$\frac{१}{३} + \frac{१}{४} = \frac{७}{१२}$ $\qquad$ $\frac{५}{१२} : १ :: २० : ४८$ उ०

$१ - \frac{७}{१२} = \frac{५}{१२}$

$१० + १० = २०$

(९२ प्र०) कोई वस्तु ३५०) रु० को आती हो तो २१०) रु० को उसवस्तु का कौनसा भाग आवेगा ॥

$३५० : २१० :: १ : \frac{३}{५}$ उ०

(९३ प्र०) वह कौन सा अंक है जिसे ८ से गुणा करें और ९ का भाग दे ३ घटा दें तो ६ शेष रहते हैं ॥

$६ + ३ = ९$

$९ \times ९ = ८१$

$८१ \div ८ = \frac{८१}{८}$

(९४ प्र०) वह कौन सी राशि है जिस में ३ का भाग दे ३ जोड़ दें और २ से गु० करें और $\frac{१}{३}$ घटावें तो शेष ६ बचते हैं तो वह कौन राशि है ॥

$६ + \frac{२}{३} = \frac{२०}{३}$ $\frac{२०}{३} - ३ = \frac{१}{३}$

$\frac{२०}{३} \div २ = \frac{१०}{३}$ $\frac{१}{३} \times ३ = १७०$

दोहा

(९५प्र०) काल फल को गुणा करि तामें एक मिलाइ ॥
गुणा जो कीजे मूल सों सही मिश्र होजाइ ॥ १

(९६प्र०) काल फल को गुणा करि तामें एक मिलाइ ॥
भाग जो देवै मिश्र में सही मूल मिलिजाइ ॥ २

(९७प्र०) मूल घटावो मिश्र में शेष वचे धरि लेउ ॥
मूल गुणित फल भाग दे लब्धि काल कहि लेउ ॥ ३

(९८प्र०) मूल घटादो मिश्र में शेष वचे धरिलेउ ॥
मूल काल गुणि भाग दे लब्धि मिले फल लेउ ॥ ४

इति

सूत्र १

त्रिभुज में भुजा लंब क्षेत्र फल इनमें से एक का मान जान कर प्रत्येक का प्रमाण जानने के लिये रीति लिखी जाती है उस के करने से प्रत्येक का मान मिलेगा जैसा (अ इ उ) त्रिभुज और (अ क) लंब देखो ॥

(१) लं० = भु × ·८६६

(२) क्षे० = भु^{2} × ·४३३

(३) भु० = लं × १·१५४७५

(४) क्षे० = लं × ·५७७३७

(५) भु^{2} = क्षे × २·३०९

(६) लं^{2} = क्षे × १·७३२
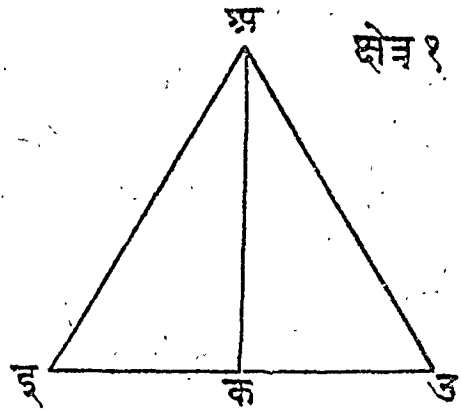
(१प्र०) त्रिभुज की प्रत्येक भुजा दस २ है तो लंब और क्षेत्र क्या होगा ॥

उत्तर ८·६६ लंब और ४३·३ क्षेत्रफल

(२प्र०) जिस त्रिभुज का क्षेत्र फल १०·८३ है तो उस में भुजा लम्ब क्या होगा ॥ उत्तर ५ भुज और ४·३३ लंब

(सू०२) समत्रिबाहु त्रिभुज के अंतरगत जो समत्रिबाहु त्रिभुज बने उस की भुजा उपरिस्थ त्रिभुज की भुजा लम्ब क्षेत्र फल से लाने की रीति कोष्ट में नीचे लिखते हैं उस की आकृति (अ इ उ) उपरिस्थ त्रिभुज में (क ग च) अंतर्गत त्रिभुज की भुजा के स्थान में केवल (अ) वर्ण लिखते हैं ॥

(१) अ = भु × ·५

(२) भु = अ × २

(३) अ = लं × ·५७७३

(४) लं = अ × १·७३२

(५) अ^{2} = क्षे × ·५७७३

(६) क्षे = अ^{2} × १·७३२
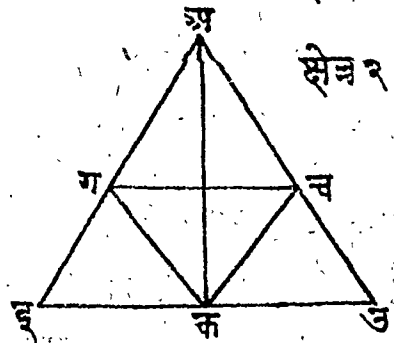
(१प्र०) अंतर्गत त्रिभुज की भुजा पांच २ हैं तो उपरिस्थ त्रिभुज में लंव भु-
जा और क्षेत्र फल क्या होगा॥ उत्तर ८·६६ लं० १० भु० ४३·३ क्षे० फल

(२प्र०) उपरिस्थ त्रिभुज का लंव १० है तो अंतर्गत त्रिभुज की भुजा लाओ
उत्तर ११·५४६

(३प्र०) उपरिस्थ त्रिभुज की भुजा ३७ है तो अंतर्गत त्रिभुज की भुजा क्या हो
गी॥ उत्तर १८·५

(सू०३) उपरिस्थ त्रिभुज की भुज लंव क्षेत्र फल जान कर अंतर्गत त्रिभुज का
क्षेत्र फल नीचे की रीतों से मिलेगा अंतर्गत त्रिभुज के क्षेत्र फल के स्थान में
केवल (फ) लिखेंगे उस की आकृति दूसरे क्षेत्र मे देखो॥ रीति॥

(१) फ = भु^{2} × ·१०८३ (४) लं^{2} = फ × ६·९२८

(२) भु^{2} = फ × ९·२३६ (५) फ = क्षे × ·२५

(३) फ = लं^{2} × ·१४४३४ (६) क्षे = फ × ६

(१प्र०) उपरिस्थ त्रिभुज की भुजा २० है तो अंतर्गत त्रिभुज का क्षेत्र फल
क्या होगा॥ उत्तर ४३·३

(२प्र०) उपरिस्थ त्रिभुज का लम्ब १० अंतर्गत त्रिभुज का फल क्या होगा
उत्तर १४·४२४

(३प्र०) उपरिस्थ त्रिभुज का क्षेत्रफल ४९ है तो अंतर्गत का क्या होगा॥
उत्तर १२·२५

(४प्र०) अंतर्गत त्रिभुज का क्षेत्र फल १०·८३ है तो उपरिस्थ त्रिभुज का भु
ज लंव क्षेत्रफल क्या होगा॥ उत्तर १० भु० ८·६६ लं० ४३·३ क्षे०

(सू०४) त्रिभुज के अंतर्गत वर्गक्षेत्र वने उस की भुजा लेआओ त्रिभुज के
भुज लंव क्षेत्रफल लाने की नीचे रीति देखो (अइउ) त्रिभुज और

(अ क) लंब और (ग च त न) वर्ग क्षेत्र इस चतुर्भुज की प्रत्येक भुज समान होती हैं इस कारण वर्ग क्षेत्र की भुजा के स्थान में (व) वर्ण केवल लिखते हैं॥

(१) व = भु × ·४६४

(२) व = लं × ·५३५९९

(३) व² = क्षे × ·४९७४
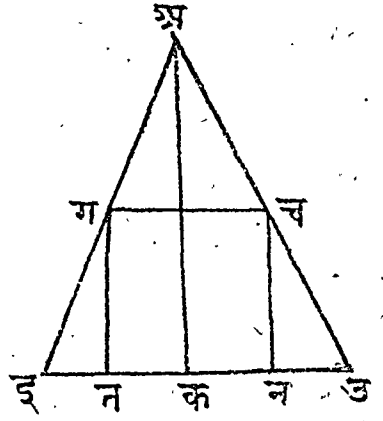
(४) भु = व × २·१५४७३

(५) लं = व × १·८६५८

(६) क्षे = व² × २·०१०४६

(१प्र·) त्रिभुज की भुजा ४० है तो उस के अंतर्गत वर्गक्षेत्र की भुज क्या होगी॥ उत्तर १८·५६

(२प्र·) त्रिभुज का लंब २० है तो अंतर्गत वर्ग क्षेत्र की भुजा क्या होगी
उत्तर १०·७१९८

(३प्र·) समत्रिबाहु त्रिभुज के अंतर्गत वर्गक्षेत्र की भुजा १० है तो त्रिभुज की भुज लंब और क्षेत्र फल क्या होगा॥

उत्तर २१·५४७३ भु० १८·६५८ लं० २०१·०४६ क्षे०

(सू·५) त्रिभुज के अंतर्गत वृत्त हो उस की त्रिज्या क्या होगी जब त्रिभुज का लंब भुज क्षेत्र फल जान कर उस की आकृति नीचे लिखी है॥

(अ इ उ) त्रिभुज (अ क) लंब (क ग च) वृत्त और (त क) (त च) (त ग) त्रिज्या हैं और रूप नीचे लिखा है॥

(१) त्रिज्या = भु × ·२८८७

(२) त्रि = लं × ·३३३

(३) त्रि^{२} = क्षे × ·१९२५

(४) भु = त्रि × ३·४६२८

(५) लं = त्रि × ३

(६) क्षे = त्रि^{२} × ५·१९४५
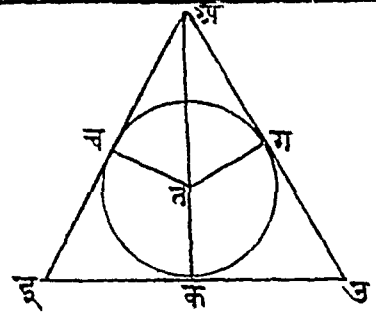
(प्र·१) यथा लंब ५७ है तो त्रिज्या क्या होगी ॥

उत्तर १९

(प्र·२) जिस त्रिभुज की भुजा ६० है तो अंतर्गत वृत्त की त्रिज्या क्या होगी ॥ उत्तर १७·३२२

(प्र·३) क्षेत्रफल त्रिभुज का १०० है तो उस वृत्त की त्रिज्या क्या होगी ॥ उत्तर ७·०५

(प्र·४) तथा त्रिज्या २० है तो भुज लंब क्षेत्रफल क्या होगा ॥

उत्तर ६९·३७६ भु० ६०२० लं० ७९·७४ क्षेत्रफल

अर्द्धवृत्त के अंतर्गत वर्गक्षेत्र की भुजा लाने की रीति

त्रिज्या के वर्ग को $\frac{४}{५}$ गुणा करो उस का मूल लो वही भुज होगी ॥

(१ प्र·) जिस अर्ध वृत्त क्षेत्र का व्यास १० इंच है तो उस के अंतर्गत वगक्षेत्र की भुज क्या होगी ॥

उत्तर ४·४ इंच

सम कोण त्रिभुज में भुज कोटि का योग और क्षेत्र फल जान कर भुज कोटि के लाने की रीति ॥

योग के वर्ग में क्षेत्र फल को आठ गुणा करो उस को घटाओ और

बाकी का मूल लो वही कोटि और भुज का अंतर होगा उस को जोड़ कर और घटा कर आधा करने से भुज कोटि होगी ॥

(१प्र०) भुज कोटि का योग १०२ है और क्षेत्र फल १०८० है तो भुज कोटि को जुदा कहो ॥

उत्तर ७२ भु० ३० को०

सम कोण त्रिभुज की तीनों भुजों का योग और क्षेत्र फल जान कर प्रत्येक भुज के लाने की रीति

क्षेत्रफल के चौगुने में तीनों भुजों के योग का भाग दे जो लब्धि मिले उस को तीनों भुजों के योग में जोड़ो और आधा करो तो वह भुज कोटि का योग होगा फिर पूर्वोक्त रीति से भुज कोटि कर्ण लाओ

जैसा

(१प्र०) समकोण त्रिभुज की तीनों भुजों का योग ४० है और क्षेत्र ६० है तो प्रत्येक भुज क्या २ होगी ॥

उत्तर १५ भु० ८ को० १७ कर्ण

इति

पुजारी शोभारामेण लिखितम्

रसराज

जिसमें

दोहे और कवित्त आदि सुललित छन्दों
में नायका भेद वर्णन है
जिसको
स्वस्ति श्री गुणि गण मण्डली मण्डन महा महो पा-
ध्याय श्री कवि मतिराम जी ने रसिक जनों के मनो
रञ्जनार्थ वर्णन किया है

लखनऊ
मुन्शी नवल किशोर के छापे खाने में छापागया
जुलाई सन् १८८० ई०

श्री गणेशाय नमः

अथ रस राज प्रारम्भः

कवित्त

ध्यावैं सुरा सुर सिद्ध समाज महेशहिं आदि महा मुनि ज्ञानी जोग में यंत्र में मंत्र में तंत्र में गावैं सदा श्रुति शेष भवानी। संकट भञ्जन आनन की दुति सुन्दर रंड उदंड सो जानी। ध्याय सदा पद पंकज को मति राम तबै रस राज बखानी। दोहा। श्री गुरु चरण मनाइ के गणपति को उर ध्याइ रसिक हेत रसराज किय सुकविन को सुखदाइ। २। प्रार्थना दोहा। कवित्तार्थ जानो नहीं कछुक भयो संबोध। भूल्यो भ्रमते जो कछुक सुकवि पढ़ेंगे सोध ॥ ३॥ बरनि नायका नायकनि रच्यौ ग्रन्थ मतिराम। लीला राधा रवन की सुन्दर परम अभिराम। ४। दोहा। होत नायका नायकहिं आलंबित शृंगार। ताते बरनौ नायका नायक मति अनुसार। ५। उपजत जाहि बिलोकि के चित्त बीच रस भाव। ताहि बखानत नायका जे प्रवीन कविराव। ६। उदाहरण कवित्त। कुन्दन को रंग फीको लगै झलकै अति अंगन चारु गुराई। आँखिन में अलसानि चितौनि में मंजु बिलासन की सरसाई। को बिन मोल बिकात नहीं मतिराम लहे मुसकान मिठाई। ज्यों ज्यों निहारिये नेरे ह्वै नैननि त्यों त्यों खरी निकरैसी निकाई। दोहा। जाल रंध्र मग ह्वै कढ़े तिय तन दीपति पुंज। झिंझिया कैसो घर भयो दिन हीसें बन कंज। ८। कही ना-

नई यह बात नहांई। एकहि भौन दुरे इक संग ही अंग सो अंग
छुवायो कन्हाई। कंप छुट्यो घन स्वेद बढ्यो तन रोम उठ्यो अँ
खियां भरि आई। १९। दोहा। लाल निहारे संग में खेलैं खेल बढ़ाइ
मूंदत मेरे नैन हो करन कपूर लगाइ। २०। ज्ञात यौवना लक्षण।
।दोहा। निज तन यौवन आगमन जानि परति है जाहि। कवि
कोविद सब कहत हैं ज्ञात यौवना ताहि। २१। उदाहरण कवित्त।
कानन लों लागे मुसकान प्रेम पागे लोने लाल भे लागे लोचन
अनङ्ग तें। आरु धरि भुजनि डुलावति चलति मन्द औरें ओप
उलहत उरज उतंग तें। मतिराम यौवन पवन की झकोर आय ढ्
ह्के सरस रस तरल तरंग तें। पाविय बिमल की झलक झलक
न लागी काई सी गई है लरकाई कढ़ि अङ्ग तें। २२। दोहा। इते
उते सचकित चितै चलत डुलावत बांह। दीठ बचाइ सखिन।
की छनकु निहारति छांह। २३। अथ नवोढ़ा लक्षण। दोहा।
मुग्धा जाहि भय लाज युत रति न चहै पति संग। ताहि नवोढ़ा
कहत हैं जे प्रवीन रस रंग। २४। उदाहरण कवित्त। साथ सखी
के नई दुलही को भयो हरि को हियो हेर हिमञ्चल। आय गये
मतिराम तहां घर जानि इकंत अनन्द सों चंचल। देखत ही नं
दलाल को बाल के पूरि रहे असुवानि दृगंचल। बात कही न
गई सुरही गहि हाथ दुहों सों सहेली को अंचल। २५। दोहा।
ज्यों ज्यों परसे लाल तन त्यों त्यों राखे गोइ। नवल बधू डर लाज
तें इन्द्र बधू सी होइ। २६। अथ बिश्रब्ध नवोढ़ा लक्षण। दोहा।
होय नवोढ़ा के कछुक प्रीतम सों परतीति। सो बिश्रब्ध नवो
ढ़ सों बरनत कवि रस रीति। २७। उदाहरण कवित्त। केलि के
राति अघाने नहीं दिन हीमें लला पुनि घात लगाई। प्यास

लगी कोउ पानी दै जाउ यों भीतर बैठि कै बात सुनाई। जिठानी प-ठाय गई दुलही हँसि हेरै हरैं मतिराम बुलाई। कान्ह के बोल में कान न दीन्हों सुगेह के देहरी में धरि आई। २८। दोहा। प्रीतम। तुम्हरी सेज पर हौं आवत नन्द लाल। दया गहौ बानन कहौं दु-ख न दीजिये लाल। २९। अथ मध्या लक्षण दोहा। जाके नैन में होत है लाज मनोज समान। तासों मध्या कहत हैं कवि मति रा-म सुजान। ३०। उदाहरण कवित्त। चित में विलोकत हीं लाल को बदन बाल जीते जेहि कोटि चन्द सरद पुनीन के। मुसक्यान अमोल कपोलनि के रुचि वृन्द चमकें तरुनानि के रुचिर चु-नीन के। प्रीतम निहाऱ्यो वाहन हन श्रवान कही जामें मति राम मन सकल मुनीन के। गाढ़े गही लाज मैन कण्ठ ह्वै फि-रत बैन मूल ह्वै फिरत नैन वारि बरुनीन के। ३१। दोहा। केलि भौन के देहरी खड़ी बाल छबि नोल। काम कलित हि-य को लहै लाज ललित दृग कोल। ३२। अथ प्रौढ़ा लक्षण। दोहा। निज पति सों रति केलि की सकल कलानि प्रवीन। तासों प्रौढ़ा कहत हैं जे कवित्त रस लीन। ३३। उदाहरण। कवित्त। प्राण प्रिया मन भावन संग अनंग तरंगनि रंग प-सारे। सारी निसा मति राम मनोहर केलि के पुंज हजार उ-घारे। होत प्रभात चल्यौ चहै प्रीतम सुन्दरि के हिय में दु-ख भारे। चन्दसों आनन दीप सी दीपति श्याम सरोज से नैन निहारे। ३४। दोहा। लपटानी अति प्रेम सों दै उर उरज उतंग। घरी एकली छुटे पर रही लगीसी अंग॥ अ-थ धीरा भेद लक्षण। दोहा। मध्या प्रौढ़ा मान में तीन भाँति पुनि जानि। धीरा बहुरि अधीर तिय धीरा धीरा मानि। ३६।

अथ मध्या धीरा लक्षण। दोहा। वचनन की रचनानि सों पियहि जनावै कोप। मध्या धीरा कहत हैं ताहि सुमति रस चोप। ३७।

उदाहरण कवित्त। तुम कहा करो कहूं काम तें अटकि परे तुम्हें कौन दोष सो तो आपने यो भाग हैं। आये मेरे भौन वडे। भोर उठि प्यार हीलें अति हर बरन बनाय बाँधी पाग हैं। मेरे-ही वियोग रहे जागि सकल राति गात अलसात सोऊ परम सुहाग हैं। मनहूं की जानी प्राण प्यारे मतिराम इह नैन कहीं नाहिं पायपतु अनुराग हैं। ३८। दोहा। अजौ उड़ावत है नहीं पीर न होत सभाग। ठौर ठौर या भौंर के डसे अधर दल लाग। ३९। अथ मध्या अधीरा लक्षण। दोहा। मध्या कहिय अधीर तिय बोलै बोल कठोर। पियहि जनावै कोप यों कहत कवि सिर मौर। ४०। उदाहरण कवित्त। कोऊ नहीं बरजै मतिराम रहौ तितही जितही मन भायो। काहे को सौहें हजार करौ तुम तो कबहूं अपराध न ठायो। सोवन दीजै हमैं दुख यों हीं कहा रस बाद बढ़ायो। मान रह्यौ इन हीं मन मोहन मानिनी होइ सो मान मनायो। ४१। दोहा। लाल पीठि नख बुन भुजन उर कुच कुंकुम छाप। लित नाव मन भावने जिते बिकाने आप। ४२। अथ मध्या धीरा धीर लक्षण। दोहा। मध्या धीराधीर तिय ताहि कहत सब कोय। पिय सों कहि कै बचन कछु रोस जनावै रोय। ४३। उदाहरण कवित्त। आजु कहा तजि बैठी हो भूषण ऐसे हीं अंग कछूक रसीलो। बोलन बोल रुखाइ लिये मतिराम सुने मैं सनेह रसीलो। क्यों न कहौ दुख प्राण प्रिया अंसुवानि रहे भरि नैन लजीलो। कौन तुम्हें दुख

रे जिन के तुम से मन भावन छैल छबीलो । ४४। दोहा । तुम सों कीजे मान क्यों वह नायक मन रञ्ज । बात कहत यों बोलके भरि आए दृग कञ्ज । ४५। अथ प्रौढ़ा धीरा लक्षण ।

। दोहा । पिय सों प्रगटन रिस करे रति तें रहे उदास । प्रौढ़ा धीरा जानिये सो निज सुमति बिलास । ४६ । उदाहरण ।

। कवित्त । वैसे ही चितै के मेरे चित्त को चुरावति हो बोलति हो वैसे ही मधुर मृदु बानि सों । कवि मति राम अङ्कभरित मयंक मुखी वैसे ही रहति गहि भुज छोंति कान सों । चूमति कपोल पान करत अधर रस वैसे ही निहारी रीति सकल सलानि सों । कहा चतुराई ठानियत प्राण प्यारी तेरे मान जानियत रूखी मुख मुसक्यानि सों । ४७। दोहा । डोली बाहन सों मिली बोली कछून बोल । सुन्दरि मान जनाइहै लियो प्राण प्रति मोल । ४८ । अथ प्रौढ़ा अधीरा लक्षण

दोहा । डरदेके पिय को प्रिया देय सुमन की मार । प्रौढ़ अधीरा कहत हैं ताहि सुकवि मति चारु । ४९ । उदाहरण । कवित्त । जाके अंग अंग की निकाई निरखत आली वारने अनंग की निकाई कीजियतु है । कवि मति राम जाकी चाह ब्रजनारिन को देह अँसुवान के प्रवाह भीजियतु है । जाके बिनु देखे न परत कल तुमहू को जाके बैन सुनत सुधा सों पीजियतु है । ऐसे सुकुमार पिय नन्द के कुमार को यों फूलनि की मालनि की मार दीजियतु है । ५० । दोहा । जहां जहां सखि देत तू फूल माल की मारु । तहां तहां नंदलाल के उठे रोम तन चारु । ५१ । अथ प्रौढ़ा धीरा धीर लक्षण । दोहा । रति उदास है नाह को डरु दिखरावे बाम । प्रौढ़ा धीरा धीर तिय बरनत कवि मति राम

।५३। उदाहरण कवित्त। पीतम आये प्रभात प्रिया कहौं राति रमे। रति चिन्ह लिये हीं। बैठि रही पलंगा पर सुन्दरि नैन नवाइ के धीर। धरे हीं। बांह गहे मतिराम कहे न रही रिस मानिनि के हद केहीं। बोली नवेल कछू सतराय पै भौंहैं चढ़ाय नकी तिरछौहीं। ५३। दोहा। आनन उठि आदर कियो बोले बोल रसाल। बांह गहत नन्दलाल के भये याल दृग लाल। ५४। अथ ज्येष्ठा कनिष्ठा लक्षण। दोहा। बरनन ज्येष्ठ कनिष्ठिका यह है ब्याही नारि। प्रथम पियारी दूसरी घटि प्यारी निरधारि। ५५। उदाहरण कवित्त। बैठी एक सेज पै सलोनी मृग नयनी दोऊ आनि तहां पीतम सुधा समूह बरसे। कवि मतिराम ढिग बैठो मन भावन के दुहूं के हिये में अरबिन्द मोद सरसे। आरसी दे एक सों कह्यो यों निज मुख लख्यो अरबिन्द बारिजविलास बरदरसे। दरप सो भरी जौलौं दरपन देखे तौलौं प्यारे आन प्यारी के उरोज हरि परसे। दोहा। बेनी गूंदत एक की नन्दलाल चित लोल। चूमत प्यारी के अधर विहसत गोल कपोल। ५७। अथ परकीया वर्णनं। दोहा। प्रेम करे पर पुरुष सों परकीया सो जानि। दोय भेद ऊढ़ा प्रथम बहुरि अनूढ़ा मानि। ५८। ब्याही और पुरुष सों और सों रस लीन। ऊढ़ा तासों कहत हैं कवि पण्डित परबीन। ५९। उदाहरण। कवित्त। क्यों इन आंखिन सों निरसंक ह्वै मोहन को तन पानिय पीजे। नेकु निहारे कलङ्क लगे इह गांव बसे कहु कैसे के जीजे। होत रहे मन यों मतिराम कहूं बन जाय बड़ो तप कीजे। ह्वै बनमाल हिये लगिये अरु ह्वै मुरली अधरा रस लीजे। ६०। दोहा। कन्त चौकसी मन्न की बैठी गांठि जुराइ। पेखि परोसी को पिया घूंघट में मुसक्या

ढ़ा। ६१। अनूढ़ा लक्षण। दोहा। अनव्याही कहु पुरुष सों अनुरागी जो होइ। ताहि अनूढ़ा कहत हैं कवि कोविद सब कोइ। ६२। उदाहरण। कवित्त। गोप सुता कहैं गौरि गुसाइन पांय परें बिनती सुनि लीजै। दान दया निधि दासी के ऊपर नेकु सुचित्त दया रस भीजै। देहि जो ब्याहि उछाह सों मोहन मात पिताहु के लोभन कीजै। सुन्दर सांवरो नन्द कुमार बसै उर में बर सो वर दीजै। ६३। दोहा। मै सुनि आई नन्द घर अब तू होहु निसंक। राधे मोहन ब्याह तें जैहें धोय कलंक। ६४। परकीया और भेद। दोहा। परकीया के भेद इह गुप्त जो प्रथम बखानि। बहुरि विदग्धा लक्षिता कुलटा मुदिता मानि। ६५। दोहा। और अनूसयना कही तिन के त्रिविध विवेक। बरनत कबि मतिराम यह रस सिंगार को सेक। ६६। सुरत गुप्ता लक्षणम्। दोहा। सुरत छिपावे जो तिया सो गुप्ता उर आनि। बरनत कवि मतिराम हे चतुराई की खानि। ६७। उदाहरण। कवित्त। लेन गई हुती बागही फूल अंधारी लखैं डर बाढ्यो नहाँई। रोम उठो तन कम्प छुट्यो मति राम भई श्रमकी सरसाई। बेलिन में उरझी अंगिया छतियां अति कंटक के छत छाई। देह में नेकु संभार रह्यो नहिं हां लगि भाजि मरू करि आई। ६८। दोहा। भलो नहीं यह केवरो सजनी गेह आराम। बसन फटे कंटक लगे निस दिन आठो याम। ६९। अथ विदग्धा भेद। दोहा। द्विविध विदग्धा कहत हैं कवि करि बिमल विवेक। बचन विदग्धा एक है क्रिया विदग्धा एक। ७०। अथ दुहुन के भेद लक्षण मं। दोहा। करै बचन सों चातुरी बचन विदग्धा मानि। करै

क्रिया सों चातुरी क्रिया विदग्धा जानि । ७१ । अथ बचन
विदग्धा को उदाहरण । कवित्त । आई है निपट सांझ गैया
गई घर मांझ हूंने वैरी आई मेरो कह्यो कान्ह कीजिये ।
कै तोहूं अकेली और दूसरो न देखियत बन की अंध्यारी सों अ-
धिक भय भीजिये । कवि मतिराम मनमोहन सों पुनि पुनि रा-
धिका कहत बात सांची ये पतीजिये । कब की हों हेरति न हेरे
हरि पावति हौं बछरा हिरानो सो हिराय नेकु दीजिये । दोहा ।
खेल निहारे धान को यों बूझत मुसकाय । इहां हमारे है कह्यो
सघन अमर दरसाय । ७३ । अथ क्रिया विदग्धा उदाहरण । कवि-
त्त । बैठी लिया गुरु लोगनि में रति सों अति सुन्दर रूप विसे-
खी । आयो तहां मतिराम सुजान मनो भव ते अति कान्ति विसेखी ।
लोचन रूप पियाई चहै अरु लाजनि जाति नहीं छबि देखी ।
नैन नचाइ रही हिये माल में लाल की मूरति लाल में लेखी । ७४ । दोहा ।
रही अटारी लाल वह कियो प्रनाम निरखोट । तरनि किरन तें
कमल की कर सरोज करि ओट । ७५ । अथ लक्षिता लक्षण ।
दोहा । होत लखाई सखिन को जाको पिय सों प्रेम । ताहि
लक्षिता कहत हैं कवि कोविद करि नेम । ७६ । उदाहरण ।
कवित्त । आई हौं पाय दिवाय महावर कुंजन तें करि कै सुख
सैनी । सांवरे आजु संवारे है अंजन नैननि को लखि लाग-
त ऐनी । बात के बूझत ही मतिराम कहा करिये यह भौंह ने-
नी । मूंदी न राखत प्रीति अली यह गूंदी गोपाल के हाथ की
बेनी । ७७ । दोहा । सतरोहीं मोहन नहीं दुरे दुराए नेह ।
होत लाल लख लाल के दीप माल सी देह । अथ कुलटा ल-
क्षण । दोहा । जो चाहति बहु नायकनि सरस सुरति पर

प्रीति । तासों कुलटा कहत हैं लखि ग्रंथन की रीति । ७९ । उदाहरण । कवित्त । अंजन दै निकसी सलि नैननि मंजन कै। अति अंग सँवारे। रूप गुमान भरी मग में पगही के अंगूठा। अनोठ सुधारे । यौवन के मद सों मतिराम भई म त वालनि लोग निहारे । जात चली यह भाँति गली बिथुरी अलकें अंचरान सवाँरे । ८० । दोहा । मोहि मधुर मुसकानि सों सबै गाँव के छैल । सकल सैल बन कुंज में तरुनि सुरति की सैल । ८१। अथ नष्ट संकेत अनुसयना लक्षण । दोहा । केलि करै जहँ। कंत सों सो थल भयो निहारि । कहि अनुसयना तासु सों सोचु करै वर नारि । ८२ । उदाहरण कवित्त । आई ऋतु पावस। अकास आदो दिशानि में सोहत स्वरूप जल धरन की भीर को । मतिराम सुकवि कदंबन की वासयुत सरस बढ़ावै। रस परस समीर को। सोनते निकसि वृषभान की कुमारि देख्यो तासु में सहेट को निकुंज गिरो तीर को । नागरि के नैननि में नीर को प्रवाह बाढ्यो देखत प्रवाह बाढ्यो यमुना के नीर को । । ८३। दोहा । ग्रीषम ऋतु में देखि के बन में लगी दवारि । सुखद अधर बस बात यह मन में जरति गँवारि । ८४ । अथ भाविस्थान सन्देह अनुसयना का लक्षण । दोहा । होन हार संकेत को सोच करै जो नारि । ताहो अनुसयना कही होइ हिये दुख भारि । ८५ । उदाहरण । कवित्त । बेलिन सों लपटाय रही है। तमालन की अवली अति कारी । कोकिल कूक कपोतन के कुल केलि करै अति आनन्द भारी। सोच करै जनि होहु सुखी मतिराम प्रवीन सबै नर नारी । मंजुल वंजुल कुंजन के घन पुंज सखी ससुरारि तिहारी। ८६ । दोहा । केलि करै मधु मत्त जहँ।

घन मधुपन के पुंज ग्रोन न करत असात है सखी सघन बन कुं-
ज ।८७। अथ तृतीया स्थान विघटिन स्थले गमन गमनानु स-
यना लक्षण । दोहा । मीतम गए सहेट को जाने हेतुहि पाइ ।
पहों अनुसयना कही होंन गई पछिताइ ।८८। उदाहरण ।
कवित्त । सांझ के समै में मतिराम काम बस बंधी कुंजी बट ।
तट में बजाई जाइ बांसुरी । सुमिरि सहेट वृषभान की कुमा-
रि उर सूल अधिकारी भयो सुख को बिनासुरी । स्वासों स-
मीर लाग्यो सूल सी सहेली सब हिय सौं बिनोद लाग्यो बन
सों निवासुरी । ताप चढ़ि आई तन पीर चढ़ि आई मुख आं-
खिन के ऊपर उमगि आई आंसुरी ।८९। दोहा । लखि सम्पुट
लाल कर लखिन बाल की हाल । कुम्हिलानी उरमाल थी फूल
माल ज्यों बाल ।९०। अथ मुदिता लक्षण । दोहा । चित ही सु-
नि जो बात को मुदित होय जो बाल । मुदिता ताको कहत हैं क-
वि मतिराम रसाल ।९१। उदाहरण । कवित्त । मोहन सों कु-
छु खेलनि तें मतिराम बढ्यो अनुराग सुहायो । बैठी हुती ति-
य मायके में ससुरार को काहू संदेस सुनायो । नाहके ब्याह
की चार सुनी हिय माहिं उछाह छबीली के छायो । पोढ़ि र-
ही पट ओढ़ि अटा दुख को मिसु के सुख बाल छिपायो ।९२।
दोहा । बिछुरत रोवत दुहुन के सखि यह रूप लखैन । दुख अं-
सुआ पिय नयन हूं सुख असुआ तिय नैन ।९३। इति परकी-
या । अथ गणिका लक्षण । दोहा । धन दै जाके संग में रमै पु-
रुष सब कोइ । मंचन को मति देखि के गणिका जानो सोइ ।
।९४। उदाहरण । कवित्त । लाल कर चरन रसन छद नख लाल ।
मोतिन की रदन रही है छबि छाइ के । कवि मतिराम सुख सुबदन

रूप रही रूप रासि सुबरनानि सोभा सार सारु की । आनन कों इंदु जानि आँखें अरविन्द मानि सुन्दरी रजनी दिन रहति सुहाय के । मानिक मनाय दौरें ने हूं तन पन ऐसो कुलनु को सुजान आनन भ-न पाइ के । ९५ । दोहा । लसत सकरी कजरी विलसत लाल पिछार । छिपे लजानि के हुरे बैठी बाल बजार । ९६ । अथ अन्य नायका भेद लक्षण । दोहा । अन्य सुरत दुखिता कही ऐन गर्विता जानि । रूप गर्विता और पुनि मानवती उर आनि । ९७ । अथ अन्य संभोग दुखिता लक्षणम् । दोहा । निज पति रति के चिन्ह जों लखै और तिय देह । अन्य सुरत दुखिता कहैं जरै पेख सों नेह । ९८ । उदाहरण । कवित्त । याही को पठाइ बड़ो काम कीनो आइ बड़ी बेरी है । लड़के हैं होत लोचन रसी ले सो । सांचो क्यों न कहै कहा तोको । जिन्हें आपही को पाइ बकसीस लाई बसन छबीले सों । मतिराम सुकवि संदेसो उन मानियतु तेरे नख सिख अङ्ग रूप कबीले सों । हूतो है रसीली रस बातन बनाय जो पै मेरे जान आई रस राखि के रसीलि सों । ९९ । दोहा । कहत गिहारी रूप मद सखी पैदू को स्वेद । ऊंचो लेति उसास हो कांपति सकल तन स्वेद । १०० । अथ प्रेम गर्विता लक्षणम् । दोहा । निज नायक के प्रेम सों गर्व जनावै बाल । प्रेम गर्विता कहत हैं सो तो सुमति रसाल । १०१ । उदाहरण । कवित्त । मेरे हंसे हंसतु है मेरे बोले बोलत है मोहि को जानत तन मन धन मापुरी । कवि मतिराम मोहे देखो किये हांसी हूंमें छोड़ि देत भूषन बसन पानी पातुरी । मोतें भारी प्यारी के न और कोंक कहा तोसों रिस कीर कीजे काहि कहां कों सयानुरी । सैन कामनी के मैन काहू के न रूप रीझै मैन काहू के सिखाए आलो मन मानुरी । १०२ । दोहा । औरन के पायन रचो नाइनि

जावक लाल । भाग पियारी रावरी परखोत तुम्हें रसाल । २०३ । अथ रूप गर्विता लक्षण । दोहा । जाके अपने रूप को अतिही होय गुमान । रूप गर्विता कहत हैं तासों परम सुजान । २०४ । उदाहरण । कवित्त । सोय रही रति अन्त रसीली आनन्द बढ़ाय अनङ्गतरंगिनि । केशरि खोरि करी तिय पै तन भीनन ओर सुवासक संगिनि । जागि परी मतिराम सरूप गुमान जनावति भौंह के अंगनि । लाल सों बोलति नाहिंन बाल सुधा छकि आँखि अँगोछति अंगनि । २०५ । दोहा । कैसे आँकेहौं उहां है जहँ नन्दकिशोर । छिनहूं मैं मुख चन्द को लखि ललचाति चकोर । २०६ । अथ मानवती लक्षण । दोहा । करै ईर्षा तें जु प्रिय मन भावन सों मान । मानवती तासों कहत कवि मतिराम सुजान । २०७ । उदाहरण । कवित्त । सो मन मोहन होत लई मुख जाके भई विधि की छवि छाजै । खोलि कै नैननि देखे जो नेक तो स्याम सरोज पराजय साजै । जो विहँसे मुख सुन्दर तो मतिराम बड़ाव को बारिज लाजै । बोलै अली मृदु मञ्जुल बोल तो कोकिल बोलिन को सरसाजै । २०८ । दोहा । सुनियत है मन मानिनी बिन अपराध रिसाति । नेह जावन को मनो दीप ज्योति जिय जाति । २०९ । अथ दस नायका वर्णन । दोहा । प्रोषित पतिका खंडिता कलहंतरिता जानि । विप्रलब्ध उत्कंठिता बासक सज्या मानि । २१० । दोहा । स्वाधिन पतिका कहत हैं अभिसारिका सुनाम । कही प्रवत्स्यत प्रेयसी आगत पतिका बाम । २११ । दोहा । दसों अवस्था भेद सों दसों नायिका जानि । तिन के लक्षण लक्ष यह नीके कहौं बखानि । २१२ । अथ प्रोषित पतिका लक्षण । दोहा । जाके पीत विदेश में विरह विकल

लिय होय। प्रोषित पतिका नायिका ताहि कहत सब कोय।११३।
अथ मुग्धा प्रोषित पतिका उदाहरण। कवित्त। वार कितेक स-
हेलिन के कहे कैसे हूं लेन न वीरी संवारी। रावति रोकि कहे
मति राम चले अंसुवा अंखियान तें भारी। प्राण पियारे च-
ल्यो जबतें तबतें कछु और ही रीति निहारी। पीर जनावति
अंगनि में कहि पीर जनावति काहे न प्यारी।११४। दोहा।
पिय वियोग तिय दृग जलधि जल तरंग अधिकाइ। बरुनि
मूल वेला परसि बहुरयो जात विलाइ। अथ मध्या प्रोषित प-
तिका उदाहरण। कवित्त। चन्द को उद्योत होत नैन चन्दका-
न्त कन्त छायो परदेश देह दाहिनि दहतु है। उसरि गुलाब
नीर कर पुट परसत विरह अनल ज्वाल जालनि जगतु है।
लाजनि तें कछु न जनावे काहू सखिन सों उर को उदारि अ-
नुरागि उमगतु हैं। कहा कहो मेरी वीर उठी है अधिक पीर
सुरभि समीर सीरो तीर सो लगत है।११५। दोहा। बहुत दू-
री होत क्यों यों बूझी जब सासु। उत्तर कह्यो न बाल मुख ऊं-
ची लई उसासु।११६। अथ प्रौढ़ा प्रोषित पतिका उदाहरण।
कवित्त। विरह तिहारे लाल बिकल भई है बाल नींद भूख
प्यास सिगरी विसारियत हैं। छोरी छोरी बात चन्द्रमा हूं ने
छिपाई तू वसन नि तानिके बयारि वारियतु हैं। कहै मति
राम कला धर कैसी कला छिन जीवन विहीन मीन सों नि-
हारियतु हैं। वार वार सुकुमार फूलन की माल ऐसी मार
के मरोरनि मरोर मारियतु हैं।११७। दोहा। चन्द्र किरनि
लगि बाल तनु उठे आंच यों जागि। दुपहर दिन कर परसि
ज्यों कर दरपन में आगि।११८। अथ परकिया प्रोषित

सखी अन्त नह। देन कह्योसो विन दिये जानन पैहो गेह। २३३।
अथकलहांनरिता को लछण। दोहा। कह्यो न मानै कन्त को
पुनि पाछे पछितात। कलहन्तरिता नायका ताहि कहत कवि
राइ। २३४। अथ मुग्धा कलहन्तरिता को उदाहरण। कवित।
गौने की चूनरी ग्रमो री है दुलही अबहोत दिहाइ बुराती। आ
उ बुलावन आए हैं आपने हाथ सों जातनधामसवारी। पाय
परे मतिराम लला मनु हारि करी कर जोरि हहारी। आपही म-
न्यो मनायो न काहू को आपही ख्याल न चाल पियारी। २३५।
दोहा। आई गौन कालिही सीखें कहा सयान। अबही ते रूसन ल-
गी अबही ते पछितान। २३६। अथ मध्या कलहान्तरिता को उ-
दाहरण। कवित। पायन आय परे तो परे रहे केती करी मनुहारि
सहेली। मान्यो मनायो न मैं मतिराम गुमान मैं ऐसी भई
अलबेली। आजु तो ल्याउ मनाइ कन्हाई को मेरो न लीजिये
नाम सहेली। २३७। दोहा। जो तू कहै तो राधिका पियहि म-
नावन जाउं। उहां कहोगी जाय के सखी तिहारो नाउं। २३८।
अथ प्रौढ़ा कलहान्तरिता कोउदाहरण। कवित्त। ठाढ़े भये क-
र जोरि के आरो अधीन है पायन सीस नवायो। केती करी।
बिनती मतिराम पै मैंन कियो हठते मन भायो। देखत ही।
सगरी सजनी तुम मेरे तो मान महामद छायो। रूठि गयो उ-
ठि प्राण पियारो कहा कहिये तुमहूं न मनायो। २३९। दोहा।
पीतम जब पायन पस्यो तब अति भई सरोष। कह्यो न मान-
हुं आपही हमें दीजियतु दोष। २४०। अथ परकीया कलहा-
न्तरिता को उदाहरण। कवित्त। जाके लिये गृह काज तज्यो न।
सिखी सखियान की सीख सिखाई। बैर कियो सिगरे ब्रज

गाँव मों जाके लिये कुल कानि गवाँई। जाके लिये घर बाहिर हूँ मतिराम रह्यो हँसि लोग चवाई। ताहीं रिसों छिन एकहि चोर गँवारि मैं तोरत बार न लाई। १४१। दोहा। जोरत हूँ सजनी। विपति तोरत लपत समाज। नेह कियो बिन काज ही तेहि कियो बिन काज। १४२। अथ गणिका कलहान्तरिता को उदाहरण। कवित्त। जाते लही जग बीच बड़ाई जो मेरा वियोग जो होत है छीनो। मोहिं गने मानि राम जो प्राण के मेरे मडाहि रह्यो जो अधीनो। मेरे लिये तिनही उठि के गहनो जु गढ़ाय के ल्यावे नवीनो। प्राण पियारे सो पायन लाग्यो री मैं हँसि कंठ लगाय न लीनो। १४३। दोहा। यासों कियो सनेह मन रहे न एको। साध। तासों भई सरोष हों सजनी बिन अपराध। १४४। अथ विप्रलब्धा को लक्षण। दोहा। आप जाय संकेत में मिलै न जाको पीय। ताहि विप्रलब्धा कहत शोच करत अति जीय। १४५। अथ मुग्धा विप्रलब्धा को उदाहरण। कवित्त। आलिनि के सुख मानिबे को पिय प्यारे की प्रीति गई चलि आगे। छाय रह्यो हिय रो दुख सों जब देख्यो नहूं नदलाल सभागे। काहू सों बोल कछू न कहे मतिराम न चित्त कहूं अनुरागे। खेल सहेलिनि में पर खेल नवेली को खेलन जेल सो लागे। १४६। दोहा। लख्यो न कन्त सहेट में लख्यो नषत को राय। नवल बाल को कमल सों गयो बदन कुंभिलाय। १४७। अथ मध्या विप्रलब्धा को उदाहरण। कवित्त। केलि के मन्दिर देख्यो न लाल को बाल के दाहन अंग रहे हैं। भौंह चढ़ाय सखीनो लख्यो मतिराम कछून कुबोल कहे हैं। भूलि हुलास बिलास गए दुखतें भरि के अंसुवा उमहे हैं। ईछन कोर-

कितें न गिरे मनो तीछन कोरनि छेदि रहे हैं । १४८ । दोहा । तिय कों मिल्यौं न प्राण पति सजल जलद तन मैन । सजल जलद लखि के भये सजल जलद से नैन । १४९ । अथ प्रौढ़ा लक्षा को उदाहरण । कवित्त । सकल सिंगार साजि संग लै सहेलिन कों सुन्दरि मिलन अली आनंद के कंद को । कवि मतिराम बाल करनि मनोरथनि पर्‌यो पाय मंद मैन प्यारे नन्द नन्द को । नेह नें लगी है देह दाहन गाहन गेह बाग के बिलोक द्रुम बेलिन के वृन्द को । नन्द कौ हँसत आयो मुख चन्द अब चन्द लाग्यो हंस हंसनि तिया के मुख चन्द को । १५० । दोहा । लख्यो न मन्दिर के विषै पिय रुचि विजिन अनंग । नैन कमल तें जल वलय गिरे एक ही संग । १५१ । अथ परकीया विप्र लक्षा को उदाहरण । कवित्त । चली आनि राग प्राण प्यारे को मिलन । थान ने सुक निहारि कें बिगारि काज घर को । पियरे वरन मुख छियरे समाइ रह्यो कुंजन में भयो न मिलाप गिरधर को । बिसरे बिलास सब विलाइ गयो हांस छायो सुंदरि के तन में मलाप पञ्च सर को । तीछन जुन्हाई अरु । ग्रीषम की घाम भई भीषन पियूष भानु भानु दुख हर को । १५२ । दोहा । नची जोन्हि सों भूमि अलि भरे कुसुम के फूल । तुम बिन वाको वन भयो खड्ग पत्र के तूल । १५३ । दोहा । साहस करि कुंजन गई लख्यो न नन्द किशोर । दीप सिखा सी थर हरी लगे बयार झकोर । १५४ । अथ गणिका विप्र लक्षा को उदाहरण ॥ कवित्त । बीर बिलासनि कोटि हुलास बढ़ाइ के अङ्ग

सिंगार बनायो सीतल गेह गई चलिके मतिराम तहाँ न पि-
यो मन भायो। संग सहेली सों रोस कियो नहिं आपन कों
यह दोष लगायो। हाय कियो मैं भलो यह कौन जो आपन
भौन नवेलि पठायो। १५५। सौंहि पठायो कुञ्ज में उत आ-
ये नहिं आप। आली औरहु बीति को मेरो मिट्यो मिला-
प। १५६। अथ उत्का का लक्षण। दोहा। आपु जाय।
संकेत में पीउ न आयो होइ। ताकों मन चिन्ता करै उत्का
कहिये सोइ। १५७। अथ मुग्धा उत्का का उदाहरण। कवि-
त्त। बीति गई युग याम निसा मतिराम मिटी तम की सर-
साई। जानति हौं कहुं और तिया सों रह्यौ रस में रसि के
रसकाई। सोचति सेज परी यों नवेली सहेली सों जानि न
जात सुनाई। चन्द चढ्यो उदया चल में मुख चन्द में आ-
नि चढ़ी पियराई। १५८। दोहा। कितने कन्त आयो अ-
ली लाज न बूझि सकैन। नवल बाल पलका परी पलकन
लागे नैन। १५९। अथ मध्या उत्काको उदाहरण। कवित्त।
बारहिं बार बिलोकति द्वारहिं चौंकि परै तिन के खरके हूं।
सेज परी मतिराम बिसूरति आइ अहों अबहीं लखि मैं हूं।
संग सखीन के खेलन ही अजहूं रजनी पति के अथयें हूं।
लालन सौतिन जाहु घरे फिर बालन मानिहैं पाइ परे हूं। १६०।
दोहा। कहाँ रह्यो आयो सखी पीउ पहर युग मैन। अध-
निकरे अधरानि मों बात बदन तें बैन। १६१। अथ उत्का
प्रौढ़ा को उदाहरण। कवित्त। केयु घरी निसा बीति गई अ-
रु मेह चहूँ दिस आयो उनै है। अंग सिंगार कै बैठी है।
सांवरे तेरी ए बाट बिलोकति ह्वै है। बैठि कहा मति राम।

रसाल ह्वै रहि मनावति ही पुनि जैहै। आलस बेगि निहारि। पियारी सों दोष बिचारि हमें बहु दैहै। २६२। दोहा। पीउ न आयो ध्यान में मूँदे लोचन बाल। पलक उघारति पलक में आयो होय न लाल। २६३। अथ परकीया उत्का को उदाहरण। कवित्त। यमुना के तीर बहै शीतल समीर जहाँ मधुकर मधुर करत मन्द शोर हैं। कवि मतिराम तहाँ छबि सों छबीली बैठी अंगनि तें फैलति सुगन्ध की झकोर हैं। पीतम बिहारी के निहारिबे की बाट ऐसी चहूँ ओर दीरघ दृगनि की कोर हैं। एक ओर मीन मानो एक ओर कंज पुंज एक ओर खंजन चकोर एक ओर हैं। २६४। दोहा। कौन बात लखि गेह की कुंज देहरी आय। लै हैं धीर बिचारि के नागरि फिरि फिरि जाय। २६५। अथ गणिका उत्का को उदाहरण। कवित्त। पीतम को घर ध्यान करि के आवहीं मन काम करवे लैं। पीतम के रुक्के मतिराम अचानक हीं अँखियाँ सूनि खोलैं। पीतम ऐहै आजौ सजनी अँगिराई जम्हाइ यों कुँ बोलैं। मानें शंकु गोरी हरि हरि गेह के बाग हरे हरे डोलैं। २६६। दोहा। बार बधू पिय पंथ लखि अँगिरानी अँग मोरि। पौढ़ि रही परयंक मनु डारी मदन मरोरि। २६७। अथ वासकसज्जा का लक्षण। दोहा। ऐहै पीतम आजु यों निश्चय जान्यो बाल। साजे सेज सिंगार सखि वासकसज्जा नाम। २६८। अथ मुग्धा वासकसज्जा को उदाहरण। कवित्त। भई है सयानी तरुनाई सरसानी प्रीति में पगानी उठ लाज डर ना कियो। कवि मतिराम काम केलि की कलानि करि। मोहन लला को बस कीजियो अभिलाषियो। मृदु मुस-

।१७५। दोहा। मन मोहन के मिलन की करे मनोरथ नारि। धरे चोल के सामुहे दिया भवन को वारि। १७६। अथ गणिका वासक सय्या को उदाहरण। कवित्त। सेन सारी। सोहन उज्यारी मुख चन्द की सी महलनि मन्द मुसक्यान की मढ़ा मही। आंगिया के ऊपर है उलही उरोज ओप उर मतिराम माल मालती की डहा डही। मोंत मंजु मुकुर से मंजुल कपोल गोलगोरी की गुराई गोरे गात न गहा गही। फूलन की सेज बैठी दीपक फैलाय लाय बेली की फुलेल फूली फूल सी लहा लही। १७७। दोहा। सुन्दरि सेज संवारि के साजे सबै सिंगार। दृग कमलन के द्वार में बांधे वन्दन वार। १७८। अथ स्वाधीन पतिका को उदाहृ०। दोहा। सदा रूप गुण रीझि पिय जाके रहैं अधीन। स्वाधिन पति का नायका बरणे कवि परवीन। १७९। अथ मुग्धा स्वाधीन पति का को उदाहरण। कवित्त। आपने हाथ सों देत महावर आपहि बार सिंगारत नीके। आपन हीं पहिरावत आनि के हार संवार के मौल सरी के। हौं सखि लाजन जात मरी मतिराम सुभाय कहा कहौं पी के। लोग मिले घर घर कहैं अबहीं ते ये चेरे भये दुलही के। १८०। दोहा। अंग अपवलोकि के लिय यौवन की ज्योति। सुधा सिंधु अवगाह सुन दीठ। नाह की होति। १८१। अथ मध्या स्वाधीन पतिका को उदाहरण। कवित्त। जग मग जोवन अनूप तेरो चाहिये। रति ऐसी रंभासी रंभासी बिसाइये। देखि वे करे मान प्यारे प्राण प्यारे पास रहो घूंघट उघारि नेकु वदन दिखाइये। तेरे अंग अंग में मिठाई लेउ नाहीं भरि मतिराम कहे।

पियहिं बुलावे आप को पिय पै आपहि जाय । ताहि कहत अ-
भि सारिका जे प्रवीन कविराय ।१९०। अथ मुग्धा अभि सारि-
का को उदाहरण । कवित्त । जान न जाय लगाय लई रस ही रस
में मन हाथ के लीनो। लाल निहारे बुलावन को मतिराम तें
बालकह्यो पर लीनो । वेगि चलो न विलम्ब करो लख्यो बाल
नवेली को नेह नवीनो । लाज भरी अँखियां बिहसी बसि बो-
ल कहे बिन उत्तर दीनो । १९१ । दोहा । अली चली नवलाहि
ले पिय पै साज सिंगार । ज्यों मतंग अँडदार को लिये जात ।
गंडदार । १९२ । अथ मध्या अभि सारिका को उदाहरण ।
। कवित्त । बैठि रहे मतिराम लला घर भीतर साँझहि ते अनु-
रागी । बालक सों बनि चारु सिंगारनि आई सुहागनि प्रेम ।
सों पागी । प्यारे कह्यो हंसि आइये सेजाहिं प्यारी की जाति
विलासिनि जागी । नैन नवाइ रही मुसक्याय कै हार हिये ।
को संवारन लागी । १९३ । दोहा । जोबन मद गज मन्द ।
गति चली बाल पिय गेह । पगनि लाज आई परी बढ़ो म-
हा मद नेह । १९४ । अथ प्रौढ़ा अभिसारिका को उदाह-
रण । कवित्त । सहज सुबास युत देह की दुगुनि दुति दामि-
नी दमक दीप केसर कनक तें । मतिराम सुकवि सुमुग्ध
सुकुमार अंग सोहत सिंगार चारु जोबन बनक तें । साइबे को
सेज चली आन पति प्यारे पास जगन जुदार जोति हंसनि कन
क नें । चढ़त अटारी गुरु लोगन की लाज प्यारी रसना दसन
दाबे रसमन कन तें । १९५ । दोहा । सजि सिंगार सेजहि चली ।
बाल जहां पति प्रान । चढ़त अटारी की सिढ़ी भई कोस परिमान
। १९६ । अथ परकीया कृष्णा अभिसारिका को उदाहरण । कवित्त

उमड़ घुमड़ दिग मंडलनि मंडि रहे झूमि झूमि बादर कुहू कि निस कारी में । अंगन में कीन्हों मृग मद अंग राग तैसो । आनन उढ़ाय लीन्हों श्याम रंग सारी में । मतिराम सुकवि समयं के रुचि राज रही आभरन राजी मरकत मनवारी में । मोहन छबीले को मिलन चली राधा छवि छाहलो छबीलो छवि । छाजन अंध्यारी में । १९७। दोहा । श्याम बसन में श्याम । निशि दुरगति याकी देह । पहुंचाई चहुं ओर घिर भौर भीर पिय गेह । १९८। अथ शुक्ला अभिसारिका को उदाहरण । कवित्त । अंगनि में चंदन चढ़ाय घन सार सेत सारी छीर फेन ऐसी आभा उफनात है । राजत रुचिर रुचि मोतिन के आभरन कुसुम कलित केश शोभा सरसाति है । कवि मति राम । प्राण प्यार को मिलन चली करके मनोरथनि मृदु मुसकाति है । होति न लखाई निशि चन्द की उज्यारी मुख चंद की उज्यारी तन छाहों छिपि जाति है । १९९। दोहा । मलिन करी छवि जोन्ह की तन छवि सों चलजाऊं । क्यों जैहो पियपेस खी लखि जैहे सब गाउं । १२० । अथ दिवा अभिसारिका को उदाहरण । कवित्त । सारी जरतारी की झलक झलकनि तैसो केसरि को अंग राग कीन्हों सब तन में । तीक्षण तरल की । किरनि तें दुगुन ज्योति सोहे जवाहर जड़ित आभरन में । कवि मतिराम आभा अंगनि अंगारिन की घूम कैसी धार छवि छाजति कंचन में । ग्रीषम दुपहरी में हरि को मिलन चली जानी जात नारि नन्द वारियुत बन में । २०१। दोहा । ग्रीषम ऋतु की दुपहरी चली बाल बन कुंज । अंग लपटि तीक्षण लुवे मलय पवन के पुंज । २२२। अथ गणिका अभि-

अभिसारिका को उदाहरण । कवित्त । साँझहि सिंगार साजि प्रान प्या-
रे पास जाति बनिता बनक बनी बेलरी अनंद की । झमि-
कनि राजे झनक किंकिनि की धुनि बाजै मन्द मन्द चाल ज्यों ।
बिराजत गयन्द की । केसरि से रंगिये दुकूल हाँसी में बरस
केसनि में छाई छबि फूलनि के वृन्द की । पीछे पीछे आ-
वति अँधियारी सी भँवर भीर आगे फैल रही उजियारी मु-
खचन्द की ।२०३। दोहा । नागरि सकल सिंगार करि चली अ-
गा चलि पास । प्रिया अली बिहसत भये सोभा सहज बि-
लास ।२०४। अथ प्रवत्स्यत् प्रेयसी को लक्षण । दोहा ।
होनहार प्रिय के बिकल बिरह होय जो बाल । ताहि प्रवत्स्य-
त प्रेयसी बरनत बुद्धि बिसाल ।२०५। अथ मुग्धा प्रव-
त्स्यत् प्रेयसी को उदाहरण । कवित्त । जा दिन तें चलिबे की
चरचा चलाई तुम ता दिन ते वाके पियराई तन छाई है । कहै
मतिराम छोड़े भूषण बसन पान सखिन सों खेलन हसनि
बिसराई है । आई रितु सुरभि सुहाई प्रीति वाके चित ऐ-
से में चलो तो लाल रावरी बड़ाई है । सोवत न रैन दिन रोव-
त रहत बाल बूझति कहति सुधि मायके की आई है ।२०६।
क्यों सहिहै सुकुमार यह पहलो बिरह गोपाल जब वाके चि-
त हित भयो चलन लगे नवलाल ।२०७। अथ मध्या प्र-
वत्स्यत् प्रेयसी को उदाहरण । कवित्त । गौने के द्योस छ-
सातक बीते न बीती कहाँ अबही इन आई । लालन बालके ना-
हिं नें मतिराम परी सुख में पियराई । तून बहू को पठा-
य सखी यह देखि दुहून की प्रीति सुहाई । रोये से रोचन
मोये से लोचन सोयत सोचत रैन बिताई ।२०८। दोहा ।।

दोहा। अबहीं ते मिलि मोहि सखि चलत आजु ब्रजराज। अँसुवनि-
राखति रोकि कै जियहि निकासति लाज। २०९। अथ प्रौढ़ा
प्रवत्स्यति प्रेयसी को उदाहरण। कवित्त। मलय समीर लागे
चलन सुगंध सीर पथिकन कीन्हे परदेशनि ते आवने। म-
तिराम सुकवि समूह न कुसुम फूले कोकिल मधुप लागे
बोलन सुहावने। आयो है वसन्त अब पल्लवित जान तुम
लागे चलिबे की चरचा चलावने। गवरी तिया को तरुवर सब
रन के किसलै कमल ह्वै ह्वै पावक दिखावने। २१०। दोहा। को-
पनि ते किसलै जरे ह्वांहिं कलित ले कौल। तव चलाइये चल-
न की चरचा नायक लाल। २११। अथ परकीया प्रवत्स्यति प्रे-
यसी को उदाहरण। कवित्त। मोहन लला को सुन्यो चलत बि-
देस भयो बाल मोहनी को चित्त निपट उचाट में। खरी तरुबे-
ली तर मन में छबीली राखे छाति पर छिनकु छिनकु पाव बाट
में। प्रीतम नयन कुवलयन को चंद भयो घरी में चलेगो मति
राम जेहि घाट में। नागरी नवेलि रूप आगरी अकेली रीति।
गागरी लै ठाढ़ी भई घाट ही के बाट में। २१२। दोहा। चलत सुन्यो
परदेश को हियरा रह्यो न ठौर। लै मालिनी मीतहिं दयो नवर-
सालका मौर। २१३। अथ गणिका प्रवत्स्यति प्रेयसी को उदा-
हरण। कवित्त। मंजन कियो न तन अंजन दियो न नैन जावक
दियो न पाय रही मन मारि कै। मतिराम सुकवि तमोल छोड़ि
देयो बीर पहिरे वसन डारे भूषण उतारि कै। ऐहैं आजु पीव
बिदा मांगन बिदेश को यो नेह के जमाय वे की चातुरी बिचारि
कै। गारि राख्यो चन्दन वगार राख्यो घनसार आंगन में सेज
सरसिजन संवारि कै। २१४। दोहा। चलत पीय परदेश को

बरज सकौं नाहिं लाहिं। लै रैहौं आसन ज्यों जियत पाइ हौं मो-
हिं। २१५। अथ आगत पतिका को लक्षण। दोहा। पतिय
को परदेश ते आयो पिय मतिराम। ताहि कहत कवि लोग य-
ह आगत पतिका बाम। २१६। अथ मुग्धा आगत पतिका
को उदाहरण। कवित्त। आयो बिदेश तें प्राण प्रिया मतिराम।
आनन्द बढ़ाइ अलेखै। लोगनि सों मिलि आंगन बैठि घरीही।
घरी तिगरो घर पेखै। भीतर भौन के द्वार खड़ी सुकुमारि तिया
तन कम्प बिशेखै। घूंघट को पट ओट किये पट ओट दिये पिय
को मुख देखै। २१७। दोहा। पिय आयो नव बाल तन बाढ़ो
हरष बिलास। प्रथम बारि बूंदन उठै ज्यों बसुमती सुवास। २१८।
अथ मध्या आगत पतिका को उदाहरण। कवित्त। चंदमु-
खी सजनानि के संग हुती पति आंगनि में सनु फेरत। ताहि समै
पिय प्यारे की आगम प्यारी सखी कह्यो द्वार ते टेरत। आय
गये मतिराम जबै नव देखत नैन अनन्द अभेरत। भौन के
भीतर भाजि गई हँसि कै हरुवै हरि को फिर हेरत। २१९।
दोहा। पिय आगम सरदा गमन निरमल बाल मुख इन्दु। भ-
अंग बिमल पिय पै भयो फूले दृग अरबिंद। २२०। अथ
प्रौढ़ा आगत पतिका को उदाहरण। कवित्त। प्राण न प्यारो
मिल्यो सपने में परी जब ते सुख नींद बिहोरे। कन्त को आय
बो यों ही जगाय सखी कह्यौ दैन पीउ पै निचोरे। यों मतिराम
भयो हिय ते सुख बाल के बालम सों दृग जोरे। जैसे मिहीप-
ट में चटकीलो चढ़ै रंग तीसरि बार के बोरे। २२१। दोहा। पिय
आयो परदेश तें हिय हुलसी अति बाम। टूक टूक कंचुक कि
यो का कमनीने काम। २२२। अथ परकीया आगत पतिका

को उदाहरण। कवित्त। आयो बिलव बिदेशते बालम बाल बियो
ग बिथा बिसराई। आई तहां तिनके संगहै सब गांव कीजे युवती
जुरि आई देखतही मतिराम कहैं अंखियानि में आनंद की छ-
बि छाई। साजनि क्यों करिवेन कहे सुकह्यो दुख देह सबे दुखराई।
।२२३। अथ दूसरो उदाहरण। कवित्त। भावते को सुनि आगम।
आनन्द अंगनि २ में उमह्यो है। सो हमहूं हित सों न दुराइये।
आली कह्यो यह कौन कह्यो है। गाढ़ी भई माहरि दर की अं-
गिया की तनी नित तन उमग्यो है। खैंच लिये सुख के असुवा
यह क्यों दुरि है हियरा उमह्यो है। २२४। दोहा। सुन्यो मायते
जब बढ़ी वा मन आयो कन्त। कुशल बूझिवे के मिसिहि ली-
न्हो बोलि इकन्त। २२५। अथ गणिका आगत पतिका को।
उदाहरण। कवित्त। नागर बिदेश में बिताई बहु द्योस आय।
नागरि के हिय में हुलसि निकसी खान की। कवि मति राम।
अंक भरिके मयंक मुखी नेहे सरसाइ भाही मति सुख दान
की। सुवरन बोलि के बतावत हैं सुवरन ही रजत लावत हैं
छबि मुसक्यानि की। आंखिन ते आनन्द के आंसू उमगाइ
प्यारी प्यारे को दिखावत सुरत सुकतान की। २२६। दोहा।
फूली नागरि कामनी उड़ि गये नित्त मलिंद। आयो मित्त बि-
देश ते भयो मुदित आनन्द। २२७। अथ उत्तमा लक्षण। दोहा।
पिय हितु को अनहित करे आप करे हितमारि। ताहि उत्तमा ना-
यका कवि जन करत बिचारि। २२८। अथ उदाहरण। कवित्त।
राति कहूं रस के मनभावन आवन प्रात मिया घर कीनो। देख
तही मुसक्याय उठी आगेहै आदर को फिर लीनो। मोहन
के तन में मतिराम दुकूल सुनी लीनो हार नवीनो। केसर के

केरंग सों रंगिके पटु पीतके मौलस्री के कर दीनो ।२२९। दोहा । पिय अपराध अनेक निज आँखिन हूं लखि पाइ । तिय इकहूं कहुं कन्त सों माने करत लजाय ।२३०। अथ मध्या लक्षण । दोहा । पियसों हित तें हित करै अनहित कीनो मान । ताहि मध्यमा कहत हैं कवि मति राम सुजान ।२३१। अथ उदाहरण । कवित्त । आयो प्राणपति रात अन्त बिताई बैठी भौंहनि चढ़ाई रंगी सुन्दरि सुहाग की । पानन खवाई पर्यो प्यारी के पगनि आइ भूल सों छिपाइ छैल छवि रति दाग की । छूटि गयो मान लगी आपहि सवांरन को खिरकी सु कवि मतिराम पिय पाग की । हिलही के आंसू भरे आनन्द के आँखिन में रोस की ललाई सों ललाई अनुराग की ।२३२। दोहा । मेरे तन के रोम यह मेरोहि नहीं । निलाज । तौहि आदर आगमन को करौं कौन बिधि लाज ।२३३। अथ अधमा को लक्षण । दोहा । पिय सों हित हूं को किये । कर मानै यों बाल । तासों अधमा कहत हैं कवि मति राम रसाल ।२३४। उदाहरण । कवित्त । आये हैं सयान पन गयो है अजानपन निन उठि मान करिबे टेव बावरी । घर घर मानिनी है मान ना मनायो तबै तेरी ऐसी रीति अनकाहू पै नावरी । कवि मतिराम काम रूप घन श्याम लाल तेरी नैन कोर और चाहै इक टक की । हाहा करै निहोरे हूं न हेरति हरिन नैनी काहे को करति हठु हरिल को लकरी ।२३५। दोहा । कहा लियो गुरु मान कौं अति लाही है नेम । पारद सों उड़ि जायगी । अलि अंचल यह प्रेम । २३६। इति नायिका लक्षण समाप्तम् । अथ नायक लक्षण । दोहा । तरुण सुघर सुन्दर सकल काम कलानि प्रवीन । नायक सो मतिराम कहि कविन रीति रस लीन ।२३७। अथ उदाहरण ।

।कवित्त। गुन्जन के अवतंस बेस सिखि पक्षन अच्छ किरीट बनायो। पल्लव लाल संमेत छरी कर पल्लव मे मतिराम सुहायो। गुंजनि के उर मंजुल हार निकुंजन तें कढ़ि बाहर आयो। आजु को रूप लखै ब्रजराज को आजुही आँखिन को फल पायो।२३८। दोहा। परी भाँवरे साँवरे रास रसिक रसजान। उनहीं में मन भ्रमत है ह्वै बीडुर को पान।२३९। अथ नायक भेद। दोहा। पति उपपति वासिक त्रिविधि नायक भेद बखान। विधि सों ब्याहे पति कहत कवि कोविद मलजान।२४०। अथ उदाहरण। कवित्त। पाँव धरै दुलही जेहि ठौर रहे मतिराम तहाँ दृग दीने। छाड्यो सखान के साथ को खेलबो बैठ रहे घरही रस भीने। साम्हीं तें ललके मनहीं मन लालन यों रस सों बस लीने। लोनी सलोनी के अंगनि नाह सुगौने की चूनरी टोने से कीने।२४१। दोहा। जा दिन तें गौनो भयो आई बाल रसाल। ता दिन तें विरहनि भई हरि उठ तें बन माल।२४२। अथ नायक का वर्णन। दोहा। चारि भाँति सों सब न ये प्रथम कहत अनकूल। दक्षिण गनि पुनि धृष्ट सठ रस सिंगार के मूल।२४३। अथ अनुकूल नायक लक्षण। दोहा। सदा आपनी नार सों जाके अतिही प्रीत। परनारी तें बिमुख जो सो अनुकूल सुरीत।२४४। अथ उदाहरण। कवित्त। कौ हूं नहीं बिसरें निशिवासर मन्द हँसी मुख चन्द उज्यारी। त्यों हीं दियो अति नेह सों देह की दीप कला सम दीपति न्यारी। तेरिये ज्योति जगे हिय भीतर आवन नारिन और अंध्यारी। नैनन हू अरु बैन हू के मन हू मन हू के तुहीं अति प्यारी।२४५। दोहा। सपने हू मन भावतो करत नहीं अपराध। मेरे मन ही में रही सखी मान की साध।२४६। अथ दक्षिण लक्षण। दोहा।

एक भांति सब तियनि सों जाको होय सनेह। सो दछिण भनि राम कह बरनत है मति गेह।२४७। अथ उदाहरण। कवित्त। सांझ से ललना मिलि आई खडी जहं नन्दलला अलबेलो। आपनि पोरि बताइ कह्यो अब आजु हमारिहि पोरि में खेलो। खेलन। को निश चांदनी मोहन नैन मतो मतिराम सुहेलो। त्यों हंसि के ब्रजराज कह्यो ये आजु हमारि ही पोरि में खेलो।२४८। दोहा। दछिण नायक एक तुम मनमोहन ब्रज चन्द। फुलये ब्रज। बनितानि के दृग इन्दी वर वृन्द।२४९। अथ धृष्ट लक्षण। दोहा। करे दोष निरशंक है डरे न पिय के मान। लाज धरे। मन में नहीं नायक धृष्ट निदान।२५०। अथ उदाहरण।कवित्त। बरजो न मानत हो बार बार बरजे में कौन काम मेरे इत। भौन में न आइये। लाज कौन लेस जग हांसी को न डर न नहिं मान आन बान न बनाइये। कवि मतिराम नित उठि के कलंक कारो नित २ सौंहें कारो अंग बिसराइये। जाके पग लागो निशि जागि जाके उर लागे मेरे पग लागि २ आगि न लगाइये।२५१। दोहा। आजु नैन कुलटानि के आनि बसे ब्रजराज। हिये तिहारे ने सकल मानि निकारी लाज।२५२। अथ सठ का लक्षण। दोहा। डरे करे अपराध ही करे कपट की प्रीति। बचन क्रिया में अति चतुर सठ नायक की रीति। २५३। अथ उदाहरण। कवित्त। मोते तो कछु न अपराध परयो प्यारी मान करि रही याही काहि के अरस ते। लोचन चकोर मेरे सीतल ही होत तेरे अरुण कपोल मुख चन्द के दरस तें। कहें मतिराम उर लागि उर मेरे किन कारति कठोर मन असुवा बरस ते। कोपते कटुक बोल बोलति है तऊ मोको मीठे होत अधर सुधारस परस-

वह सुधि करो क्यों न नैन नलनीके दल सेज तारे सीरे सरसि- जनि बिछाइये। अमल उसीर इन्दु चंदन गुलाब नीर कहां लगि और उपचारनि जनाइये। छल बल छल वाको मैं मिलाइ के जिवाय तब कवि मति राम अब साहिबी जनाइये। ऐसो मन भावत गुमान है जु प्यारी के मनाइबे मनाइबे को तुमको मनाइये। २६३। दोहा। यामें कौन सयान है मोहन लाल सुजान। आय करत अपराध ही आपहि करत गुमान। २६४। अथ बचन चतुरता का लक्षण। दोहा। बचननि सें जो करत है चतुराई मति राम। बचन चतुर नायका सरस लीजे जानि सकाम। २६५। अथ उदाहरण कवित्त। दूसरे की बात सुनि परति न ऐसी जहां कोकिल कपोतन की धुनि सरसानि है। छाई रहे जहां द्रुम बेलिन सों मिलि मतिराम अली कुलनि में अंध्यारी अधिकानि है। नखत से फूलि रहे फूलन की कुंज घन कुंजन में होत जहां दिनहू में राति है। ता बन की बाट कोऊ संग ना सहेली कहि कैसे तू अकेली दधि बेचनि को जाति है। २६६। दोहा। तोकों देउं बताइ के लकिल होति उचाट। ग्वालिन दधि बेचन गई बंशी बट की बाट। २६७। अथ क्रिया चतुर का लक्षण। दोहा। करे क्रिया सों चातुरी जो नायक रस लीन। क्रिया चतुर ताकों कहत कवि मति राम प्रवीन। २६८। अथ उदाहरण। कवित्त। नन्द लाल गयो तितही चलिके जित खेलति बाल सखी गन में। तहां आपही मूंदि सलोनी के लोचन चोर मिहीचनि खेलन में। दुरिबे को गई सिगरी सखियां मतिराम कहैं इतने छण में। मुसकाइ के राधिका कराठ लगाय छिप्यो कहूं जायनि

कुंजन में ।२६९। दोहा । सांझ समय वह छैल की छलनि
कही नहिं जाय । बिन डर वह डर वाइ कै लिये सोहिं उरलाय।
।२७०। अथ प्रोषित नायक लक्षण । दोहा । नायक होय विदे-
शमें जो वियोग अकुलाय । तासों प्रोषित कहत हैं जे प्रवीन क-
वि राय । २७१। अथ उदाहरण । कवित्त । प्यारे परे वचन पीयूष
पान करि करि उमगि उमगि तिय आनन्द विशेषि हैं। कवि म-
तिराम नन तपति बुझाय जैहै तब निज जनम सुफल करि लेखि
हैं । होलत की शीतल करन चारु चांदनी सी मन्द मृदु मुसक्या-
नि अनमिष पेखि हैं । है है तो निराम मेरे लोचन चकोरन की
जब वाको आनन अमल इन्दु पेखिहैं । २७२। दोहा । प्रफुलित
सुमन सुवास में करयो आनन्द केलि । सो नीको उर लागिहै उर
सोने की बेलि । २७३। अथ दर्शन लक्षण । दोहा । दरशन ।
आलम्बनहि में कविमति राम बखानि । श्रवण स्वप्न अरु चि-
त्र पुनि त्यों प्रत्यक्षहिं जानि । २७४। अथ श्रवण दरशन को
उदाहरण । कवित्त । आनन पूरण चन्द लसै अरु बिन्दु बिला-
स बिलोचन पेखै । अंबर पीत लसै चपला छवि अम्बुद मे-
चक अङ्ग उरेखै । कामहु ते अभिराम महा मतिराम हिये
निहचै करि लेखै । ते बरने निज बैननि सों सखि मैं निज
नैननि सों मनों देखै । २७५। दोहा । जैसो तुम बरन्यो सखी
रूप कान्ह को आय । तैसोई मेरे नयन रह्यो आय दरशाय
।२७६। अथ स्वप्न दरशन को उदाहरण । कवित्त । आवन में
हरि को सपने लखि नेसुक आड़ सकोच न छोड़ी । आगे ह्वै ठा-
ढ़े भये मतिराम चले सुचिते पल लालच ओड़ी । होठनि
को रस लेन को मोहन मेरी गही करकों पति ठोड़ी । और

अथवा २ घर तें उठि धाई। २८५। दोहा। सखी दूतिका जानियो उद्दीपन को भेद। नायक अरु नायिकानि को हरै विरह को खेद।

।२८६। अथ सखी लक्षण। दोहा। जासों नहिं नायिका कछू छिपावै बात। तासों बरणत सब सखी कवि मति सब अवदात। २८७। अथ सखी कर्म लक्षण। दोहा। मण्डन औ सिक्षा करन उपालम्भ परिहास। काज सखिन को जानिये औरे बुद्धि बिलास। २८८। अथ मण्डन यथा उदाहरण। कवित्त। जावक रंग रंगे पद पंकज नाह को चित रंग्यो रंग वालें।

अंजन दे कर नैननि में सुखमा बढ़ी श्याम सरोज प्रभालें।

सोनेके भूषन अङ्ग रच्यो मतिराम सबै वश करिबे की घातें।

योंहि चलै न सुभाव सिंगारहिं में सखि भूल कही सब बातें।

।२८९। दोहा। सखी पिया की देह में सजे सिंगार अनेक। कजरारी अंखियान में भूल्यो काजर एक। २९०। अथ सिक्षा उदाहरण। कवित्त। मलय को पवन मन्द मन्द के गवन लयो फूलन के वृन्दन में मकरन्द टारने। कवि मतिराम चित्त चोर चारो ओर चाहि लाग्यो चैत चंद चारु चांदनी पसारने। मालिन की आली आली मैन कैसे मंत्र पढ़ि लागी मालतीन के मनन मान मारने। सुमन सिंगार साजे सेज सुख साजि करो लाज करो आज ब्रजराज पर वारने। २९१। दोहा। कित सजनी है अनमनी अंसुआरती निसंक बड़े भाग नन्दलाल सों झहूं लगत कलंक। २९२। उपालम्भ उदाहरण। कवित्त। पान की कहा चली कहा पानी को न पान करै आहि कर उठत अधिक उर आधिके। कवि मतिराम भई विकल बिहाल बाल राधिके जिवावै अनंग अपराधिकै। याही को कह्यो ब्रज सब दिन

चाँदनी सें करी है उजारि हूजं ऐसी रीति लाधिकै । जैसे तुम्हे मो-
हन बिलोको याकी ओर तें सबेरहूं सो बैरिन निलोके बेर ।
साधिकै । २९३ । दोहा । बाको मन लीन्हौं ललन बोल्यो बोल
रसाल । झुकति तनक ही बात में ललित बेलि लौं बाल । २९४ ।
परिहास यथा उदाहरण । कवित्त । गौने के द्यौस कहूं सखि
रास सहेलिनि को मिल के गन आयो । कंचन के बिछिया प-
हिरावति प्यारी सखी परिहास बढ़ायो । पीतम सोत समीप ह-
सा बजैयों कहिके पहिले पहिरायो । कालिन्द कुंज चलाइबे को
कर ऊंचो कियो पै चल्यो न चलायो । २९५ । दोहा । मुसकात होन
लाल की परी कपोलन आनि । कहा छिपावत चतुर तिय क-
न्त दन्त छत जानि । २९६ । दोहा । कुंज कुसुम बनावन सखी क-
चलाय मुसकाय । गाढ़ गयो उरोज पिय बिहँसी भौंह चढ़ाय ।
। २९७ । अथ दूती लक्षण । दोहा । निपुण दूति तामें सदा दूती
ताहि बखान । उत्तम मध्यम अधम यों तीन भांति सो जान । २९८ ।
अथ उत्तम दूती लक्षण । दोहा । मोहे जो मन बोल के न कर
बचन अभिराम । नाहि कहत कविराज यह उत्तम दूती नाम ।
। २९९ । अथ उदाहरण । कवित्त । जा दिन मति रास मुसक्या-
नि बाके देखे तुम तादिन ते चढ़ी रही तिय पियराई पर । नेक
उठि देखो बड़भाग हैं तिहारे लला जोलि राखो राधि के क-
न्हाई हिय राई पर । दूनी दुति छाई देह आई दुवी पियराई सो
न वारिये तिया की पियराई पर । आवत न भौन बनावति ना
आभरन है तन कांति सुधा निधि सिखराई पर । ३०० । दोहा ।
तिय के हिय के हनन को भयो पंच सर बीर । लाल तुम्हें बस
करन को रहे न तरकस तीर । ३०१ । अथ मध्यम दूती लक्षण

भाल लसी । मतिराम सु बाले आवत नीरे निवारति भौंरन की ।
आवली । हरि के मन मोहन सों सकुची कह्यौ चाहति आप-
की ओर लसी। चित चोर लिया दृग जोरि तिया मुख मोरि कछू मु-
सकाय चली। दोहा । ३१० । सहज बात बूझत कछु बिहसि न-
वाई ग्रीव । तरुन हिये तरुनी दई नये नेह की सीव । ३११ । अ-
थ अनुभाव लक्षण । दोहा । जे अनुभावहि जानिये जो हैं सा-
त्विक भाव । रस ग्रंथन अवलोकि के बरनत सब कविराव ।
। ३१२ । दोहा । स्तंभ स्वेद रोमांच स्वर भंग कम्प वैवर्ण्य । आंसू
और प्रलाप कहि आठौं ग्रंथनि निर्णय । ३१३ । अथ स्तम्भ ।
लक्षण । दोहा । लज्जा हर्षादिकन तें अचल होत जहं अङ्ग ।
स्तम्भ कहत कवि तासु को जे प्रवीन रस रङ्ग । ३१४ । अथ उदाहरण ।
। कवित्त । देखत ही मतिराम रसाल गही सखि प्यारी की भेसनि गाढ़ी ।
चाहिबे की चित चाह भई हिये में कुलकानि की कानि काढ़ी । पा-
ई सौं सखी में न सकै के भई मिस लाज निवारि फिर ठाढ़ी ।
संग सखी न के जानि दुरावत आनन आनन्द की रुचि बाढ़ी ।
। ३१५ । दोहा । पाय कृष्ण एकान्त में अंक भरी ब्रजनाथ ।
एकान्त को लिच कारनि है काढ्यो कात नहिं हाथ । ३१६ ।
अथ स्वेद लक्षण । दोहा । हर्ष लाज भय कोप श्रम इत्यादि-
क ते होय । मानो प्रगटत देह ते स्वेद कहावत सोय । ३१७ ।
उदाहरण । कवित्त । किंकिनि नेवर की झनकारनि चारु प-
सारि महा रस जालहि । काम कलोलनि में मतिराम कलानि ।
निहाल कियो नंदलालहि । स्वेद के वृन्द लसे तन में रति अन्तर-
ही लपटाय गोपालहि । मानो चली मुकताफल पूजन हेमलता
लपटाती तमालहि । ३१८ । दोहा । कुच तें श्रम जलधार चलि

मिल रोमावलि रंग । मनो मेरु गिरि तर हटी भयो सिता सित संग। ।३२९। अथ रोमांच लक्षण। दोहा। हरष भयादिक ते प्रगट । रोम उमग जो अंग। ताहि कहत रोमांच हैं कवि जन सुमति उतङ्ग। ।३३०। अथ उदाहरण । कवित्त । चन्द मुखी हांसी में । चमेली की लतासी होति चम्पक लतासी जोति अंगन धरनि है ।कवि मतिराम तेरी अंग की सुवास लहे को नवेली ऐसी बात जानी न परति है । ने सुक निहारे ते नवेली नैन कोरनि सो ऐसी अद्भुत की कलानि उच्चरनि है। सुन्दर ललित माल श्याम रसिक रसाल सों कदम्बतें पुलकि सु फूलनि सों करति है ।३३१। दोहा । जौन अङ्ग ढिग है कढ़ी छुई छैल की चाह। अबहूं लों अवलोकिये पुलक पटल ता ताहि। ३३२। अथ स्वर भंग लक्षण। दोहा। क्रोध हर्ष मद भीत तें बचन और विधि होय ।ताहि कहत स्वर भंग है कवि कोविद सब कोय।३३३। अथ उदाहरण। कवित्त। ताहि लै आई अली रति मन्दिर जाकी लगे रतिहू परछांहीं। आय गयो मतिराम तहां जिन कोटिन काम कला रस गाहीं। देखत ही सिगरी वधुरी पकरी हँसि पै तिया की पिया बाहीं। लाजन तें स्वर भंग भई सो कही मुख चन्द मरू करि नाहीं।३३४। दोहा। काहा जनावत चातुरी काहा चढ़ावति भौंह अध निवारे अंखियानि सों सौंहें कीजति सौंह।३३५। अथ कम्प लक्षण। दोहा। क्रोध हर्ष भय आदि ले थर थरात ज्यों देह। ताहि कम्प यों कहत हैं कवि कोविद मति गेह। ३३६। अथ उदाहरण। कवित्त। चन्द मुखी आप विन्द की मालनि गूंथनि रूप अनूप बिगारयो।काम सरूप तहां मतिराम । अनन्द सों नन्द कुमार सिधारयो। देखत कम्प छुट्यो तिन

कै मन यौं चतुराई को बोल उचार्यो। सीरे सरोजनि सों सजनी कर कंपत आत न हार संवार्यो। ३२७। दोहा। लाल बदन लखि लाल के कुचन कम्प कछि होति। चपल होत चकवा मनो चाहि चंद की ज्योति। ३२८। अथ वैवर्ण्य लक्षण। दोहा। मोह क्रोध भय आदि तें बरन और विधि होय। ताहि कहत वैवर्ण्य हैं सकल सयाने लोय। ३२९। अथ उदाहरण। कवित्त। छल सों छबीली कों सहेलिनि लिवाय करि उपर आपनी रूप रच्यो जाय ख्याल कौं। कवि मतिराम भूषननि की झनक सुनि चाहि यौं चपल चितु रसिक रसाल कौ। अली चली सकल अलोक सिसकारि करि आवत निहारि करि मदन गोपाल कौ। लालन कौं इन्दु सों बदन अवलोकि अर बिन्दु सो बदन कुम्हिलाइ गयो बाल कौ। ।३३०। दोहा। बाल रही इक टक निरखि लाल बदन अरबिन्द। सियराई नैननि परी पियराई मुख चन्द। ३३१। अथ अश्रुत का लक्षण। दोहा। हर्ष दुःख भय आदि तें जल। आवै अखियानि। ताहि बखानत अश्रु कहि ग्रंथन को मत जानि। ३३२। अथ उदाहरण। कवित्त। बैठे हुते लाल। मनमोहन सोहनो बाल छिनकु सकुच रारवे गुरुजन भीर कौ। कवि मतिराम दीठ और की बचाय देखे देखत हीं। और भय रारवे अवधीर कौ। तब को न मोह धरै मन। को रवबर भली आंखिन सों छायो पुर आनन्द के नीर। कौ। उमंगि हिये तें आयो प्रेम को प्रवाह तामें लाज गिर परी जैसे तरु बर तीर कौ। ३३३। दोहा। बिन देखे को चले दुख सुख को देखे जाहि। कहो लाल इन दृगनि के अंसुआ क्यों ठहराइ। ३३४। अथ प्रलय का लक्षण। दोहा।+।

जौन दृगन में होत है सोही सकल निरोध। हर्ष दुक्खक्ख भय आदि तें प्रथम कहत मति शोध। उदाहरण। कवित्त। आछिन तें छवि सों मुसक्यात कहा निरखे नन्दलाल बिलासी। ता छिन तें मन। हीं मन में मतिराम पियै मुसक्यान सुधासी। नेकु निमेष न लागन नैननि चौकि चितै तिय देव नियासी। चन्द मुखी न हलै न चलै चित्रचात निवास में दीप सिखासी। ३३६। दोहा। तोमें अनलिख में लला सोहन मूरति मैन। अनलिख नैन सुनैन पै निरखत अनमिष नैन। ३३७। अथ जम्हा लक्षण। दोहा। जम्हा को कवि कहत हैं नवमों सात्विक भाव। उपजै आलस आदि तें बरनत सब कवि राव। ३३८। अथ उदाहरण। कवित्त। केलि करि। सकल रीति आत उठी अलसात नीर भरे लोचन जुगल बिलसतु हैं। लाजनि नें अंगनि दुरावति हैं बार बार सैंचि करि बसन। बिहारी बिहसतु हैं। कवि मतिराम आई आलस जम्हाई सुख। ऐसी मन भावती की छबि सरसतु हैं। अरुन उद्योत मानो शोभा के सरोवर में शोभा मानि शोभा को सरोज बिकसतु हैं। ३३९। दोहा। आयो पीव बिदेश तें बहुतक दिवस बिताय। सखी उठाई पास तें सांझहिं तें जमुहाय। ३४०। अथ श्रृंगार लक्षण। दोहा। जो बरनत तिय पुरुष को कवि कोविद रति भाव। ताको रसिक सु कवि हैं सो सिंगार रस राव। ३४१। दोहा। कहि सिंगार रस भाव है प्रथम कहत संयोग। ग्रंथनि को मत देखि के दूजो कहत बियोग। ३४२। अथ संयोग लक्षण। दोहा। प्रमुदित नायक नायका जहां सिंगार में होय। सोह संयोग सिंगार रस। बरनत सुमति उदोय। अथ उदाहरण। कवित्त। मान प्रिया। पिय आनन्द सों बिपरीति रची रति रंग रह्यो है। काम कलो-

चित की रीति। ३६१। अथ उदाहरण। कवित्त। ग्वालन बाल के। हेरी हिलावैं परी मन आइ सनेह की फांसी। काम कलोलनि में मतिराम लगी मानों बाटन मोद की आंसी। प्रीतम के उर बीज भयो तुलसी के विलास मनोज की गांसी। स्वेद बढ्यो तन कम्प उरोजनि आंखिन आंसु कपोलन हांसी। ३६२। दोहा। सकुचिन रहिये सांवरे सुनि गरबीले बोल। चढ़ति भौंह विकसत नयन विहंसत गोल कपोल। ३६३। अथ मोटाइत लक्षण। दोहा। बातन को प्रगटन भयो पुनि मिलाप की चाह। सो मोटाइत जानिये बरनत सब कवि नाह। ३६४। अथ उदाहरण। कवित्त। फूलि रहे द्रुम बेलिन सों मिलि पूरि रही अँखियां रस वारी। मोहि अकेली बिलोक यहां कछु और दसा भई दीठि निहारी। जैसी हुती हम सों तुम सों अब होयगी ऐसी ये प्रीति निहारी। चाहत जो चित में हित तो जिन बोलिये कुंजन बीच बिहारी। ३६५। दोहा। झूंठे हूं जग में लग्यो मोहिं कलंक गोपाल। सपनेहूं कबहूं हिये लगे न तुम नन्द लाल। ३६६। कुट्टमित हास लक्षण। दोहा। जहां दुक्ख अरु सुक्ख को प्रगट करै हिय बाम। परम ललित यह हाव। नहं कुट्टमित्त यह नाम। ३६७। उदाहरण। कवित्त। सोने की। सी बेलि अति सुन्दरि नवेली बाल होत ठाढ़ी हीं अकेली अलबेली द्वार महियां। मतिराम आंखिन सुधा की बरषा सी भई गई तब दीठ वाके मुख चन्द पहियां। नेकु नीरे जाय करि बातनि लगाइ करि कछु मन पाय करि आय गही बहियां। सैनन सों चरचि लई गानन में थकित भई नैनन में चाह करै बैननि में नहियां। ३६८। दोहा। प्रीतम को मन भावती मिलति बांह दै कंठ। बांही छूटै न कंठ तें नाहीं छूटै न कण्ठ। ३६९।

अथ विव्वोक लक्षण। दोहा। जो पिय के अभिमान तें करति अना-
दर बाम। ताहि कहत विव्वोक हैं जे प्रवीन गुण धाम। ३७०।
।अथ उदाहरण। कवित्त। मानहूं आयो है राज कहूं चढ़ि बैठ्यो
है ऐसे पलास के खोढ़े। गुञ्ज गरे सिर मोर पखा मतिराम हूं गा-
य चरावन छोढ़े। मोतिन को मेरो हार गहे हाथनि सो रही चूनरी
ओढ़े। ऐसे ही डोलत छैल भये तुम्हें लाज न आवत कामरी ओ-
ढ़े।३७१। दोहा। मान पियारो पग पर्‍यो तू न लखवति यह ओर।
ऐसो उरज कठोर तो न्याय ही उरज कठोर। ३७२। अथ ललित हा-
व लक्षण। दोहा। बैने आदि कि न सों सरस सकल आभरन अं-
ग। ललित हाव तासों कहत जे कवि वृद्ध उतंग। ३७३। अथ उ-
दाहरण। कवित्त। मन्द गयन्द की चाल चलै कट किंकिनि नेवर
की धुनि बाजे। मोती के हारनि मध्य हियरा हरिजू हुलास बि-
रान साजे। सारी सुही मति राम लसै मुख संग की नारी की यों
छवि छाजे। पूरण चन्द पियूष मयूष मनो परिवेष की रेख बिरा-
जे। ३७४। दोहा। बिरी अधर अंजन नयन मेहदी पग अरु पानि
तन कञ्चन के आभरन नीदि परे पहिचानि। ३७५। अथ बीहत
लक्षण। दोहा। जो परि पूरण होत नहिं सिय समीप अभिले-
ख। ताको विस्मत बखानियो जिन की कविता देख। ३७६। अ-
थ उदाहरण। कवित्त। सकल सहेलिन के पीछे २ डोलति है म-
न्द मन्द गौनु आजु आपुही करतु है। सनमुख होत सुख होत।
मति राम जबै पौन लागे घूंघट को पट उघरतु है। यमुनाके तट
वंशी वट के निकट नन्दलाल पै सकुचनि तें चार ह्यो न परतु
तुहै। तन तो तिया को बर भांवरे भरत मन सांवरे बदन पर भां-
वरे भरतु है। ३७७। दोहा। रूप सांवरो बदन पर सुधा सिं-

सुमें खेल । लखिवन सखै अँखियाँ सरसी परी लाज की जेल ।
२७८ । अथ वियोग शृंगार भेद । दोहा । प्यारी पीउ मिलाप बिन
होत नहीं आनन्द । सो वियोग सिंगार कों बरनत सब कवि वृन्द
। २७९। अथ वियोग को भेद । दोहा । कह्यो पूर्व अनुराग अरु
मान प्रवास विचार । रस सिंगार वियोग के तीनि भेद निरधार ।
२८०। अथ पूर्व अनुराग लक्षण । दोहा । जो पहिले देखे सुने
बाढ़े प्रेम को लाग । बिन मिलाप जो बिकलता सो पूर्व अनुराग
।२८१। अथ उदाहरण । कवित्त । न्यौते गये काहु गेह बढ़्यो प्रीति ।
रस दुहू के लगे दृग गाढ़े । लाल चले सैनि के घर कों निय अङ्ग
अनङ्ग की आग सों डाढ़े । ऊँचे अटा पर कांधे सहेली के ।
ठाढ़ी लिये चितवै दुख बाढ़े । मोहन जो मन गाढ़े करे पग द्वै
चले फिरि होत है ठाढ़े । २८२ । दोहा । निरख्यो नेह दुहून की
नई दई यह बात । स्रवति देह दुहून की त्यों पानी सर सात
।२८३। अथ मान भेद । दोहा । मान कहत हैं तीनि बिधि
लघु मध्यम गुरु मान । तिन के भेद बनाय के बरनत क-
वि मतिराम । २८४। अथ लघुमान भेद । दोहा । और बा-
म कों लखत जहँ लखै कान्ह को बाल । बरनत हैं लघु मा-
न सों छुटत तन काहि ख्याल । २८५। अथ उदाहरण । कवि-
त्त । देखति और तिया पिय सों लखि मान छबीली के नैन-
नि छायो । प्रीतम यों चतुराई करी मतिराम कछू परिहा-
स बढ़ायो । रीति रची बिपरीति जो प्रीतम ताको कवित्त
बनाय सुनायो । भूलि गई रिस लाजनि तें मुसक्याय पि-
या मुख नीचे को नायो । २८६ । दोहा । मान जनावति स-
खिन कों मनन मान की ठाट । प्रीतम नावन को लखै लाल

तिहारी बाट । ३८७। अथ मध्यम मानलक्षण । दोहा । पिय। मुख और नारिको सुनै नाम जहँ नारि । होत मान मध्यम तहाँ बरनत सु कवि विचारि । ३८८ । अथ उदाहरण । कवित्त । दोऊ आनन्द सों आँगन मांझ विराजैं असाढ़ की सांझ सुहाई । प्यारी के पूछत और तिया को अचानक नाम लियो रसिकाई । आयो चने मुंह में हँसि कोऊ तिया सर चाप सों भौंहैं चढ़ाई । आँखिन तें गिरे आंसू के बूंद सुहास गयो उठि हंस की नाई । ३८९। दोहा। भई देवता भाव सब वह तुम को बलि जाउं । वाही को सब ध्यान है वाही को सुख नाउं । ३९० । अथ गुरु मान लक्षण । दोहा । बोलत और तियान सों पिय को देखै बाम । होत तहाँ गुरु मान है बरनत कवि मति राम । ३९१ । अथ उदाहरण । कवित्त । । तेरे प्राण प्यारे कहूँ सहज सुभाव प्यारी काहू भी कही जो कछु बात काहू बाल सों । कवि मति राम मेरो कह्यो उर आनि । आली ठानो जन मान ऐसे मदन गोपाल सों । ताको ऐसी रिस करि अयान नीकी रीति नूतो दीप को सो ज्योति जग योबन रसाल सों । भौंहैं करि सूधी बिहसो है करि कपोल गोल सोहैं करि लोचन रसो हैं नन्दलाल सों । ३९२ । दोहा । बहु नायक सों बात में मान भलो न सयान । दुख सागर में बूड़ि है बांधि गरे गुरु मान । ३९३ । अथ प्रवास लक्षणम । दोहा । प्रीतम बसे बिदेश में बिरह जहाँ सर सार । बरणत तहाँ प्रवास है जे प्रवीन कविराय । ३९४ । अथ उदाहरण । कवित्त । घुरवान की धावन मानो अनंग तुरंग धुजा फहरान लगी । मतिराम समीर लगें लतिका बिरही बनिता थहरान लगी । मन में अल है छिति में अलछैं चपला की छटा छहरान लगी । परदेश में पीउ संदेश

न पायो पयोधि यहां चन्द्रसाल लगी। ४९५। दोहा। चलत लाल कौं मैं कियो सजनी हियो पखान। कहा करौं इकन्त नहीं इतै वियोग कृसान। ४९६। अथ वियोग शृंगार दशा कथन। दोहा। हौं कि वियोग शृंगार में प्रगट दशा दस जानि। प्रथम कहैं अभिलाष पुनि चिन्ता स्मृति मन मानि। ४९७। दोहा। गुन बखान। उद्वेग पुनि कहि प्रलाप उन्माद। व्याधि बहुरि जड़ता कहत कवि कोविद अविवाद। ४९८। अथ अभिलाष लक्षण। दोहा। ताहि कहत अभिलाष है ज्यों मिलाप की चाह। प्रेम कथन तें जानियें बरनत सब कविनाह। ४९९। अथ उदाहरण। कवित्त। मोर पखा मतिराम किरीट मनोहर मूरति सो मन लैगो। कुण्डल लोलनि गोल कपोलनि बोलनि नेह के बीजनि बैगो। लोल विलोचनि कोरनि सौं मुसक्याय इतै अरु ह्याय चितैगो। एक घरी घन से तन सौं अँखियानि घनो घनसारसौं दैगो। ५००। दोहा। जो मन लै कालो उड़ि गयो अब कोऊँ न पत्याइ। बसि मोहन बन बाल में रह्यो बनाय बनाय। ५०१। अथ चिन्ता लक्षण। दोहा। ध्यान मुख की भावना करै चित्त की चाव। चिन्ता तासों कहत हैं जे प्रवीन कवि राव। ५०२। उदाहरण। कवित्त। जैहो अकेली महा बन बीच जहाँ मतिराम अकेलोई आवै। आपने आनन चन्द की चाँदनी सौं पहिले तन ताप बुझावै। कूल कालिन्दी के कुंजन मंजुल मोर अमोल वे बोल सुनावैं। ज्यों हँसि हेरि लियो हियरा हरि ज्यों हँसि जो हियरे हरिलावैं। ५०३। दोहा। काम कहा कुल कानि सौं लोक लाज बिन जाइ। कुञ्ज बिहारी कुञ्ज में मिलैं मोहि मुसकाय। ५०४। स्मृति लक्षण। दोहा।

सखी सुनी प्रिय बाल कौ जो सुमिरन मन होय। स्मृति तासों कहि कहत हैं सब रस ग्रन्थ बिलोय। ४०५। अथ उदाहरण। कवित्त। आलस बलित कोरें काजर कलित मतिराम वै ललित अति पानिप धरत हैं। पंकज तें सरस हैं खंजन जुगन कों गरब तें सुमानि तें हरनि हरषत हैं। पर जिस घन बंक तीछन कटाछ वड़े लोचन विशाल उर पीरहि करतु हैं। गाढ़े ह्वै पड़े हैं न निसारे निकरत हैं नवान से। निसारें न बिसारें बिसरतु हैं। ४०६। दोहा। कौतुक हीं रति सुन्दरी नव सनेह सों बास। तन कुंडल मन प्रीति सों रंग कुंडल मन प्यास। ४०७। अथ गुण कथन। दोहा। बिरहा बीच जो पीय को सुन्दरता बिसराय। गुण कथन तासो कहत जे प्रवीन कविराय। ४०८। अथ उदाहरण। कवित्त। मोर पंखी मतिराम किरीट में कण्ठ बनी बनमाल सुहाई। मोहन की मुसक्यान मनोहर कुण्डल लोलनि में छबि छाई। लोचनलोलविशाल बिलोचनि कोन बिलोकि भयो बस माई। वा मुख की मधुराई कहा कहौं मीठी लगें अँखियानि लुभाई। ४०९। दोहा। सरद चन्द की चाँदनी नारि डारि किन मोहि। वा मुख की मुसक्यानि सरि कबहुँ कहो नहिं तोहि। ४१०।

अथ उद्वेग लक्षण। दोहा। बिरह बिथा की बिकलता जहाँ कछू न सुहाय। ताहि कहत उद्वेग हैं जे प्रवीन कविराय। ४११। अथ उदाहरण। कवित्त। चाहि तुम्हें मतिराम रसाल परी तिय के तन में पियराई। काम के तीछन तीरन सों भरि मारत। तीर भयो हियराई। नेरे बिलोकि वे को उत कारिठत कण्ठ। लों आय रह्यौ जियराई। नेकु परे न मनोज के ओजनि सेज सरोजन में सियराई। ४१२। दोहा। जे अङ्गनि पिय संग में बा-

रत छूते पियूष। ते बिछुरे बिछुराक से भये मयंक मयूष। ४१३।
अथ प्रलाप लक्षण। दोहा। उन कारनते कहत हैं जहां मोह मय बैन। बरनत जहां प्रलाप हैं जे प्रवीन रस ऐन। ४१४।
अथ प्रलाप उदाहरण। कवित्त। कहियो सन्देसो प्राण प्यारी सों गवन कीन्हों बिक्रम बिलास जैसें आपने परस कें। चन्द कार बरछी नि छेदि डारो नीर तीक्षन मनोज के कछु न करि न सकें। कवि मतिराम या कुलिश के धातु कहूं मान तुम कोकिल का कूकनि सकें। कैसे दरकत मेरो हियो सदा सहि रह्यो तेरे कुचनि पट कठोरनि कमर सों। ४१५। दोहा। बिकल लाल को बाल तू क्यों न बिलोकति आन। बोलि के कितनो सों काहे बोलि तिहारे तानि। ४१६। अथ उन्माद लक्षण। दोहा। उन कारनतें मोह मय वृथा कहत कछु काज। नाहि कहत उन्माद हैं कवि कोविद सिरताज। ४१७। अथ उदाहरण।
। कवित्त। जा छिन तें मतिराम कहूं मुसक्यात कहूं निरखे नंदलालहि। ता छिन तें छिनही छिन में छिन बाढ़ि बिथा हू बियोग की बालहि। यों छाति है किसलय कालों गहि बूझति स्याम शरीर गोपालहि। औरी भई है मयङ्क मुखी भरि भेटत हैं भुज अंक तमालहि। ४१८। दो०। रोय उठे छिन उठि हंसे छिन उठ चले रिसाय। बैरी करी बनाइ ने लायक रूप ठगाय। ४१९। अथ व्याधि लक्षण। दोहा। काम पीर तें पिय रहा ताप दूबरी होय। तासों व्याधि बखान हैं कवि कोविद सब कोय। अथ उदाहरण।
। कवित्त। बरसा सी लागी निशिबासर बिलोकनि वाको धरबाह भयो नावनि उतारि वो। रह्यो जात कौन पै सुकवि मतिराम अब बिरह अनल ज्वाल जालनि सें जरि वो।

जैयत से मोपे को उड़ैयत सों उसासनि सों हम को लौ भयो ऊत हेरत हेरिवो। कियो कहा चाहत सो कहो न कुंवर कान्ह रह्यो अब वाको उचारन को करिवो।४२१। दोहा। देखि परे नहिं दूवरी सुनिये श्याम सुजान। जानि परे परि अंक में अंग आंच। मतु मान।४२२। अथ जड़ता लक्षणं॥ उत्कण्ठादिक तें जो है अचल चित्त अरु अंग। तासों जड़ता कहत हैं जे प्रवीन रस रंग।४२३। ।उदाहरण। कवित्त। सूंघे न सुवास रहे रंग राग तें उदास भूल गई सुरति सकल खान पान की। कवि मतिराम इक टक अनविष नैनन वूझे न कहत वात अरु समझे न आन की। थोरी सी हसनि ओप गोरी ऐसी डारी ठग वोरी कारी गोरी तें किशोरी वृषभान की। तव तें विहारी वह है भई वखान कैसी जव तें निहारी रुचि मोर के परवान की।४२४। दोहा। अन मिष लोचन वाल के यातें नन्द कुमार। सीच गई जरि सींच ही विरहानल की मार।४२५। समुझि समुझि सव रीझि है सज्जन सु कवि समाज। रसिकन कों रस को कियो नयो ग्रंथ रसराज।४२६।

इति श्री रसराज ग्रन्थ समाप्तः

कुंजी परीक्षा

जिसको

श्रीयुत मौलवी सय्यद जमीलुद्दीन

अहमद साहब डिप्टी इन्सपे

क्टर व पण्डित गोपीनाथ

साहब सब डिप्टी इन्सपेक्टर

मदारिस जिलअ मैनपुरी

की आज्ञानुसार

और अपने अध्यापक पण्डित सुन्दरलाल

साहब मुदर्रिस तहसीली करहलकी

इच्छानुसार

गयादीन विद्यार्थी पूर्वोक्त मदरसह

ने बनाई ॥ सन १८७७ ई०

पहली बार ५०० आगरा अखबार में छपी मोल -)॥

ईश्वर के धन्यवाद और गुरु के चरणारविन्दों की वंदना के पश्चात् विदित हो कि यह छोटी सी पुस्तक जिसमें बहुधा कायदों और आवश्यकताओं के ५८ प्रश्नोत्तर हैं जिनका अवसर काम तहसीली-इम्तिहान जबान देसी में पड़ता है मैंने अपने स्वामी व अध्यापक पण्डित सुन्दरलाल साहब मुदर्रिस मदरसे तहसीली कादल जिला मैनपुरी की आज्ञा पाकर लिखे हैं आशा है इस ग्रन्थ से विद्यार्थी लोग पूर्वोक्त परीक्षा में सहायता पावैं और जो कुछ मुझ अल्प बुद्धी ग्रन्थ कर्ता से भूल चूक हुई हो उसे क्षमा करैं इत्यलम् किमधिकम्

अथ कुंजीपरीक्षा

॥श्रीगणेशाय नमः॥श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः॥

प्रश्न १ योग करना किसे कहते हैं

उत्तर १ एक जाति की कै संख्याओं के इकट्ठे करने को योग करना कहते हैं जैसे ३ रु० + २ रु० = ५ और १०० मन + ५ म = १०५ मन

प्र० २ बाकी निकालना किसे कहते हैं

उ० २ एक जाति की दो संख्याओं में बड़ी में से छोटी के घटाने को बाकी निकालना कहते हैं जैसे ५ रु० - ३ रु० = २ रु० और १००० मन - ४२५ मन = ५७५ मन

प्र० ३ गुणा करना किसे कहते हैं और गुण्य गुणक और गुणन फल किसे

उ० ३ जिस संक्षेप रीति से एक ही संख्या को कै बार जोडते हैं उसे गुणा करना कहते हैं और उस एक ही संख्या को गुण्य और जोड़ने की संख्या को गुणक और जो योग हो उसे गुणन फल कहते हैं जैसे ५ को ३ बार जोडनो ५ + ५ + ५ वा ५ × ३ = १५ तो इसमें ५ गुण्य और ३ गुण

क और १५ यह गुणन फल कहावेगा ॥

प्र०४) भाग देना किसे कहते हैं और भाज्य भाजक और लब्ध किसे ॥

उ०४) दो संख्याओं में बड़ी में से छोटी को कै बार घटाने को भाग देना कहते हैं और उस बड़ी संख्या को भाज्य और छोटी को भाजक और घटाने की संख्या को लब्धि कहते हैं जैसे १५में से ५ तीन बार घटाओ तो १५-(५+५+५) १५ ÷ ५ = ३ तो यहाँ १५ भाजक और घटाने की संख्या तीन इसे लब्धि कहेंगे ॥

प्र०५) मिश्र योग किसे कहते हैं ॥

उ०५) मिश्र अर्थात् अपने भागों से जुड़ी हुई संख्याओं के योग को मिश्र संकलन वा मिश्र योग कहते हैं जैसे ॥

१।=)४ + १-)४ = ३।=)८

प्र०६) मिश्र बाकी किसे कहते हैं

उ०६) अपने भागों से जुड़ी हुई दो संख्याओं के अन्तर करने को मिश्र घटाना कहते हैं जैसे २॥=)८ - १।-)४ = १।-)४

प्र०७) मिश्र गुणन किसे कहते हैं

उ०७) एक संख्या में कै तरह की मिली हुई संख्याओं के कै बार जोड़ने से जो जोड़ होता है उस के

निकालने की संक्षेप रीति को मिश्र गुणा कह
ते हैं जैसे
१।-)४ को ३वार जोड़ा तो १।-)४+१।-)४+१।-)४
या १।-)४ × ३ = ४)रु॰ के

प्र॰८) मिश्र भाग किसे कहते हैं
उ॰८) एक जाति की संख्या के जिसमें कै तरह की
संख्या मिली हों उस के कै तुल्य भाग करने
से जो एक भाग लब्धि होती है उस के निकाल
ने की संक्षेप रीति को मिश्र भाग कहते हैं
जैसे २॥=)८ को २ स्थान में तुल्य २ बांटो -
२॥=)८ ÷ २ = १।-)४

प्र॰९) त्रैराशिक किसे कहते हैं
उ॰९) त्रै राशिक में तीन राशें जानी हुई होती हैं
और उन से चौथी अज्ञात राशि जानी जा
ती है जानी हुई तीन राशों में से दो राशें तो
एक जाति की होती और तीसरी गैर जाति
की और उसी गैर जाति का उत्तर आता है
जैसे ५ आम १५ पैसे के आते हैं तो २०
आम कितने के आवेंगे

$$\frac{१५ \times २०}{५} = ३ \times २० = ६० \text{ पैसे के}$$

प्र॰१०) भिन्न किसे कहते हैं
उ॰१०) किसी संख्या को पूर्ण मान कर उस के कै

तुल्य भाग किये जायं तो उस प्रत्येक भाग को भि
न्न कहैंगे जैसे एक छड़ी के तुल्य चार हिस्से
किये गये हैं तो प्रत्येक हिस्से को $\frac{१}{४}$ अर्थात
चतुर्थांश कहैंगे

प्र० ११) दशमलव वा दशांश किसे कहते हैं

उ० ११) जिस भिन्न का हर दश वा दश का कोई घा
त हो उसे दशम लव वा दशांश कहैंगे
जैसे $\frac{५}{१०} = .५$, $\frac{५}{(१०)^२} = \frac{५}{१००} = .०५$, $\frac{५}{(१०)^३}$
$= \frac{५}{१०००} = .००५$

प्र० १२) दशम लव कै प्रकार का है उन प्रकारों के
क्या नाम हैं

उ० १२) दो प्रकार का है एक आवर्त्य और दूसरा अ
नावर्त्य जैसे $.\dot{४}०\dot{९}$, $.१\dot{६}$ यह
आवर्त्य और .५, २.२५ यह
अनावर्त्य है

प्र० १३) आवर्त्य और अनावर्त्य की पहचान
क्या है

उ० १३) जिस भिन्न का अंश हर के भाग देने से
निश्शेष न हो और जो लब्धि एक बार मि
ले वही बार २ मिलता जाय वा पहले
कुछ लब्धि मिल कर फिर एक ही संख्या
बार २ लब्धि मिले तो उसे आवर्त्य दशम
लव कहते हैं जैसे $\frac{९}{२२} = .४\dot{०}\dot{९}$ यहां पहले

चार लब्धि मिल चुके हैं और ०९ यह बार
बार लब्धि मिलता है इस लिये यह आव
र्त्य दशमलव है

(ख) जिस भिन्न का अंश हर के भाग देने से नि
श्शेष हो जाय उसे अनावर्त्य कहते हैं
जैसे $\frac{१}{४}$ = ·२५ यह अनावर्त्य है

प्र० (४) आवर्त्य दशमलव से भिन्न बनाने की क्या
रीति है

उ० (४) पहले विद्यार्थियों को कोष्ठ के मध्य जो
दोहा लिखा है उसे स्मरण करना मुनासि
ब है (एकबार जो आवे अंक ताहि घटावे
सब में निश्शंक ॥ बार २ के छेद में एक
हीन कर दय। एक बार के छेद सो गुणे
सो उत्तर होय) इस का अभिप्राय यह है
कि एकबार की लब्धि को सम्पूर्ण में से घ
टावे वह साधारण भिन्न का अंश और
बार २ के छेद में एक कम कर उसे एक बार
के छेद से गुण देने से जो अंक हो वह सा
धारण भिन्न का हर होगा जैसे ·४०९ य
हां चार आ चुके हैं ·०९ बार २ आते जा
ते हैं पूर्वोक्त रीत्यानुसार ·४०९ = $\frac{४०९-४}{९९०}$

= $\frac{४०५}{९९०}$ = $\frac{९}{२२}$ और भी जैसे ५·२१६ यहां

चार सही और दशमलव दो आचुके हैं और
२१६ आते जाते हैं तो करना चाहिये कि

$५.२१६ = \frac{५२१६-५२}{१०(१००-१)} = \frac{५१६४}{९९०} = \frac{२०८२}{४९५}$

प्र० २५) घात क्रिया किसे कहते हैं और घातमा
पक किसे

उ० २५) एक को किसी समान संख्या से जे वा
र गुणे तो उस गुणने की संख्या को
घात मापक कहते हैं जैसे

(१×३) या $(३)^{१} = ३$, $(१\times३\times३)$ या
$(३)^{२} = ९$, $(१\times३\times३\times३$ या $(३)^{३} = २७$
यहां १, २, ३ ये घात माप कहते हैं
क्योंकि यहां १ को तीन १, २, ३ बार
गुणा है

प्र० २६) मूल क्रिया किसे कहते हैं
उ० २६) जो संख्या किसी दूसरी संख्या का घात
होगा उस संख्या का वह दूसरी संख्या वही घा
त मूल कहाती है इस मूल जानने के प्रकार
को मूल क्रिया कहते हैं जैसे ३ का द्वि
घात वा वर्ग ९ है और ९ का वर्ग

मूल ३ है

प्र० १७) वर्ग मूल कै प्रकार का है और उन के नाम क्या हैं

उ० १७) दो प्रकार का एक करणीगत और दूसरा अकरणीगत कहलाता है

प्र० १८) करणी गत और अकरणी गत का लक्षण क्या है

उ० १८) जिस संख्या का पूरा वर्ग मूल न मिले वह करणी गत कहाता है जैसे ५, ७ का वर्ग मूल पूरा नहीं मिलेगा इस लिये यह करणी गत कहलावेगा

और इस से विपरीति अर्थात् जिस संख्या का वर्ग मूल पूरा मिल जाय उसको अकरणीगत कहते हैं जैसे १००, ९ का वर्ग मूल १०, ३ पूरा है तो यह अकरणी गत कहावेगा

प्र० १९) रूपांतर वा रूप भेद किसे कहते हैं

उ० १९) भिन्न पद को एक रूप वा नाम से दूसरे रूप वा नाम में ले जाने के प्रकार को रूपांतर वा रूपभेद कहते हैं

जैसे $\frac{१}{२}$, $\frac{१}{४}$ इस का रूपांतर $\frac{२}{४}$, $\frac{१}{४}$ वा $\frac{४}{८}$, $\frac{२}{८}$ है

प्र० २०) व्याज किसे कहते हैं

उ०२८) लोक में जब रुपया उधार लेते हैं तो फ़ी सैकड़े के अनुमान से प्रति महीने वा साल जो बढ़ती देते हैं उसे व्याज कहते हैं और जो उधार दिया जाता है उसे मूल और फ़ी सैकड़े जो बढ़ती ठहर ली है उसे व्याज की दर कहते हैं जैसे १ वर्ष में १००) रुपया पर ५) रुप० व्याज है तो ३००) रु० पर उसी हिसाब से साल भर का क्या व्याज होगा

$$\frac{300 \times 5}{100} = 3 \times 5 = 15 \text{ रु०}$$

प्र०२९) मिती काटा किसे कहते हैं

उ०२९) जो रुपया किसी नियत काल के वास्ते फ़ी सैकड़ा कुछ व्याज दर ठहरा कर दिया गया और फिर उस नियत काल से पहले लिया जाय तो जितने समय पहले लिया जाय उस समय का ठहरे हुए हिसाब से जो व्याज काटा जावेगा उस काटने के प्रकार को मिती काटा कहते हैं जैसे ५ रुपया सैकड़ा फ़ी साल व्याज की दर से ५२५ रुपये पांच वर्ष में देने हैं पर वह रुपया तीन ही वर्ष के अन्त में दिया जाय तो क्या काटा होगा

यहां रुपया नियत समय से दो वर्ष पूर्व लिये हैं इसलिये दो वर्ष का व्याज काट

ना चाहिये

१ = २ :: ५ = १० रु॰ की॰ सै॰ २ वर्ष

के काटने चाहिये इसलिये १०० + १० = ११०::११०

$= ५२५ :: १० = \frac{५२५ \times १०}{११०} = \frac{५२५}{११} = ४७\frac{८}{११}$ रु॰

काटना चाहिये

प्र॰२२) चक्र वृद्धि व्याज किसे कहते है

उ॰२२) चक्र वृद्धि व्याज वह कहाती है जिसमे कुछ काल नियत करके उतने काल का ठहरी हुई दर से जो व्याज होता है उसे मूल धन में जोड़ के उस योग को मूल धन मानते और फिर उस मूल धन पे नियत काल का फिर उसी दर से व्याज लाते हैं फिर व्याज समेत मूल को मूल धन मानते हैं ऐसे जितने चक्रों का लाना हो उतने चक्रों का लाते हैं ऐसा करने से पीछे का जो व्याज आवेगा वह चक्र वृद्धि व्याज कहावेगा जैसे १ वर्ष में १००रु॰ पर ५ रु॰ व्याज है तो इसी हिसाब से २ वर्ष में ४००रु॰ पर चक्र वृद्धि व्याज क्या होगा

$१०० = ४०० :: ५ = \frac{४०० \times ५}{१००} = ४ \times ५ = २०$ रु॰

यह ४०० का सालभर का व्याज है इसे ४०० में जोड़ा तो ४०० + २० = ४२० फिर त्रैराशिक किया $१०० = ४२० :: ५ = \frac{४२० \times ५}{१००} = \frac{४२०}{२०} =$

$\frac{४२०}{२०}$ = २१ यह ४२० का ब्याज हुआ परन्तु ४२० में भी २० ब्याज के मिले हुए हैं इस लिये २० + २१ = ४१ यह चक्र वृद्धि ब्याज है

प्रकारान्तर से

१०० = १ :: ५ : $\frac{१}{२०}$ १ + $\frac{१}{२०}$ = $\frac{२१}{२०}$

$(\frac{२१}{२०})^२$ = $\frac{४४१}{४००}$ १ = ४०० :: $\frac{४४१}{४००}$

$\frac{४०० \times ४४१}{४००}$ = ४४१ यह मिश्र धन चक्र वृद्धि के हिसाब से हुआ परन्तु मूल ४०० हैं इसलिये ४४१ − ४०० = ४१ यह चक्र वृद्धि ब्याज हुआ

बीज गणित

प्र० २३) बीज गणित किसे कहते हैं

उ० २३) जिसमें बहुधा अङ्कों की जगह अक्षरों से क्रिया की जाती है उसे बीज गणित कहते हैं

प्र० २४) राशि किसे कहते हैं

उ० २४) राशि शब्द का अर्थ समूह वा ढेर है

प्र० २५) सम महत्तमापवर्तक किसे कहते हैं

उ० २५) सम महत्तमापवर्तक उस बड़े से बड़े भाजक को कहते हैं जिस का दो आदि राशियों में निश्शेष भाग लग जाय जैसे ४, ८ का सम महत्तमापवर्तक ४ है और इसी प्रकार १८ अ० १२ अ का सम म० ४ अ है

प्र०२६) लघुतम समापवर्त्य किसे कहते हैं

उ०२६) लघुतम समापवर्त्य उस छोटे भाज्य को कहते हैं जिसमें दो आदि राशियों का निःशेष भाग लग जाय जैसे ८, १२ का लघुतम समापवर्त्य २४ है और इसी प्रकार १५ अ, २० अ का ६० अ है

प्र०२७) समीकरण किसे कहते हैं और वह कै प्रकार का है

जो दो पक्षों का साम्य दिखलाता है उसे समीकरण कहते हैं और दो प्रकार का है एक प्राकृत समी० और दूसरा काल्पित समी०

प्र०२८) प्राकृत समी० किसे कहते हैं और काल्पित समीकरण किसे

उ०२८ जिस समीकरण के पक्ष एक रूप होते हैं वा जिस के दोनों पक्षों को सवर्णित करने से वे एक रूप हो जाते हैं उसको प्राकृत समी० कहते हैं जैसा प + ६ = प + ६ वा $\frac{[illegible]}{प+६}$ = प + ६

(ख) काल्पित समी० उसे कहते हैं जिस के दोनों पक्ष भिन्न रूप हैं और सवर्णित करने से भी एक रूप नहीं होते केवल उन के मान परस्पर समान कल्पना किये हैं जैसे अ + क = ग इस का अर्थ यह है कि अ एक ऐसी काल्पित संख्या है जिसमें क

जोड़ देने से ग के तुल्य हो जाती है

प्र० २९) एक वर्णी समी करण किसे कहते हैं और अनेक वर्णी किसे

उ० २९) जिस समी० में एक ही अव्यक्त है उसे एक वर्णी और जिस में अनेक अव्यक्त हों उसे अनेकवर्णी समी० कहते हैं जैसे (१) य + व = क और (२) $\begin{cases} य + र = ५ \\ य - र = १ \end{cases}$ क्रम से एकवर्णी और अनेकवर्णी

प्र० ३०) छेद गम किसे कहते हैं

उ० ३०) परस्पर समान वा विषम दो पक्षों में यदि एक वा अनेक पद हों तो जिस क्रिया से उन दो पक्षों का साम्य वा वैसम्य न बिगड़ के उन के छेद वा छेदों को उड़ा देते हैं उस क्रिया को छेद गम कहते हैं जैसे $\frac{२}{य} = \frac{२}{य+४}$ इस का छेद गम किया तो २य = य + ४

प्र० ३१) सम शोधन वा पक्षांतरा नयन किसे कहते हैं

उ० ३१) बीज गणित में पद को वा पद के समूह को पक्ष कहते हैं ऐसे दो पक्षों में किसी एक ही राशि वा दो समान राशियों को जोड़ देने वा घटा देने इस क्रिया को सम शोधन वा पक्षांतरा नयन कहते हैं

प्र० ३२) दृढ़ और अदृढ़ राशि किसे कहते हैं

उ०३२) जो राशि आप और एक के सिवाय किसी दूसरी रा
शि से भागा नहीं जाता उसे दृढ़ और जो भागा जा
ता है उसे अदृढ़ कहते हैं और अदृढ़ राशि दो
वा बहुत दृढ़ राशियों का गुणन फल होता है
जैसे य, र, य+र, य-र इत्यादि ये सब दृढ़ राशि
हैं और र अ, र^२, यर, क(अ-के) इत्यादि ये
सब अदृढ़ राशि हैं

प्र०३३) वर्ग समी करण कै प्रकार का है उस प्रत्येक
प्रकार का संक्षेप वर्णन करो

उ०३३) वर्ग समी० दो प्रकार है एक वर्ग समी० और
दूसरा मध्य माहरण जिस समी० करण
में क्रिया करते २ अव्यक्त राशि का केवल वर्ग
ही रह जाय जैसे य^२=९६ और जिस समी०
में अव्यक्त राशि का वर्ग और उस का पहला
घात दोनों रहते हों उसे मध्यमा हरण कहते
हैं जैसे य^२+य=२० यह मध्यमाहरण का स्वरूप है

रेखा गणित

प्र०३४) रेखा गणित किसे कहते हैं

उ०३४) जिस गणित में रेखा और कोन का आलंब लेकर
गणित करते हैं उसे रेखा गणित कहते हैं

प्र०३५) परि भाषा किसे कहते हैं

उ०३५) शब्दों के वाक्यों के विशेष रूप निरूपण करने
को परि भाषा कहते हैं

प्र०३६) अवाध्योप फल किसे कहते हैं
उ०३६) ऐसी फल और ग्राह्य बातों को अवाध्योपफल कहते हैं
प्र०३७) स्वतःसिद्धि वा स्वयं सिद्धि किसे कहते हैं
उ०३७) असंशय वा स्वतः प्रकाशवान् प्रत्यक्ष बातों को स्वतः
सिद्धि वा स्वयंसिद्धि कहते हैं
प्र०३८) साध्य किसे कहते हैं
उ०३८) साधनीय वस्तु के निर्देश का नाम साध्य है
प्र०३९) साध्य के प्रकार का है और उन के नाम क्या हैं
उ०३९ दो प्रकार का है एक वस्तूप पाद्य और दूसरा प्रमेयोपपाद्य
प्र०४०) वस्तूप पाद्य किसे कहते हैं
उ०४०) क्रिया के द्वारा किसी वस्तु के उत्पन्न करने को वस्तूप
पाद्य कहते हैं और वस्तूप पाद्य साध्य में कुछ खण्ड
लिये हुए होते हैं और कुछ खण्ड उन्हीं खण्डों के अ
नुसार बनाये जाते हैं जैसे प्रथम अध्याय के पहले
साध्य में एक सीधी रेखा दी हुई है और उसी के तुल्य
दो रेखा और बनाई गई हैं यह साध्य अपनी अर्थात्
सीधी तरह से सिद्धि की जाती है
प्र०४१) प्रमेयोप पाद्य किसे कहते हैं
उ०४१) किसी पदार्थ के सिद्धांत और विशेष धर्म के निर्णय
करने को प्रमेयोप पाद्य कहते हैं प्रमेयोप पाद्य
वह साध्य है जिसमें सब खण्ड मौजूद होते हैं और
वे खण्ड दो प्रकार के हैं एक हेतु दूसरे फल हेतुओं के
अनुसार फल सिद्धि किये जाते हैं जैसे प्रथम अ

ध्यायकी चौथी साध्य में दो भुज और उन्हीं के मध्य के कोनों की तुल्यताई होइ है और आधार और आधार परके कोनों के सिद्धि होना फल है यह साध्य दो तरह से सिद्ध होती है अपनी और खु ल सो यानी एक सूधी तरह जैसे पहले अध्यायकी ४ थीं साध्य और दूसरी उलटी रीति से जैसे पूर्वोक्त अध्याय की ६ थीं साध्य मुख्य यह है कि फलों को उलटा करके सिद्धि करते हैं

नाम अध्याय	वस्तुप पाद्य	प्रमेयोप पाद्य
१	१,२,३,६ १०।११।१२ २२।२३।३१ ४२।४४।४५ ४६	४।५।६।७।८।१३।१४।१५ १६।१७।१८।१९।२०।२१ २४ २५।२६।२७।२८ २९।३०।३२ ३३।३४।३५।३६।३७।३८।३९ ४०।४१।४३।४७।४८
२	११।१४	शेष प्रमेयोप पाद्य
३	१।१७।२५ ३०।३३।३४	२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११ १२।१३।१४।१५।१६।[illegible]।१८।१९ २०।२१।२२।२३।२४।२६।२७ २८।२९।३१।३२।३५।३६।३७
४	सम्पूर्ण वस्तुप पाद्य	×

इसी प्रकार प्रश्नों में भी बुद्धि लगाना चाहिये

प्र०५२) साध्यसाधनके के अंग हैं और उन प्रत्येकके नाम क्या हैं

उ०५२) साध्यसाधन छः प्रकारके हैं १ साध्य सूत्र २ वास्तव ३ कृत्रिम ४ उपपत्ति ५ फल सिद्धि ६ उपसंहार

प्र० ५४) उन प्रत्येक साध्य के प्रकारों का यथाक्रम वर्णन करो

उ० क) साध्य के मूल वाक्य को साध्य सूत्र कहते हैं

(ख) सूत्र की व्याख्या वा टीका को वार्त्तिक कहते हैं

(ग) उपपत्ति के निमित्त रेखा आदि के चिन्ह करने को कृत्रिम कहते हैं

(घ) उपपत्ति के उपपादनार्थ जो वादानुवाद हो उस को उपपत्ति कहते हैं

(ङ) पूर्वोक्तानुसार जो अन्त में फल सिद्धि हो उस को फल प्रसिद्धि कहते हैं

(च) अन्त में सूत्र के पुनरुल्लेख का नाम उपसंहार है किसी २ साध्य में कृत्रिम की आवश्यकता नहीं होती उपपत्ति अन्वय और व्यतिरेक भेद से दो प्रकार की है

गुटिका

प्र० ५५) गुटिका किसे कहते हैं

उ० ५५) साधारण अर्थ यह है कि जिस में कै एक चीजों का संयोग हो उसे गुटिका कहते हैं जैसे रुपया, पैसा, वस्त्र, भूषण, इत्यादि परन्तु यहां मतलब पुस्तक से है इसलिये जिस में कै एक पुस्तकों का संयोग हो उस का नाम गुटिका है जैसे प्रेमसागर, सभाविलास, गंगालहरी, सतसई आदि

प्र० ५६) पद्य रचना किसे कहते हैं

उ०४५) पद्य दोहा छंद कवित्त और श्लोकादि को कहते हैं जैसे (राम राम कहि राम कहि बालि कीन्ह तन त्याग ॥ सुमन माल जिमि कण्ठ से गिरत न जाने नाग ॥१॥ यह पद्य रचना है

प्र०४६) गद्य रचना किसे कहते हैं

उ०४६) साधारण इबारत अर्थात् खड़ी बोली वा जारी जिसे हिन्दी वा उर्दू भाषा कहते हैं और जिस में कर्त्तादि कारक अपनी २ विभक्तियों सहित यथा क्रम आवें उसे गद्य रचना कहते हैं जैसे तिमिर नाशक व इखबारात की इबारत यह गद्य रचना है

पदार्थ विज्ञान विटप

प्र०४७) पदार्थ विज्ञान विटप किसे कहते हैं

उ०४७) शाब्दिक अर्थ तो यह है कि पदार्थ = वस्तु विज्ञान = विशेष ज्ञान और विटप = वृक्ष परन्तु यहां अभिप्राय पुस्तक से है अर्थात् जिस पुस्तक कर के पृथ्वी पर के पदार्थों का बोध हो उसे पदार्थ विज्ञान विटप कहते हैं

पदार्थ विज्ञान विटप में केवल बुद्धि की परीक्षा है ध्यान देने से उसके प्रश्नोत्तर से जानकारी हो जाती है

प्र०४८) पदार्थों के जो तीन भेद हैं द्रव्य और द्रवद्रव्य और वायु आदि के पदार्थ हैं उन की क्या पह

जान है और रूई यह किस प्रकार में है अ
च्छी तरह साबित करके बतलाओ

उ०५८) दृढ़ द्रव्य उन्हीं को कह सक्ते हैं जो स्थानसे
किसी प्रकार हट सके जैसे लकड़ी आदि
और द्रव द्रव्य की पहचान यह है कि अव्वल तो
उन्हें जैसे स्वरूप के वर्तन में रक्खोगे उन
का भी स्वरूप वैसाही दिखलाई देगा और
दूसरे वे स्थान से किसी प्रकार हटभी नहीं
सक्ते जैसे तेल पानी आदि और वायु
आदि वे हैं जिन्हें मन माना घटा बढ़ा सक्ते
हैं जैसा वायु कि जितनी वायु से एक लोटा
न भर सक्ता है उतनी ही से एक घड़ा वा म
टका वा उससे भी बड़ा बर्त्तन भर जावेगा पस
मालूम हुआ कि रूई दृढ़ द्रव्य है क्योंकि न
तो वह ऐसी द्रव सक्ती है कि मटके की स्थानमें
समासके और न यह कि बिल कुल स्थैही
नहीं किसी प्रकार हट सक्ती है और यही
स्वरूप दृढ़ द्रव्य का है कि किसी प्रकार हट
सक्ता है ॥

छंदगानापुखराजपरीकाबीचसभामें ॥

राजाइंदरसेयेमेरीहैइल्तमासशाद·जोमुफ़लिसनाचीज़कोकियासभामेंयाद + + ॥

कियासभामेंयारसुखनराजकेअंदाज़·दौलतमालरक्खानेकीकबहूंनामुहताज ॥

हीरापन्नाचाहियेनज़रमुझकोनाज़·जगमेंबानउस्तादकीबनीरहेमहाराज ॥

ठुमरीज़बानीपुखराजपरीके

आईहूंसभामेंछोड़केघर + काहूकोनहींहैआजख़बर + + ॥

मेरीहूंतेरीराजाइंदर + + रखनादिनरैनदयाकीनज़र ॥

सोनेकाबिराजेसीसमुकुट + रूपेकेतख़्तपरबैठेनिडर + + ॥

चारोंकोनोंपरलालजुटें + दानाकाकामरहेआठपहर ॥ ॥

साया रहे पीरपयंबरका + मौलाकीसदारहैनेकनज़र + ॥

उस्ताद महकाहैहरसेहरदम + दुनियाँमेंरहेहज़रतअख़तर ॥ ॥

ज़बानीपुखराजपरीकेबीचधुनबहारफ़सलबहारमें ॥

रितुआई बसंत आजबहार + खिलेरहफूलबिरखनकीडार + ॥

घरकोकुसुमफूलनलागिसरसों · फ़ाकानचलनगेहूंबनकीबहार ॥

हरकेचारे मालीकाछोड़न + गरबाडारनगेंदनकेहार ॥ + + ॥

निसदिनफूलेअंबवामौराने + चंपाकीरूपकालियनकीबहार ॥

गड़वालियेउस्तादकेद्वारे + चलोसबसखियाँकरकेसिंगार ॥

रितुआईबसंतआजबहार

ग़ज़लगानापुखराजपरीका

फ़सलकीबहारमें + · ॥

हैजबसेहतनसेजोहरोदिवारबसंती·मारूकजोफलेहैमेरायारबसंती + ॥·

क्याक्याखुलबहारोंनेशगूफ़ेहैंखिलाये·माशूक़हैंफिरतेसरेबाज़ारबसंती ॥·

कुनरदिखाकेमैंफ़िलमेंदादअपनीपाऊं·दादअपनीयहांतकपाकेउस्तादकेम

ठुमरीजबानीनीलमपरीकेधुनखमायचमें ॥

राजाजीकरोमोसेबतियाँरे· दिलनरफ़ानरतियाँरे· ॥

हमारीओरसेतुमसेदिनदिन सौतनजाकेलगातियाँरे

दरसउस्तादकेचहियेमुहकालिषकेपठादेवपतियाँरे

होलीजबानीनीलमपरीकीबीचसभाके॥

कान्हकोसमाकावेनकोई·मेरीअंगियारंगमेंभिजोई

मोरीबिरजमेंपतिखोई·आजसखीहमघरमेंजाके· भीनकेजानकेरोई ॥

अबीरगुलालउड़ावनखातरमुंहअसवनसेधोई· बदनमांटीमेंमिलोई ॥

गखालगायोगिरायकेमहंकामुंहपकारहमरोई· इज्जतलीनीगारी··॥

रीनीहमहूंजानकोखोई· सखीबिसरखायकेसोई·बैठरयाब्रजकेलोग

नमेंकुबरीकयागविसबोई·यहजोषबरउस्तादनेपाई· घरहमहाथसे

खोई·निकासकरजोगनहोई·॥

कान्हाकोसमजाननकोई॥

ग़ज़लजबानीनीलमपरीकेबीचसभाके दिनों

इस्ककाखंजरलगाहैदिलपेकारीइनदिनों·जरब्मकीसूरतहैस्हूंआंखोंसेजारीइन

बागमेंजानीहैउसगुलकीसवारीइन दिनों· इसकुरा फिरतीहैबादेबहारीइनदिनों

देकेकसमेंकोचपेकानेलमेंलेजातीहैदिल·दुशमनअपनाकररहाहैदोस्तदारी

भोली२शाक्रपरदिलनउपनादेसनम·क्याहीसूरतहोगईहैप्यारी२इनदिनों॥

मुद्दतीहमनेनिकालावस्त्रमेंस्रकावुआप·फुरकतेदिलदारसेहैतपकीबारीइनदि

इश्ककेआज़ारसेनागराकेबाहैसकदर·शक्लपहचानीनहींजातीहमारीइनदिनों

लाओलालपरीको ॥

आमदलालपरीकीबीचसभाके ॥

सभामेंलालपरीकीसवारीआतीहै· जमालेरंगअबइंदरकीसवारीआतीहै ॥
शफ़क़मेंआयगाकुरसमदनज़रसितारोंका·पहनकेसुर्ख़पोशाक़बहारीआतीहै
हसीनेबज़्मकीशादीसेफूलपेड़ीनसमाम·गुलोंकेवास्तेबादेबहारीआतीहै ॥
निगाहउस्कीछुरीसेसिवानुकीलीहै·लगानेसबकेदिलोंपरकटारीआतीहै ॥
खुलेगालालःकानरगासभामेंऐयारो·निहालहोकेअबमुरादतुम्हारीआतीहै
दुपट्टादेखकेबिजलीगिरेगीबिजलीपर·कटारोंपरखड़लगाकरकटारीआतीहै ॥
मैंकिस्कीज़बासेकहूंउस्कीशोख़ियांउस्ताद·बहारनाज़ेकीमैफ़िलमेंबारीआती

घेरख़ानीज़बानीलालपरीकीसभामें ॥

इन्सानकाकामकुस्नपरमेरेतमामहै·जोड़ासुर्ख़लालपरीमेरानामहै ॥
शाकरःज़रख़रीदहैसरकारकामेरे·नौकरअक़ीककालालबदख़्शांगुलाममें
आशक़कोक़त्लकरतीअबरूकीतेग़से·दिनरातमुफ़्तकोख़ूनबहानेसेकाममें
पोशाक़मेरीसुर्ख़हैमुखड़ाहैचांदसा·देखोशफ़क़मेंरातकोमाहेतमामहै
शोख़ियेमेरहोतेहैंउरगवमनहलाल·हस्तोंकोजोगनालाज़न्नहमेंहरामहै

उसको तू लाउ जल्दी कर यार · लौंडी मैं हो जाऊंगी तेरी मैं बे ज़र की

जवाब काले देव का तर्फ़ सब्ज़ परी के ॥५॥

घरमें राजाके है तू परियोंकी सरदार · तुमसे कर सवाल नहीं होगा जो मैं तकरार

तेरी ख़ातिर है मुझे सबसे यहां सिवा · पर ना बता मेरे को काला ऊदे से यहां ॥

जवाब सब्ज़ परी का तरफ़ काले देव के ॥

जान संगलदीप से अख़्तर नगर में हौं · सो ना है एक माहरू लाल महल में वह

रहता मैं हर आई हूं अपना उससे निशान · सब्ज़ नगीं को मैं आवसन उसको पहचान।

सवाल काले देव का सब्ज़ परी से ॥ चान

लाया मैं शाहज़ादे को जाकर हिंदुस्तान · तू अपने माशूक़ को सब्ज़ परी पह

जवाब सब्ज़ परी का ख़ुश होके काले देव से।

यही है शाहज़ादा मेरा यही है मेरी जान · यही मेरा दिलदार है मैं इसपर क़ुर्बान

जाना सब्ज़ परी का शाहज़ादे गुलफ़ाम को

सोते हो क्या लिखकर छोड़के तुम घर बार · आंखें खोलो लाल उठो लो नींद से हो होशियार

जागना शाहज़ादे का औ बाहना घबरा के नींद से ॥

मैंनमानूंगानमानूंगाअजबातनेरी· कामकिसरोज़यहआवेगीमुलाक़ातनेरी
बातजोअसलथीमैंअलसेपहचानगया· बाइसइनकारकाजानीमेरादिलजानगया
नकिसीदेवकीख़िदमतमेंसदारहतीहै· इसलियेमुझकोसभामेंनहींलेजातीहै

जवाबसब्ज़परीका॥

बातहरगिज़नज़बांसेनिकालोसाहब· होशमेंआवोज़रामुंहकोसंभालोसाहब
देवसेमुझकोबुराकामजोकरनाहोता· आदमीजानपेकिसवास्तेमरताहोता॥
मैंपरीहोकेऐसेपेफ़िदाजानकरूं· ऐडीचोटीपेमुएदेवकोकुरबानकरूं॥

जवाबशाहज़ादेका॥

दिलहरेकशख़्सकाफंदेमेंफसातीहैतू· ऐपरीकौनमुझेबातोंमेंउड़ातीहैतू॥
सुबहहोतीहैमेरीजानकोईआनकेबीच· मैंभीमुझकोसुनाताओपरिस्तानकेर
वहांनलेजायगीतोजीसेगुज़रजाऊंगा· मैंआपसेअपनागलाकाटकेमरजाऊं

जवाबसब्ज़परीका॥

मुझकोयारख़राबअपनीजवानीनहने· हायअफ़सोसमेरीबातनमानीतूने
अबमिलेगानअज़ीज़ोंसेनमांबापसेतू· शेरकेमुंहमेंमेरीजानचलाआपसेतू
थकगएहोठअरेकहांतकसमझाऊंमैं· चलअखाड़ाइन्दरकादिखलाऊंमैं

जवाबशाहज़ादेका॥

किसतरहचलनेपेतैयारमेरीजानहुईमैं· तूपरीज़ादहैबालाकओइन्सानहूं तोदुहाईहै
उड़केजायगीतूएकपलमेंपरिस्तानकेबीच· क्षयपैलाकेमैंरहजाऊंगाअ गाईहै॥
कोईउड़चलनेकीतदबीरबतादेमुझको· परकिसीदेवकेतूचकेमहोदारपरछिड़कोहवा

जवाबसब्ज़

धानवीरामाकेआंखोंमेंछाई है।

कुश्राबहजोहैकाफ़मेंपुरखतर · अभीउसमेंजाकरइसेकैदकर ॥
धरीनअफ़्सोसहैयहअगरखड़ी · खताकीहैइसनेसवानेबड़ी ॥
सोतनोबकारइसकोपरश्रौरबाल · श्रखाड़ेसेमेरेश्रभीदेनिकाल ॥
उड़ातीफिरेखाकयहदरबदर · नश्रायेहमारेकाभीनज़र ॥

श्रानाजोगनबनकेसब्ज़परीकापरिस्तानमेंश्रामदगा
नालोगोंका ॥

जोगनश्रातीहैपरीबनकेपरिस्तानकेबीच · सुमरनेहाथोंमेंमुंदरेहैंपड़ेकानकेबी
सिरपेइंडवाहैरखेमुंहपेमलाईहैभभूत · सेलियांडालेहैगर्दनमेंगरेबानकेबीच
लालमनवालीहैश्रांखेंहैंमगरस्वाकेलाल · मलशाहज़ादयेगुलफामकेहैध्यानकेबी
बीनसरकोधुनतेहैंसदासुनकेबंदश्रोपरंद · भैरवीकाश्रजबपंदाज़हैतानकेबीच
नालवकोसरःहैलबदादकोसुरमाकश्रांखें · दिलहैसीनेमेंनगीनासाकेश्रमानकेबीच
कहींगुलफ़ामकाकोसोंनहींमिलताहैपता · खाकउड़तीहुईफिरतीहैबयाबानकेबी
गमज़श्राफ़तहैकयामतहैश्रदायेंउसकी · शहरश्रालममेंबपाकरतीहैतूफ़ान
सब्ज़जामाइमेंहैक्याकहरपरीशानकीजया · सुबहकोपंदनीनेयहजिसाधानको
देखमहदकोशहैपरियोंमेंनहींदमउसतार · जिनगड़फतेहैंपड़ेजानानहोंमानकेबीच ॥

ठुमरीगाना जोगनका बीच धुन भैरवी के ॥

मैंतो शाहज़ादे को ढूंढन चलियां। अंगभभूतजोगनवनमलियां ॥१॥

छानफिरीसबगलियां। मैंतोशाहज़ादेकोढूंढनचलियां ॥

नीजावतहै आरनहीं आवत हमसहलों को पलियां रे ॥

लखबरकाफेसबदलके। देसबिदेस निकलियां रे ॥

अंगभभूतजोगनवन। छानफिरीसबगलियां रे ॥

मैंतोशाहज़ादेकोढूंढनचलियां। सीसबिकसगयोपांव भुलसगयो।

धूपमैंबनरचलियां रे॥ ननकुमलागयो मुखमुरझागयो। जैसे

मुलानकी कलियां रे ॥ अंगभभूतजोगनबनमलियां ॥

छानफिरीसबगलियां रे॥ मैंतोशाहज़ादेकोढूंढनचलियां ॥

जगकुशमनहैराहकठिन है। बलाएं क्यों कर टलियां रे ॥ ॥

जाकहोउसशाहसेगुइयां। अखियां लागबदलियां रे ॥

अंगभभूतजोगनबनमलियां। छानफिरीसबगलियां रे ॥ ॥

मैंतोशाहज़ादेकोढूंढनचलियां ॥

ठुमरी दूसरी जबानी जोगन के बिच धुन भैरवी।

कहांपाऊं कहांपाऊं यार मैं ॥

यार की छांह नज़र नहीं आवत। ढूंढ रह्यो संसार रे ॥

कहांपाऊं ॥

कहारी कहों कित ढेरन जाऊं। सोचन हूं बार बार ही मैं ॥

कहांपाऊं।

अपने मैं दिलदार को पाके ॥ चौंक पड़ी मिनसारी मैं ॥

देवका हाज़िरकरना जोगनको इश्तियाक़ राजा इंदरका ॥

परी जोगन अब दिल में है अपने शाद · किया है तुझे राजा इंदर ने याद ॥
किसी से न रागसुन लिया है जो हाल · मुलाक़ात का शौक़ उसे है कमाल
तेरा दर करना उसे पाक है + तेरे नाच गाने का मुश्ताक़ है ॥
मुराद अब तेरे दिल की बर आयेगी · जो मांगेगी वह चीज़ तू पायेगी ॥
न फिर उमर भर तू करेगी सवाल · वह इक दम में कर देगा तुझको निहाल

जोगनका जवाब देना देवको ताने से लगावट करना पीछे ॥

यह बातें न लाना ज़ुबां पर कहीं · फ़क़ीरों से अच्छी नहीं दिल्लगी ॥
बड़ा वोह मेरा देनेवाला हुआ · खुशामद से मुंह तेरा काला हुआ ॥
फ़क़ीरों को दौलत की परवा नहीं · यहां दरस के अफ़ज़ाल से क्या नहीं ॥
जो गाने का राजा तलबगार है · तो हां किसको चलने में इनकार है ॥
न चीथन मुख़ालिफ़ बिकार पाऊंगी · जो आता है मुझको सुना आऊंगी ॥

हाज़िर करना काले देवने जोगनको
सभा में और पेश कर्नी राजा इंदर से ॥

कहाँगयोशाहज़ादाजानीप्यारादिलपैंमेरेहमारा

कहाँगयो॰

वाकापताकहूँलागननाहीं ढूंढ फिरीबन सारा

कहाँगयो॰

बिनजानीके इननैननमें॰ रैन दिना अंधियारा॥

कहाँगयो॰

जलबिनजैसेसुरखमछरियातरफ़न होगाबिचारा

कहाँगयो॰

कोऊकहैअखाड़ेकेआगे तुमरे दमका सहारा॰॥

गिलौरीदेनाराजाइंदरकाजोगनको

मलखुशहोकर॰जवाबदेनाजोगनका

पानलेकरक्याकहूँकिसीसज्जनकाध्यानहै॰ हँडियासूनाबदनधानपानहै॥

इश्क़काछूपीपीकेरंगलायाहै॰ फ़िराक़नेक़तलकाबीड़ाउठायाहै॥

गिलौरीदेमुझकोजानकाहै॰ फ़क़ीरोंकामुंहकौनकीलसकताहै॥

होलीगानाजोगनकासामने

राजाइंदरकेबीचधुनभैरवीके

कविविनोदज्योतिषभा·
मनबख्श प्रभूदयाल व एहतमाम
मनीजर अहमद हसन के छापागा

चंदन अक्षत श्रीफल जल सब चढ़ावते उनके ऊपर
भोग लगावें लगावे भोग दधि मोदक मन भर श्रद्धा
भक्ति से ध्यावे उनके कर देते हैं कल्याने हृदय कम
ल में० २ इस कलियुग में परम दुष्ट जो गणो भाजी
का रखते नेन र चरण में उनके कि उनके चरणमें सं
कट लेते हर महा राज राज भगवान सिंह का ऐसा
बावल दिव्य नगर ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जहां शूद्र
सुखी अपने घर घर अग्र में हू महिमा हि मानु
की ब्रह्मा चतुर्मुख नहिं जाने ॥ हृदय कमल
में० ३ समय पाय कर हे मंदत जी अपने जन
कूं लेते वर वर देने से पार हो जावेगा वो भव सागर
दुःख गिरी क्यों भूल रहा श्री कृष्ण नाम का सुमरन
कर कोटि हजन मन तक कभी नाहि फेरन पावे यह श्री
भर कृष्ण दत्त श्री कृष्ण भक्ति विन कभी नहा नी
गुजरान हृदय कमल में० ॥ ५ ॥ अथ लगन फ
लम ॥ भूत भविष्यति वर्तमान जो तीन काल ब
तलाता है। जोति शास्त्र सब शास्त्र सिरो मणि
बिना भाग्य नाहिं आता है ॥ टेक ॥ जिसका
जन्म हो मेष लगन में क्रोध युक्त और महा व्यस
न सब कुंब में वितथ जिसके रक्त नेत्र रहे नानि
धन करें गुरू की भक्ति सनातन जिसके हाथ

विरख लगान साल दुसाला तरह तरह के पहने कं
ठें भूषन मिथुन लगन का चतुर ज्ञावान कें कि
सीसे नहीं शरमाता है जोतिप्शास्त्र ॰ १ कर्क लगन
का रुप्शा गप्रतिदिन रहे उदर में बीमारी सिंह लगन में म
हाधराक्रम करे नाग की असवारी कन्या लगन से हो वे
नपुंसक रोवे पाप और महतारी तुला लगन में त
स्कर खेले जुवा हारे अपनी नारी वृश्चिक लगन
का दुष्ट पदारथ आप अकेला खाता है जोतिस
शास्त्र सब शास्त्र सि॰ नीतिमान और गुणी सु
खी नर जिस्के लगन होता है धन मकर लगन का म
दवृधि रहे अंग में उस्के मदन कुंभ लगन का पूत ब
ने अवधूत करे दिन रात भजन मीन लगन के सु
त का जीना मृत्यु लोक में महा कठन । नहीं कि
सी का दोस कर्म फल अपने नर पाता है ॥ जोति
ति शास्त्र॰ ३ तुरवनगिरी महाराज जिनों के पद स
रोज का करके ध्यान लिया सार सिद्धांत ग्रंथ काणि
न गिन अंदर धरे प्रमान रहे हमेशां लाभ पढ़े जन क
भी नहीं होती है हान आचार्यों के वचन सत्य नहिं
हो टरे कभी अर्जुन के बान कृस्न दत्त द्विज जो उ ग्रं
थ कवि विनोद भाषा गाता है जोतिशास्त्र सब ४ ।
इति लग्न फलम् ॥ अथ उच्च नीच ग्रहा ॥ प्रात्यो

जिसने इस्क को नहिं जाना इस्क रूप है आप श्री
कृष्ण मेरे जीवन प्राना नाम कृष्णदत्त गोड़ बिराम
त भोज कीवावल वारे जोतिषशास्त्र की ४॥ इति उ
त्र नीचस्थानं॥ कथा चोरासी फिर भटक ता सुनले
जोतिष का लटका चला जाय बैकुंठ धाम जहां
नहीं रहै दिलको खटका टेक०॥ जिसके ल
ग्न में परै दिवाकर नेत्र रोग उसको रहता बधु मि
त्र सुत दार किसी से अपने दिल की नहीं कहता द
या हीन अज्ञान दरिद्री बचन किसी के नहीं सह
ता श्वेत कुष्ट सुत हीन बर्ष चौथे में कष्ट पावै मह
ता ये विकट कुंदसिद्धांत ग्रंथ के सुनते हीं वादी
सटका चला जाय बैकुंठ०१॥ बाहनादिक सु
ख वर्जित जिसके धन स्थान न होवै दिनकर बार
ह वर्ष की उमर में आके निश्चै देखे गोल सकर
कई बार धन संचय होगा फिर ले जावेंगे तसकर
निर्धनता का जोग फकीरी करै कामनी को तज क
र वेदवाणी के अर्द्ध मध्य में मरै लगे नहीं एक पट
का चला जाय बैकुंठ धाम०२ धन बाहन सुख मह प्र
यंबदस्त धर्म स्थ होवै भ्राता सह त्रास जो परै पराक्र
म में दप्रीत्त रखता भ्राता कृषि कर्म से हानरहै सन्मान
ृप दन्य होजाता वादि प्रति के अर्द्ध नष्ट नहिं हो।

तकष्ट बहु धा पाना मुनि नेत्र के वर्ष मध्य में देखो
काल नधर पटका ३ चला जाय वैकुंठ धाम। धन
वाहन सुख हीन क्रोध का पुंज देह कृस होता जन धा
त मान सुख स्वल्प रात्रिदिन कभी प्रसन्न नहि रहता
मन प्रथम वर्ष में कष्ट अल्प सम सुख हुवा सव ३
स्कात न सुख न गिरी कहें सुख स्थान में मापरे भा सुनि
नदे है मदन कृस दत्त हर वक्र कहे तू कर सेवन गं
गा तटका ॥ चला जाय वैकुंठ ॥ ५ ॥ धन का कोता
सुत भूमि पान शुभ जन्म जन्म यह नर पावे शिव कि भ
क्ति बिन जोति शास्त्र का कभी नहिं अंतर आवे। टेक
स्वल्प जिस्के संतान स्वल्प दुर्गा भक्ति सुख ही नर
ही धांन चित सत क्रिया रहित उस्को निंदा कर त
ा वकी पंचम स्थ सभा अवुद्धि होकु भाग्य विधा
पढ़ै नहीं इस में झूठ मत जान ग्रंथ फल देख बा
त यो सत्य कही बेद वाराके अब्द मास न र चरु
धि मध्ये यम पर जावे शिव की भक्ति बिन १
रहे निरंतर सुखी सदा नर चारु पान होता वल
वंत कस्के द्रव्य संचय योवन में रहा वेठ घर में निश्चं
त कई सहस्र व्यव करी माद्रका कभी ना आवे उस
का अंत देख ग्रंथ अनुसार भविष्यत हाल सभी
कह दीना तंत जन्म पाय नर भोगे सर्व सुख अंत

और थमें रोग होजाता। प्रसिलगन पड़े का फल ऐसा
बतलाता। जहां तहां भटकता फिरै कर्म के मारे।
तेरे दिल के मनोरथ०१ चित शांत वेदांत पढनहार
ज्ञानी वो देखो प्रेम से बोल सभी से उसके हैं गेह मंपू
र्गा सभी धन वान ये धनस्थ शसि को सारी ह वो का
ज्ञानी श्री कृष्ण चंद्र के चरनों में चित लारे तेरे दिल
के मनोरथ सिद्ध होय ग सारे०२ दया युक्त सुज्ञान
बड़ी चतुराई रह बंधु जनों से विरोध निसदिन ताई
तीर्थों के गमन में बढे प्रीत अधिकाई सहज स्थ चंद्रमा
इसविध का फल दाई। जो गाया चाहे तो गोविंद के गुन गा
रे तेरे दिल के मनोरथ सिद्ध होयगे सारे०३ जिसके चंद्र पा
ताल भवन परता है। पत्रादि सौख्य और कृषी कर्म करता
है गिन गिन के मुद्रा अपने घर में धरता है वो संतुष्ट
न गिरी वो किसी से नहीं डरता है। ये कृष्ण दत्त के विक
छंद हैं न्यारे।४। तेरे दिल के मनोरथ सि।।४।।को
ई वेद वेदांत पढ़ै कोई पुराण का रखते चसका को
ई पढ़ै व्याकर्ण कौमदी हमें आसरा जोतिष का।
का। टेक०। सत्य शील संयुक्त जितेंद्री विभक्ति
करता निस्काम धन कांता सुत समस्त सुख सुभ
गोर वर्ण जैसा होवे राम गऊ साधु और देव द्विजन
की रहै टहल में आठों याम पंचम स्थ शशि का यह

संस्कृतमें हैख्यालसभीतुमसुनियोमहाराजे। देख
जोतिसके अंदाजेजी॥ टेक॥ शांतरूपओर विनी
तका उदारहै वोजन कोरनितसच्चामसाभीजनजो
शशि नंदन हो तनरस्थ जिसके भासिन है लोच
नपानविन चलेना एक धोजन जीभोजा को बाव
लमें छंदमें अभीवनेताजे देख जोतिष के अं० १
चंद्रसून हो धनस्थ जिसकूं धरा द्रव्यपावे भेद न
हीकिसीकोवतलावे जी विमल शीलसुखको
तिनिरंतर हरिके गुनगावे लीनचरनोंमें होजावे
जी वन्हि नेत्र ग्रह चंद्रके संवत फाल्गुनकूमाजे
देखजोतिषके अंदाजे० २ सहज सोमसुतसदा सु
खीनरकभीनाहो निर्धनकरे नित ईश्वर काचित म
नजी। मानकीर्तिसुत सौख्य समन्वित विस्तृत है
परिजन अहनिशवेदो का प्रपठन जी कल्गी के
कर महंदी तुर्रे के सीस मोड साजे देख जोतिषके
३ ईश्वर हो सुखगेह उसे जनकीका सुखभारी वि
द्या सोगीनपढे न्यारी जी सहन सुतमित्र अंग
में सक्ताम्बर धारी जरवनगिरी की यह छवि
प्यारी जी कृष्णदत्त श्री कृष्णाध्यानसे सुधरे स
वकाजे देख जोतिषके अंदाजे जी॥ ० ॥ ४
॥ भूमंडलमें नित नै प्रशस्त्र हो। एक न हो ॥

धर्म ग्रस्थान करे नित ग्रपने हाथ से दान जी ग्रान कार्तिक सुत सौख्य समन्वित पूर्ण गेह धनवान हूं दमें उसके किंचित ज्ञान जी। क्या छिन्न घर घर फिरे मांगता। क्या बांधे तलवार पढ़े बिन डूबेगा मझधार २ रोहिणीय कर्मस्थ प्राप्त नर करे निरंतर भोगन सी कुछ उसकी देह में रोग जी राज मान्यता अधिक हू व्य पूह त्यक्त करिलके जोग प्रससा करे उसकी सवलो गजी मूढ विप्र कोई न पूछे सदा रहे वेकार पढे बिन डूबेगा मझधार जी॰ २ प्रीति भानु का पन्न लाभ गरह चारु शील सुकुलीन विद्या संगीत विशेष प्रवीन नौद या यक्त शुभ विनीत नित्यानंद सुन होती न कि जिस्का शरीर है॰ वह पीन जी ग्रोर जाति ग्रानंद कलोभू देव फिरे गब्बार पढे बिन ३ द्वादश स्थ बुध हु या हीन तर चित मलीन का भी स्वजन मेले वे बदनामी जी महा धूर्त दुख धाम न जाने कभी ग्रंत या मी नु खन गिरी रटो राम रामी जी कृष्ण दत्त दुस्तर भव सागर किस विध होगा पार पिढे बिन डूबेगा॰ ४ इति बुध फलम्॥ भागौती पंडितका जे॰ पर दिल्ली शहर ग्रंवारे का बिन जाति सके लदा हुवा बैल फिरे बन जारे का टेक॰॥ रहे शहर में पूछ हमेशा पदा हुवा विद्या सारी उदार चिन।

माया है· टेक· जिस्के धर्म अस्थान ब्रहस्पति क
रै धर्म हो श्रेष्ट मती सर्व शास्त्र की जितनी कला स
भी की जाने गती गौसाधु द्विज देव भक्त और व्रत
रने में मदा रती। राज्य भोग है आपल कर है सदा
स्वगनाम पति अहंकार रिपु तेग भारी जिसने तू वह
काया है। आदि अंत में· १ सु राज्य हो राज्य स्थ राज्य
का चिन्ह और उत्तम वाहन पूर्ण सुखी हो कि जिस
के घर में हो बहु तेरा धन मित्रा त्मज सुंदर अति कांता न
गीफ करते हैं सब जन दीर्घ मोल्य के वस्त्र वो धारे कांच
न के भूषन अपने दिल में सोच प्रबल तू कौन कहां से।
आया है आदि अंत में· २ लाभ गेह वा गोष्टी राजा की
कृपा रहे उस्के ऊपर स्वधर्म स्थ हो दया संयुक्त र
हा हर्षित प्रवीन र संत संगति और कथा भजन की
प्रसन्न हो बातें सुनकर पूर्व दत्त से लक्ष्मी खड़ी रहे
जिस्के हाजर जी विश्वर में फरक नहीं एक बीच
में पड़ता ल्या था है ३ व्यय स्थ जिस्के गुरू रात्रि दि
न उस्का चित्त उद्विग्न रहे अपने दिल की बात वो
कभी किसी से नहीं कहे पाप बुद्धि निर्लज्ज माल
सी चिंता मान बहु निर्धन है कहें तुखन गिरी का
करें अपने करमों के बस रे कष्ण दत्त सत संग कि
ये भ्रम मिटे आत्मा दर साया है आदि अंत में ४ शं

गुरुफलं॥ देखो मूढ नरजन्म मर्याविन पाते हैं इ
नकी भूल जोतिष के ख्याल नहीं गाते॥ टेक॥ जिस
के लग्नमें परे भृगुसुत केला उसके हैं गज समुद्र
व्यपन्न नहीं धेला वहु कला कुशल नर चतुर सीस
पर सेला यौवन में काम काम का जोर जाय नहीं झे
ला जो अब नहिं समझे फेर चौरासी जाते हैं इनकी
भूल जोतिष १ धनस्थ भाग्यविनो पाप धन आवे
और वासुनादि सुख विचित्र विद्या पावे अनेक भूषण
वस्त्र अंगमें लावे कभी सुपनेमें नहीं उसके रोग हो
जावे यह मोक्ष द्वार नर देह पुननहिं पाते। हैं इन
कवि परे सहजस्थ देह नहीं मोटा वो महा कृपण
धन हीन सभी से खोटा तन मे चित वहु मदन धान्य
का टोटा। कोई जाके देखलो उसके था ली नहीं
लोटा एक गुप्त कुं उसंग सग वीच नहीं न्हाते। हैं
इनकी ३ सुखस्थ उसना भालमें चंदन गुरुदेव द्विज
नकी करे हमेश वंदन ग्राम क्षेत्र शुभ यान वहुत से
नंदन। कहे तुखनगिरी होजा गे शत्रु निष्कंदन क
र्मदत्त फिर वहुतेरे पछताते हैं इनकी भूल०॥ ४
छिप गई के अंत शेष जोतिषा ही रह जाता और कु
छ नजर नही आता जी॰ टेक॰ पंचमस्थ कविता य
कला हो वाणी कोमलता सदा रहे शरीर निर्वलता जी

आपरातमेंरचाग्रंथनवहीसेपढ़नाउसकियाजोति
शास्त्रका॰२ स्नानार्चनजपध्यानसभीसन्मानकरे
उस्काभारीधनाक्षकुल्मेंजन्मसुभपदाहुआविद्या
भारीकांतासुतमेंप्रतिसदारहेउन्काआपआज्ञा
कारिराज्यगेहमेंशुक्रजोपरमहाधीरजधारीए
साग्रंथनहीं और कहे श्री रामचंद्र जी मुनी सि
या २ लाभगहमेंपरे शुक्रजोबाहुवीर्यमेंअधिक
सहीमहाप्रतापीलक्ष्मीकरउस्काछाडेकभीनहींकल
वांगमेंकष्टरूपसमभूपनजावेजराकहींविनासवारी
कृष्णमतजानउस्कीहेप्रकृतियहीदियेभारलक्ष्मीनवि
शिजिनपदीसंहितावहीजियाजोतिशास्त्रका॰३ व्यस्थान
नमेंशुक्रत्यक्तसत्कर्मकियेंकुलकेअपनेकामदेवक
हूवावसजावेगेहवध्यारमनदयाहीनअतिअसत्यवा
वसजावेअहर्निशपापधनकहेगुरवनिदेखग्रमचरज
मानाउसकूजमनेकृष्णदत्तसभरंगछाडिश्रीकृ
ष्णचरनरसप्रेमपियाजोतशास्त्र॰४ इतिशुक्रफ
लगभवसागरहेअपारप्यारेकैसेपारहूजेरस्कू।
कभीजीवकहचलकासीकूकभीकहमर्ष्ठजोतिषकू
टेक। सदाकुपस्मरपापवृद्धिजोसरः देह होता नि
र्बलइंद्रवर्षकीउमरभोगकेपदेशीमेंगया नि
कलशालागयाफिरनहींदिखाईसपनेमेंवो ४

जहां खेल जौ टेक। जिस्के भाग्य गत शनि नरकर
ता कभी विगानी श्रास घरमें उस्के लक्ष्मी का वास।
और हे राजमें लाभ हमें थों होजावे रिपु नाश यश
औ विद्या को अभ्यास औ वाम हल में सत्य खङ्ग धर
सत्य शील का शीलमान गेहमें परे सूर्य सन खेती से हानि
सदा वो दुःखी रहे प्राणी जो भाग्य स्थ चद्र तिय वर्षे तन
हो रहे हानि होगे जवधन धानि होभव सागर पार वे छले
राम नाम की रेल फेर २ छाया सुन लाभ गेह नर होता वि
द्यावान शुभ शुभ वातो को पहचान करे नदिल में सोच
लाभ होजावे या कुछ हानि कसें गें वायु रोग में ध्यान जो
करो निंदा कोई स्तुति सभी को अपने सिर पे झेलकेर ३ व्य
य स्थान में मंद रोग उसके हो गर मौर हे काक भी रहे दुखी
कभी नीका औ वार कूर्च पे कान होवे भवनक यही हाल
जौ का वाहा यह नूरखा नारी टीका जो कृष्ण दत्त श्री कृष्ण
ध्यान से छेदे मोहन केल फर ४। इति शनि फल। जो
तिशास्त्र के ख्याल बनाये बड़े परीश्रम से सुनो हम कह
ते हे तुम से जी। टेक। तनु स्थान में परे चद्र रिपु सर गृह
ह पाता भ्रमन हृदम सो खाता जी देह वर्ष तक कष्ट और
जान नों से जाती सुखी रह नहीं उस्की माता जी सा।
नी ले सिद्धांत ग्रंथ को सोधे है क्रम सुनो १ सिंही सुत
हो धन स्थान में सोच रहे मन की बात रखता है गुप्त मन

बहुतरी है यान अश्वानको होगी इनकी हानि जीकभी
छुन चार होत हैं कभी पायी लोई निजरा० २ व्ययस्था
नपदा सिंहका स्थल होजाता वादको दिलमें ठहरता।
जीनिर्धनता का जोग देहसे राम दुखी माता दुखीना
रीएसे सम जाता जीकष्ट दरानस्देह पायके यही उ
मरखोई निजरा० ४ इतिराहू फलं। केतु लग्न में परै हो
जो करे दिन रात मनो द्वेग भय व्यग्रता नारी चिन्ता भा
न २ धन स्थान में जाके फिर वी पूर्व वित का नाश कुल
विरोध वाणी कटु का निर्धनता परगास ३ अजरा धनभो
ग सुखपरे तीसरे केतवंधुलोभा उद्वेद मनश त्रुनथ
रदेन केतु भया सुखगृह में माता कूचिंतक्लेश चला
जाय दुख पाय के कहीं दूर परदेश ४ पंचम को परै जि
सके रह संतन का उसकू दुख भारी कष्ट नदरवकु हो
त दिवानिस कुलकी काज खोइ जिन सारी अष्ट
मवर्स महादुखभ। दायक गरमी की जो बीमारी को
टि उपाय करो चाहे यमको रख कभी टरैगी नाटारी ५
केतुपै जिसके रिपुगेह भातु ल्यनाहि उसका नेहवाह
सुख बहु निर्मलदेह आह व मरि प्रनाश करे है दस
म मधर जिसके शिरवीन नोद्वेग बहु रोग कलह आदि
चिंता धनी नहीं करे जन भोग ७ केतु रंध्र घर में परै
रहे गदामें पीर अर्थलाभ होगी सदा नहीं धरे कुछ ४

नधीर ९ केतु हुआ धर्मस्थ जहांतहां सिद्धि और रि
द्धि होय नाश सुत म्लेछसे होत भाग्य की वृद्धि ९
जिसके केतु हो कर्मस्थान उसको हिरदे में नहीं ज्ञान
बांधवता तारे गूंकी हानवचन कहे हे अयमान १०
भाग्यवान विद्या अधिक दानी य शुभ रूप लाभ
केतु धीधू दर संतति सुख सम भूप ११ जिसके
गमातु रहै तेपाद नेन मैं रोग मन पीडित कृतन
अपमिलाद्रव संजोग १२ इति केतु फलं। इति
श्रीमत्कृष्ण दत्त विप्रविरचितं जोतिसार भाषा
कवि किनोइनव ग्रहफलं समाप्तम्। संम्वत
१९३६ चैत्र सुदी ९ मंगलवार शुभम् ॥
मंगलं भगवान विष्णुः मंगलं गरुड़ध्वजा मं
गलं पुंडरी काक्षः मंगलायतनो हरिः॥ श्री
शुभम्भवतु
कल्याण